दशाफल-दर्पण

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

अनुपम पॉकेट बुक्स

प्रकाशक | अनुपम पॉकेट बुक्स,
शक्तिनगर, दिल्ली-७

कॉपीराइट | प्रकाशकाधीन

द्वितीय संस्करण | अक्तूबर, १६७२

कलापक्ष | शुक्ल, दिल्ली

मुद्रक | पुष्प प्रिंटिंग प्रेस,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

मूल्य : तीन रुपये

दो शब्द

ज्योतिष की कसौटी फलादेश है तो फलादेश की कसौटी दशाफल-ज्ञान। पूरे फलादेश का आधार दशाफल ही होता है, अतः जब तक दशाफल-ज्ञान नहीं होता, तब तक ज्योतिषी अपूर्ण ही रहता है।

सही दशाफल-ज्ञान के लिये विषय का सांगोपांग अध्ययन, परिश्रम और प्रतिभा आवश्यक है। पाठकों, मित्रों एवं जिज्ञासुओं की लगातार माँग को ध्यान में रखते हुए मैं इस पुस्तक के द्वारा ज्योतिष सम्बन्धी इस विद्या को प्रस्तुत कर रहा हूँ।

पाठकों ने मेरी पुस्तकों को जिस प्रकार अपनाया और सराहा है उसके लिए मैं कृतज्ञ हूँ। साथ ही अपने प्रकाशक भाई ओमप्रकाश जी को भी धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि उन्होंने सर्वाधिक सबल एवं सचेष्ट रूप में ज्योतिष जैसे विषय को इतने कम समय और अल्प मूल्य में जन-साधारण तक पहुँचाने में प्रबल योगदान दिया है।

यह पुस्तक भी उन्हीं के प्रयत्नों से इतनी शीघ्र और सुसज्जित रूप में आपके हाथों में पहुँच रही है, एतदर्थ अपने पाठकों तथा अपनी ओर से मैं उन्हें एक बार पुनः धन्यवाद देता हूँ।

—नारायणदत्त श्रीमाली

विषय-सूची

प्रवेश ११–२८

फलादेश विवेचन, खगोलशास्त्र, होरा शास्त्र, दशा पद्धतियों के भेद, प्रमुख भारतीय दशा पद्धतियाँ, पाश्चात्य दशा पद्धतियाँ, विंशोत्तरी दशा तथा अष्टोत्तरी दशा में भेद, कौन-सी दशा पद्धति स्वीकार की जाय ? विभिन्न विद्वानों के मत, निष्कर्ष, योगिनी दशा, कालचक्र दशा, मुद्दादशा पद्धति, विंशोत्तरी दशा पद्धति का मूल स्वरूप, विंशोत्तरी दशा का आधार, नक्षत्र, नक्षत्रों के हिन्दी नाम, अंग्रेजी नाम, नक्षत्रों से संबंधित ग्रह, ग्रहों के दशावर्ष, नक्षत्र-ग्रह-सारणी, विंशोत्तरी दशा से सम्वन्धित जटिल प्रश्न एवं उनका स्पष्टीकरण, राहु-केतु विवेचन, हर्षल, नेपच्यून, प्लूटो ग्रह को दशा पद्धति में मान्यता क्यों नहीं ! ग्रहों का क्रम, विंशोत्तरी दशा का कुल मान, नेपाल देशीय ज्योतिर्विदों का सुझाव, निराकरण एवं निष्कर्ष ।

लग्न निकालना २८–४७

लग्न, इष्टकाल, जन्म समय, सूर्योदय काल, सूर्यास्तकाल, दिनमान, इष्टकाल निकालने के पाँच सुगम प्रकार एवं नियम तथा उदाहरण सहित स्पष्टीकरण । लगभग २७५ प्रमुख भारतीय एवं विदेशी शहरों का स्टैण्डर्ड अन्तर, लग्न शुद्धि, उदहारण लग्न सारिणी, लग्न निकालने का प्रकार, ग्रह स्थापन एवं लग्न कुण्डली ।

भयात-भभोग-साधन ४८–५१

भयात-भभोग का महत्त्व, भयात-परिभाषा, भभोग-परिभाषा, भयात-भभोग-साधन, नियम, जन्म नक्षत्र द्वारा ग्रह-दशा वोधक चक्र स्पष्टीकरण ।

दशा साधन ५१–५४

पलात्मक भयात, पलात्मक भभोग, संबंधित जातक की जन्मदशा स्पष्ट, जन्मदशा की भुक्तावस्था, जन्मकालीन ग्रहदशा के भोग्यवर्ष, विंशोत्तरी दशा चक्र लिखने का प्रकार।

चन्द्र स्पष्ट ५५–५८

चन्द्र स्पष्ट का जन्मकुण्डली में महत्त्व, चन्द्र स्पष्ट का विंशोत्तरी दशा से सम्बन्ध, उदाहरण द्वारा चन्द्र स्पष्ट, चन्द्र स्पष्ट जानने की सुगम रीति।

विंशोत्तरी दशा-सारणी ५९–७३

विंशोत्तरी दशा के भुक्त-भोग्य वर्ष निकालने की जटिलताएँ, विंशोत्तरी दशा से भोग्य वर्ष जानने की सुगम सारणी, स्पष्ट चन्द्र, नक्षत्र चरण ज्ञात करना, दशेश ज्ञात करना, भोग्य दशा ज्ञात करना, अंश सारणी, कला सारणी, विकला सारणी, सारणियों का स्पष्टीकरण, सारणियों का महत्त्व

अन्तर्दशा ७४–७८

अन्तर्दशा की आवश्यकता, अन्तर्दशा जानने की विधि, अन्तर्दशा ज्ञात करने का प्रकार, नौ ग्रहों की महादशा में सभी ग्रहों से अन्तर्दशा के वर्ष, मास, दिन, निष्कर्ष।

प्रत्यन्तर्दशा ७९–११२

प्रत्यन्तर्दशा की आवश्यकता, प्रत्यन्तर्दशा जानने की विधि, प्रत्यन्तर्दशा ज्ञात करने का प्रकार, समस्त ग्रहों के अन्तर्गत प्रत्यन्तर्दशा व उसके मास, दिन, घटी, पल, निष्कर्ष।

सूक्ष्मदशा ११२–११५

सूक्ष्मदशा का महत्त्व, सूक्ष्मदशा निकालने की विधि, ग्रह की महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा में समस्त ग्रहों की सूक्ष्मदशा, निष्कर्ष।

प्राणदशा ११६–११८

प्राणदशा का महत्त्व, प्राणदशा निकालने की विधि, ग्रह

की महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा में समस्त ग्रहों की प्राणदशा, निष्कर्ष ।

दशावाहन ११९–१२२

दशावाहन प्रकार व उसका महत्त्व, दशावाहन ज्ञात करने की विधि, दशावाहन—गर्दभ, घोड़ा, हाथी, भैंसा, सियार सिंह, कौआ, हंस तथा मयूर, प्रत्येक दशावाहन का फल, वाहन से सम्बन्धित कुछ ज्ञातव्य बातें ।

दशा ग्रह अवस्था १२२–१२६

दशा ग्रह अवस्था जानने का प्रकार—दस ग्रहावस्थाएँ—दीप्त, मुदित, स्वस्थ, शान्त, शक्त, पीड़ित, दीन, खल, विकल और भीत, दशाग्रह अवस्था ज्ञात करने की विधि, ग्रह मैत्री बोधक चक्रम, ग्रहावस्था फल, निष्कर्ष ।

दशा कुण्डली १२७–१३१

दशा कुण्डली का महत्त्व, दशा कुण्डली अध्ययन के कुछ सूत्र, ग्रह की उच्च राशि, नीच राशि, नक्षत्र चक्र—जन्मर्क्ष, कर्मर्क्ष, आधान, सूचक स्वामीग्रह तथा दशाफल । बाधक भाव-ग्रह विवरण, जन्मलग्न, संज्ञा, बाधक राशि, बाधक-स्वामी, बाधक भाव निष्कर्ष ।

दशा देखने के नियम १३२–१३७

ग्रहों का शुभाशुभत्व, परम उच्च ग्रह, उच्च ग्रह, आरोही, नीच, परम नीच, मूल त्रिकोण, स्व गृही, अति मित्र गृही, मित्र गृही, सम गृही, शत्रु ग्रही, अतिशत्रु ग्रही, उच्च ग्रह के साथ, पाप ग्रह के साथ, शुभ ग्रह के साथ, शुभ दृष्टि, अशुभ दृष्टि, नीच नवांश, पापषष्टयांश, पारावतांश, द्रेष्काणांश, स्थान-बल, दिग्बल, कालबल, नैसर्गिक बल, चेष्टाबल तथा दशा देखने के ३९ स्वर्णिम सूत्र ।

भावेश दशा फल १३८–१४४

फल विवेचन के दस सिद्धान्त—महादशाफल, अन्तर्दशा-फल, प्रत्यन्तर्दशाफल, भावेशदशाफल, लग्न से दशानाथ के भिन्न-भिन्न भावों में स्थिति के अनुसार फल, महादशानाथ

से अन्तर्दशानाथ दूरी फल, अन्तर्दशा की स्थिति के अनुसार फल, ग्रहावस्था द्वारा फलादेश, परिपाक दशाफल, गोचर ग्रहानुसार फलकथन, लग्नेश फल, द्वितीयेश फल, तृतीयेश फल, चतुर्थेश फल, पंचमेश फल, षष्ठेश फल, सप्तमेश फल, अष्टमेश फल, नवमेश फल, दशमेश फल, एकादशेश फल, द्वादशेश फल, निष्कर्ष ।

महादशा फल १४४–१४८

सूर्य महादशा फल, चन्द्र महादशा फल, भौम महादशा फल, बुध महादशा फल, गुरु महादशा फल, शुक्र महादशा फल, शनि महादशा फल, राहु महादशा फल, केतु महादशा फल ।

अन्तर्दशा फल १४८–१६४

सूर्य की महादशा में सभी ग्रहों—सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु, शुक्र—की अन्तर्दशा का फल, चन्द्रमा की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल, मंगल की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल, राहु की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल, बृहस्पति की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल, शनि की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल, केतु की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल, शुक्र की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल ।

प्रत्यन्तर्दशा फल १६४–१६६

प्रत्यन्तर्दशा में फल जानने का सुगम प्रकार, कारक ग्रह चक्रम, प्रत्येक लग्न—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन—के कारक ग्रह, शुभ ग्रह, सम ग्रह, अशुभ ग्रह, मारक ग्रह तथा इनका फल विवेचन, निष्कर्ष ।

प्रवेश

ज्योतिष की कसौटी फलादेश है और फलादेश की कसौटी है—विंशोत्तरी पद्धति। भारतीय ज्योतिष का मूलाधार ही विंशोत्तरी पद्धति है, जिसके द्वारा निश्चित समय के प्रभावी ग्रह का ज्ञान प्राप्त करके तत्सम्बन्धी भविष्यफल एवं शुभाशुभ जाना जा सकता है।

वृहद् आकाश मण्डल के अवलोकन से हमें असंख्य नक्षत्र पुञ्ज, ताराएँ, विभिन्न राशियाँ, सूर्य, चन्द्र और ग्रह दृष्टिगोचर होते हैं। ये सभी परस्पर आकर्षण से बँधे एक निश्चित समय में निश्चित वृत्ति पर परिक्रमा करते रहते हैं और इन समस्त ग्रहों, नक्षत्रों एवं ताराओं का प्रभाव मानव जीवन पर न्यूनाधिक रूप से पड़ता रहता है, जिसे भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने एक स्वर से स्वीकार किया है।

ज्योतिष ज्ञान हेतु हमारे सामने दो प्रक्रियाएँ स्पष्ट हैं—

१. खगोल शास्त्र (**Astronomy**)

जिसके द्वारा सम्पूर्ण सौरमण्डल तथा सौर-परिवार की गणितागत एवं खगोलीय स्थिति का सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन किया जाता है।

२. ज्योतिष शास्त्र या होरा शास्त्र (**Astrology**)

जिसके माध्यम से पहली प्रक्रिया द्वारा प्राप्त स्थिति से प्राणी जीवन, मानव जीवन, सामूहिक जीवन (देश, राष्ट्र या संसार) आदि के भूत, भविष्य तथा वर्तमान का लेखा-जोखा किया जाता है।

उपर्युक्त दोनों प्रक्रियाओं में से पहली प्रक्रिया के आधार पर भूत, भविष्य तथा वर्तमान का शुभाशुभ जानने हेतु आर्ष ऋषियों ने कई सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं, जिन्हें दशा पद्धति के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

यों तो भारत में लगभग बावन प्रकार की दशा पद्धतियाँ प्रचलित हैं, जिनका न्यूनाधिक उपयोग इतस्ततः होता ही रहता है, परन्तु सही रूप में देखें तो इनमें से निम्नलिखित दशा पद्धतियाँ अधिक प्रचलित हैं:—

भारतीय दशा पद्धतियाँ

१. विंशोत्तरी दशा पद्धति
२. अष्टोत्तरी दशा पद्धति
३. योगिनी दशा पद्धति
४. कालचक्र दशा पद्धति
५. वर्षफल (मुद्दादशा) पद्धति

पाश्चात्य दशा पद्धतियाँ

१. दिन दशा पद्धति (One day One year)
२. सूर्य भ्रमण पद्धति (Solar Return)

उपर्युक्त वर्णित पद्धतियाँ अपनी-अपनी जगह ठीक हैं और न्यूनाधिक रूप से प्रभावयुक्त भी हैं, परन्तु इन सबमें भी विंशोत्तरी दशा पद्धति ही सर्वाधिक प्रभावयुक्त एवं वैज्ञानिक है। इस पद्धति से मानव का जो शुभाशुभ वर्णित किया जाता है, वह सर्वथा सत्य अचूक एवं प्रामाणिक होता है। इसे मैं ही नहीं, अन्य विद्वान भी एक स्वर से मानते हैं। यहाँ तक कि पाश्चात्य प्रमुख ज्योतिर्विद्वान हेकॉक, क्रिस्टन, मि० थेम्स, कुमारी स्टेन्सला, कुमारी ऐनी और फ्रान्स के विद्वान मि० मूल भी इसी पद्धति को प्रामाणिक एवं विश्वसनीय मानते हैं।

उपर्युक्त वर्णित पद्धतियों में दूसरी पद्धति अष्टोत्तरी दशा है, जिसके अनुसार ऋषियों ने मनुष्य की पूर्णायु १०८ वर्ष की मानकर उसके भाग किये और इस प्रकार सूर्य के ६ दशावर्ष, चन्द्रमा के १५, मंगल के ८, बुध के १७, शनि के १०, बृहस्पति के १९, राहु के १२ तथा शुक्र के २१ दशावर्ष मानकर कुल १०८ वर्षों का योग बनाया है। ध्यान देने की बात यह है कि विंशोत्तरी पद्धति में जहाँ नौ ग्रहों—सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु तथा शुक्र—को मान्यता दी है, वहाँ अष्टोत्तरी पद्धति में केवल आठ ग्रहों—सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि, बृहस्पति, राहु तथा शुक्र—को ही मान्यता दी गई है और इनका क्रम

भी वही रक्खा है, जिस प्रकार से ऊपर दिया गया है।

विंशोत्तरी या अष्टोत्तरी

कई विद्वान इस दुविधा में हैं कि अष्टोत्तरी दशा को मान्यता दी जाय या विंशोत्तरी दशा को। कुछ विद्वानों की मान्यतानुसार दक्षिण भारत में अष्टोत्तरी दशा प्रभावयुक्त है एवं उत्तर भारत में विंशोत्तरी दशा को प्रधानता देनी चाहिए, पर इन विद्वानों के इस कथन का कोई तर्कसम्मत एवं वैज्ञानिक आधार नहीं है और ज्योतिष में कल्पना का कोई स्थान नहीं है।

'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' के अनुसार—

कृष्ण पक्षे दिवा जन्मे शुक्ल पक्षे तथा निशि।
तदाह्यष्टोत्तरी चिन्त्या फलार्थञ्च विशेषतः॥

अर्थात् जिसका जन्म कृष्णपक्ष में दिन तथा शुक्लपक्ष में रात्रि में हो तो उस जातक के जीवन में अष्टोत्तरी दशा ही घटित होती है, विंशोत्तरी नहीं, लेकिन ज्योतिष एक विज्ञान है, जिसके निश्चित परिणाम हैं। केवल पंडिताऊ कथन ही प्रामाणिक मान लिया जाय, मैं इस धारणा के विरुद्ध हूँ। प्रयोग के तौर पर मैंने लगभग पाँच सौ व्यक्तियों के जीवन का भविष्यफल अष्टोत्तरी पद्धति से स्पष्ट किया तो केवल दो को छोड़कर अन्यत्र निराशा ही हाथ लगी। इसके विपरीत उन्हीं लोगों का फल कथन विंशोत्तरी पद्धति से करने पर शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त हुई। एतदर्थं कहा जा सकता है कि विंशोत्तरी पद्धति ही प्रामाणिक एवं सही है।

इसके अतिरिक्त ज्योतिष के एक अन्य ग्रंथ मानसागरी में कहा है—

दशाप्यष्टोत्तरी शुक्ले कृष्णे विंशोत्तरी मता।
गणनीया दशा सुज्ञैस्तदुमेश्वर समतम्॥

अर्थात् शुक्ल पक्ष में जन्म लेने वालों के लिए अष्टोत्तरी एवं कृष्ण पक्ष में जन्म लेने वालों के लिए विंशोत्तरी दशा ग्रहण करनी चाहिए, परन्तु इस सम्बन्ध में भी कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है और परीक्षण के आधार पर यह सही नहीं उतरता, अतः अष्टोत्तरी के आधार पर फल कथन करना युक्तियुक्त नहीं।

योगिनी दशा पद्धति

कुछ विद्वानों के मतानुसार इस पद्धति का प्रचलन हिमालय की तराई के इलाकों एवं हिमाचल प्रदेश में अधिक है एवं अक्षांश-देशान्तर के अनुसार वहाँ के जन-जीवन पर इनका विशेष प्रभाव देखा जा सकता है। इसमें जिन अष्ट योगिनियों को आधार बनाया गया है, वे हैं— १. मंगला २. पिंगला ३. धान्या ४. भ्रामरी ५. भद्रा ६. उल्का ७. सिद्धा और ८. संकटा। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमशः १, २, ३, ४, ५, ६, ७ और ८ वर्ष हैं तथा इन योगिनियों के स्वामी क्रमशः चन्द्र, सूर्य, गुरु, भौम, बुध, शनि, शुक्र तथा राहु हैं। संकटा दशा ८ वर्ष की है, जिसके पूर्वार्द्ध के चार वर्षों पर राहु का तथा उत्तरार्द्ध के चार वर्षों पर केतु का अधिकार रहता है। व्यावहारिक रूप से इस दशा का न तो कोई औचित्य है और न फलकथन में प्रामाणिकता ही।

कालचक्र दशा

आर्ष ऋषियों ने लगभग १०४ प्रकार की विभिन्न दशाओं का वर्णन किया है तथा उन्हें स्पष्ट करने की रीति भी प्रस्तुत की है। लेखक का यह सौभाग्य रहा है कि वह इन सभी दशा पद्धतियों को परखता रहा है, परन्तु विंशोतरी दशा पद्धति के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार के दशा-विवेचन में अपूर्णता है एवं वैज्ञानिकता का नितान्त अभाव है, फलस्वरूप उनके आधार पर किये फलकथन सही और प्रामाणिक नहीं होते।

हाँ, कालचक्र दशा, मारक फल कथन में अपूर्व सिद्ध हुई है। यद्यपि इसे स्पष्ट करने एवं इसका विवेचन करने के लिए एक स्वतन्त्र ग्रंथ की आवश्यकता है तथापि किसी भी जन्मपत्रिका में कालचक्र दशा के माध्यम से किसी भी व्यक्ति की मृत्यु-तिथि को घण्टों एवं मिनटों तक में स्पष्ट किया जा सकता है। इस विषय पर दो सौ पृष्ठ का एक निबंध भी मैंने लिखा था, जिसकी विदेशों में अभूतपूर्व चर्चा रही। उसमें मैंने कालचक्र दशा के माध्यम से संसार के कुछ चुने हुए व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियों का गणित स्पष्ट करते हुए जो मृत्यु-तिथि स्पष्ट की थीं वे पूर्णतः सही-सही सिद्ध होती थीं। कालचक्र दशा के माध्यम से बीमारी, बीमारी का प्रकार, बीमारी की अवधि, एक्सीडेंट आदि का समय भी निर्धारण भी किया जा सकता है, जो प्रामाणिकता एवं फल-

कथन की दृष्टि से खरा उतरता है।

मुद्दादशा पद्धति

इसे तांत्रिक शास्त्र में मान्यता दी गई है और वर्षफल में इस दशा का प्रयोग किया जाता है। इसके माध्यम से एक वर्ष की घटनाओं का सही स्पष्टीकरण सुगमतापूर्वक होता है। इस दशा में भी ग्रहों का क्रम उसी प्रकार रहता है जिस प्रकार विंशोत्तरी पद्धति में है।

मुद्दादशा में सूर्य की दशा १८ दिन, चन्द्रमा की ३० दिन, मंगल की २१, राहु की ५४, वृहस्पति की ४८, शनि की ५७, बुध की ५१, केतु की २१ तथा शुक्र की दशा ६० दिनों की होती है। इसका आधार भी नक्षत्र पद्धति है, फलस्वरूप यह फलकथन में प्रामाणिक सिद्ध हुई है।

विंशोत्तरी दशा पद्धति

भारतीय ऋषियों ने, मानव की पूर्ण आयु १२० वर्षों की मानकर इस दशा पद्धति का विकास किया है। इसका आधार चन्द्र नक्षत्र है, फलस्वरूप चन्द्र नक्षत्र दशा में विंशोत्तरी दशा पद्धति का मान सर्वोपरि है।

इस दशा का इतना मान होते हुए भी सम्पूर्ण ज्योतिष समुदाय अभी तक इस तथ्य से अनभिज्ञ है कि विंशोत्तरी दशा का मूल आधार क्या है ? इसका मेरुदण्ड किसे कहा जा सकता है ? महर्षि पाराशर ने उन सिद्धान्तों को अस्पष्ट ही क्यों रक्खा, स्पष्ट क्यों नहीं किया ?

यह सत्य है कि किसी सिद्धान्त विशेष द्वारा फलकथन में तब तक कठिनाई होती है, जब तक कि उसके मूलस्वरूप के दर्शन न कर लें, वास्तविक तथ्यों का पता न लगा लें तथा उसके मूल उद्गम के स्वरूप का दर्शन न कर लें। फिर चाहे वह व्यक्ति कितना ही अनुभवी एवं विद्वान क्यों न हो। अतः आइये, विंशोत्तरी दशा विश्लेषण से पूर्व हम महर्षि पाराशर द्वारा वर्णित विंशोत्तरी दशा के वर्णन को समझ लें, जिससे उसका स्वरूप स्पष्ट हो।

हमारा सम्पूर्ण राशिचक्र (Zodiac) सत्ताईस नक्षत्रों (Lunar-Mansions) में विभक्त है, जो इस प्रकार हैं :—

क्रम संख्या	हिन्दी नाम	अंग्रेजी नाम
१	अश्विनी	Beta Arietis
२	भरणी	35 Arietis
३	कृत्तिका	Eta Tauri
४	रोहिणी	Aldebaran
५	मगशिरा	Lambda Orionis
६	आर्द्रा	Alpha Orionis
७	पुनर्वसु	Beta Geminorum
८	पुष्य	Delta Cancri
९	आश्लेषा	Alpha Hydroe
१०	मघा	Regulus
११	पूर्वाफाल्गुनी	Delta Leonis
१२	उत्तराफाल्गुनी	Beta Leonis
१३	हस्त	Delta Corvi
१४	चित्रा	Spica Virgins
१५	स्वाति	Arcturus
१६	विशाखा	Alpha Libroe
१७	अनुराधा	Delta Scorpii
१८	ज्येष्ठा	Antares
१९	मूल	Lambda Scorpii
२०	पूर्वाषाढ़ा	Delta Sagittari
२१	उत्तराषाढ़ा	Sigma Sagittari
२२	श्रवण	Alpha Aquiloe
२३	धनिष्ठा	Beta Delphinum
२४	शतभिषा	Lambda Aquarius
२५	पूर्वाभाद्रपद	Alpha pegasi
२६	उत्तराभाद्रपद	Gama pegasi
२७	रेवती	Zeta Piscium

महर्षि पाराशर ने पूरे भचक्र को २७ नक्षत्रों तथा नव नक्षत्रों

में तीन मुख्य भागों में विभक्त किया है, जिसकी एक आवृत्ति १२० वर्ष की मानी है, इन १२० वर्षों में ही नवग्रहों की दशा भुगत जाती है।

२७ नक्षत्रों को ३ भागों में बाँटने से प्रत्येक भाग में ६ नक्षत्र स्थापित हुए हैं, जिनके स्वामी नौ ग्रहों को मान लिया गया तथा ग्रहों का क्रम सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु तथा शुक्र रक्खा। दशा का आरम्भ कृत्तिका नक्षत्र से माना गया, जिसका स्वामी सूर्य है।

इस क्रम से प्रथम आवृत्ति में कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र रक्खे, जिनके स्वामी क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु तथा शुक्र हैं। इस आवृत्ति को 'जन्म नक्षत्र आवृत्ति' कहते हैं।

इसके उपरान्त नक्षत्रों की द्वितीय आवृत्ति उत्तरा फाल्गुनी से आरम्भ होकर पूर्वाषाढ़ा में समाप्त होती है, जिसके स्वामी पुनः क्रम से सूर्य, चन्द्र आदि होते हैं, इस आवृत्ति को 'अनुजन्म नक्षत्र आवृत्ति' कहते हैं।

इसी प्रकार तीसरी आवृत्ति उत्तराषाढ़ा नक्षत्र से आरम्भ होकर भरणी में समाप्त होती है, जिसके स्वामी उसी क्रम से सूर्य, चन्द्र आदि होते हैं तथा जिसे 'त्रिजन्म नक्षत्र आवृत्ति' कहा जाता है।

इस तरह जिस नक्षत्र का जो स्वामी होता है, उसी नक्षत्र से दसवें नक्षत्र का वह पुनः स्वामी होता है।

महर्षि पाराशर ने ग्रहों के दशा वर्ष इस प्रकार से माने हैं—

सूर्य—६ वर्ष
चन्द्र—१० वर्ष
मंगल—७ वर्ष
राहु—१८ वर्ष
बृहस्पति—१६ वर्ष
शनि—१९ वर्ष
बुध—१७ वर्ष
केतु—७ वर्ष
शुक्र—२० वर्ष

॥ नक्षत्र-ग्रह-सारणी ॥

कृ०	रो०	मृ०	आ०	पुन०	पु०	आश्ले०	म०	पू० फा०	प्रथम जन्म नक्षत्र आवृत्ति
उ० फा०	ह०	चि०	स्वा०	वि०	अनु०	ज्ये०	मू०	पू० षा०	द्वितीय अनुजन्मनक्षत्र आवृत्ति
उ० षा०	श्र०	ध०	शत०	पू० भा०	उ० भा०	रे०	अ०	भ०	तृतीय त्रिजन्म नक्षत्र आवृत्ति
सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	— नक्षत्रस्वामी
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	— दशा वर्ष

उपर्युक्त नौ नक्षत्रों के दशा वर्षों का कुल योग १२० वर्ष होता है। नक्षत्र तथा उससे सम्बन्धित ग्रह सारणी पृष्ठ १८ पर स्पष्ट रूप से जानी जा सकती हैं।

ये १२० दशावर्ष भचक्र की आवृत्ति का तीसरा भाग हैं। इस प्रकार १२० + १२० + १२० = ३६० वर्षों में भचक्र का पूरा पथ घेर लिया जाता है। एक भचक्र ३६० अंशों का होता है और चन्द्रमा के पूरे नक्षत्रों के एक भचक्र का मान भी ३६० ही है, इस प्रकार चन्द्रमा जब १° चलता है तो विंशोत्तरी दशा का एक वर्ष पूरा होता है। इस वर्ष को निरयन सौर वर्ष कहा जाता है।

यद्यपि सभी ग्रहों के दशा वर्षों का मान अलग-अलग है, परन्तु उन सबका कुल योग १२० वर्ष सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार एक आवृत्ति के ठीक १२० वर्ष पूरे होने पर सूर्य तथा चन्द्रमा पुनः अपने-अपने नक्षत्रों पर आ जाते हैं और इस प्रकार दशारम्भ की चन्द्रतिथि और दशासमाप्ति की चन्द्रतिथि एक हो जाती है।

माध्यम मान से एक निरयन सौर वर्ष में ३७१.०२ तिथियाँ होती हैं। प्रश्न उठता है कि तिथि किसे कहा जाय। वास्तव में सूर्य और चन्द्रमा की आपस की अंशात्मक दूरी ही तिथि है। इस प्रकार १२० वर्षों में कुल तिथियाँ ४४५२० हो जाती हैं, जो कि पूरे-पूरे १४८४ चन्द्रमासों में विभाजित होकर दशा के १२० वर्षों को वैज्ञानिक आधार दे देती हैं।

विंशोत्तरी दशा पद्धति का आधार चन्द्र नक्षत्र है। व्यक्ति के जन्म के समय जो नक्षत्र गतिशील होता है, उसी नक्षत्र के स्वामी की दशा प्रथम दशा मानी जाती है। उस नक्षत्र को जन्म समय तक चन्द्रमा ने कितना भोग लिया था, उसके अनुपात से दशा का भुक्त काल निकाला जाता है और जन्म के उपरान्त नक्षत्र का जितना भाग भोगना बाकी होता है, उसके अनुपात से दशा का भोग्य काल निकाला जाता है।

विंशोत्तरी दशा का इतना स्पष्टीकरण हो जाने के उपरान्त भी कुछ विचारणीय बिन्दु बाकी रह जाते हैं। वे विचारणीय बिन्दु हैं :—

- विंशोत्तरी दशा क्रम में नव ग्रहों का क्रम सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु तथा शुक्र ही क्यों रक्खा है ? सूर्य, चन्द्र,

मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि क्यों नहीं ?

- चन्द्रमा के दोनों सम्पात् बिन्दुओं (Nodes) अर्थात् राहु और केतु को ग्रह न होते हुए भी विंशोत्तरी दशा पद्धति में शामिल क्यों किया गया है ?
- दशा पद्धति में राहु-केतु को जो स्थान दिया गया है, क्या वह एक निश्चित क्रम में और वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है ?
- विंशोत्तरी दशाक्रम में राहु और केतु ग्रहों के जो दशा वर्ष निर्धारित किये हैं, उनका आधार क्या है ?
- क्या दशा का आधार चन्द्र नक्षत्र के भुक्त-भोग्य पर रखना उचित एवं व्यावहारिक है ?
- क्या विंशोत्तरी दशा प्रामाणिक एवं विश्वसनीय कही जा सकती है ?

मेरे विचार से यह कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जो प्रत्येक बुद्धिजीवी के मस्तिष्क को कुरेदते हैं, परन्तु खेद के साथ लिखना पड़ता है कि इन या इस प्रकार के प्रश्नों से जूझने का किसी ज्योतिषी ने साहस ही नहीं किया। अधिकतर ज्योतिषी बन्धु उसी लकीर को पीट रहे हैं, जो पुरातन काल से चली आ रही है, लेकिन आज के इस तर्कप्रधान एवं वैज्ञानिक युग में ज्योतिष तभी जीवित रह सकता है, जबकि उसका आधार वैज्ञानिक हो, उसका व्यवहार विज्ञानसम्मत हो।

अब मैं एक-एक प्रश्न को सुलझाने का प्रयास करूँगा।

पहला प्रश्न यह है कि विंशोत्तरी दशा क्रम में नव ग्रहों का क्रम सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु तथा शुक्र क्यों है ? सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि क्यों नहीं ?

यह अपने आप में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। महर्षि पाराशर ने जिस क्रम से ग्रहों को स्थान दिया है, वह बिल्कुल विज्ञान सम्मत है। भारतीय ज्योतिष में राहु और केतु को ग्रह माना है, जोकि वस्तुतः ग्रह नहीं हैं, क्योंकि ग्रह तो सौर मण्डल का वह पिण्ड कहा जा सकता है जो सूर्य की परिक्रमा करता हो। पृथ्वी की परिक्रमा करने के साथ चन्द्रमा पृथ्वी के साथ-साथ सूर्य की भी परिक्रमा कर लेता है, इसलिये चन्द्रमा उपग्रह होते हुए भी ग्रह माना गया है।

सूर्य स्थिर है, अतः उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार सूर्य को ग्रह नहीं कहा जा सकता, परन्तु पृथ्वी तो सूर्य की परिक्रमा करती है, अतः पृथ्वी एक ग्रह है। पृथ्वी जिस वृत्त पर चक्कर लगाती है उसी वृत्त के नक्षत्रीय क्रान्तिवृत्त पर सूर्य चलता दिखाई देता है, जो कि वास्तव में पृथ्वी की ही गति होती है। इसीलिए भारतीय ज्योतिष फलित विज्ञान में पृथ्वी की जगह सूर्य को ग्रह मानकर फलित सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये।

राहु तथा केतु केवल कल्पित ग्रह हैं, क्योंकि ये पार्थिव नहीं हैं, केवल वायवीय हैं, परन्तु इतना होने पर भी गगन मण्डल में इनका स्थान तो सुरक्षित है ही।

वास्तव में राहु और केतु पृथ्वी तथा चन्द्रमा के कक्षावृत्तों के सम्पात् विन्दु हैं। जिस सम्पात् स्थान से चन्द्रमा क्रान्तिवृत से उत्तर की ओर चलता है, उस बिन्दु को राहु तथा जिस सम्पात् स्थान से चन्द्रमा क्रान्तिवृत्त से दक्षिण की ओर गमन करता है, उस विन्दु को केतु माना गया है। इस प्रकार यह तो स्पष्ट हो गया कि राहु और केतु ठोस ग्रह नहीं, अपितु गगन मण्डल में चन्द्र-गमन को ठीक प्रकार से समझने के लिए दो निर्धारित विन्दु हैं, जिन्हें राहु और केतु कहा जाता है।

गगन मण्डल में सूर्य को प्रधानता देकर यदि सभी ग्रहों को (राहु-केतु को छोड़कर) कक्षा क्रम के अनुसार स्थापित करें तो उनका क्रम इस प्रकार से होगा—

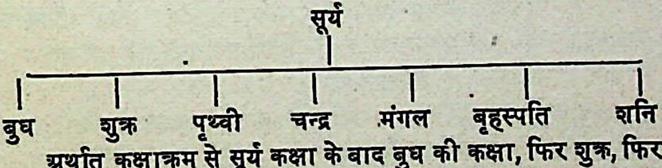

अर्थात् कक्षाक्रम से सूर्य कक्षा के बाद बुध की कक्षा, फिर शुक्र, फिर पृथ्वी, चन्द्र, मंगल, गुरु तथा शनि की कक्षा है, परन्तु यदि हम सूर्य की जगह पृथ्वी को प्रधानता देकर ग्रहों की कक्षाएँ देखें तो उनका रूप इस प्रकार से होगा।

पृथ्वी

सूर्य चन्द्र मंगल वृहस्पति शनि बुध शुक्र

जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका हूँ, चन्द्र-भ्रमण पथ को स्पष्टता देने के लिए ही राहु-केतु ग्रहों की कल्पना कर राहु को (सम्पात् विन्दु के अनुसार) मंगल-बृहस्पति के बीच में तथा केतु को बुध-शुक्र के बीच में स्थान दिया गया है।

अब यदि राहु एवं केतु को भी ग्रह मानकर तथा पृथ्वी को प्रधानता देकर कक्षानुसार ग्रहों का निर्धारण किया जाय तो उनका क्रम इस प्रकार से होगा—

पृथ्वी

सूर्य चन्द्र मंगल राहु बृहस्पति शनि बुध केतु शुक्र

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि पाराशर ने ग्रहों का जो क्रम—सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, वृहस्पति, शनि, बुध, केतु तथा शुक्र रक्खा है, वह पूर्णत: तथ्यसंगत, युक्तियुक्त एवं वैज्ञानिक आधार लिए हुए है।

दूसरा प्रश्न यह है कि चन्द्रमा के दोनों सम्पात् विन्दुओं (Nodes) अर्थात् राहु और केतु को ग्रह न होते हुए भी विंशोत्तरी दशा पद्धति में शामिल क्यों किया गया है।

जैसा कि मैं पहले प्रश्नों के उत्तर में लिख चुका हूँ कि राहु और केतु केवल चन्द्रमा (Satellite of Earth) के उत्तर तथा दक्षिण के सम्पात् विन्दु हैं। ये आकाश में कहीं दृष्टिगोचर नहीं होते अपितु इनका आधार केवल ज्योतिष गणित-फलित ही है।

प्राचीन आर्ष ऋषियों ने देखा कि नक्षत्र मण्डल में क्रान्तिवृत्त की ५०·२६" प्रतिवर्ष की विलोम गति है और १६ वर्षों के अनन्तर विन्दु पुन: उसी स्थान पर दृष्टिगोचर होता है जहाँ प्रारम्भ में था और हर १६ वर्ष के अनन्तर उन्हीं आकृतियों वाले सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण दृष्टिगोचर होते हैं तथा इन सूर्य तथा चन्द्र ग्रहणों का कारण ये ही

सम्पात् विन्दु थे और ये इतने महत्त्वपूर्ण थे कि उन्हें छोड़कर सही गणना सिद्ध नहीं होती थी तो उन्होंने इन विन्दुओं—राहु तथा केतु—को दशा पद्धति में समाविष्ट करके विंशोत्तरी दशा पद्धति को वैज्ञानिक आधार दे दिया।

तीसरे प्रश्न का उत्तर स्वतः ही पहले तथा दूसरे प्रश्न में समाहित है। जैसा कि मैं गत पृष्ठों में ही वता चुका हूँ कि सूर्य हमारे सौर परिवार का पिता है और अन्य सभी ग्रह उसके इर्द-गिर्द चक्कर लगाते रहते हैं। यहाँ तक कि हमारी पृथ्वी भी जिस पर कि हम रहते हैं—सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है।

चन्द्रमा पूर्ण ग्रह न होकर एक उपग्रह है, जो कि पृथ्वी का चक्कर लगाता है, परन्तु पृथ्वी के चक्कर लगाते-लगाते वह स्वतः ही सूर्य के भी चक्कर लगा लेता है। इस प्रकार से ज्योतिष शास्त्र में चन्द्रमा का प्रभाव भी एक ग्रह मानकर किया गया है।

अव यदि चन्द्रमा की विशिष्ट ग्रह स्थिति समझकर छोड़ दें और सूर्य को कृत्तिका नक्षत्र पर अवस्थित करके देखें तो सूर्य के एक ओर वुध तथा दूसरी ओर शुक्र ग्रह दिखाई देंगे। ये दोनों ग्रह लगभग सूर्य के साथ ही रहते हैं तथा वुध ग्रह सूर्य से २८° तथा शुक्र ग्रह सूर्य से ४८° से दूर जा ही नहीं सकता। फिर पृथ्वी को माध्यम मानकर ग्रहों की स्थिति का अवलोकन करें तो उसके एक छोर पर मंगल तथा दूसरे छोर पर वुध दिखाई देता है, इसलिए मंगल तथा वुध के आगे के बिन्दुओं को स्पष्ट करने के लिए राहु तथा केतु की अवस्थिति मानी गई और मंगल के वाद राहु को तथा वुध के वाद केतु को स्थान देकर विंशोत्तरी दशा को पूर्ण वैज्ञानिक बनाकर निश्चित प्रभाव एवं परिणाम स्पष्ट किये गये। अतः दशा पद्धति में राहु और केतु का जो स्थान दिया गया है वह सही, प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक तथ्यों से पूर्ण है।

अव फिर एक प्रश्न उठता है कि राहु के १८ तथा केतु के ७ दशा वर्ष जो निर्धारित किये हैं, क्या वे सही हैं ? क्या उनका भी कोई वैज्ञानिक आधार है ?

वस्तुतः देखा जाय तो राहु-केतु के दशा वर्षों के पीछे भी महर्षियों का गम्भीर चिन्तन एवं वैज्ञानिक दृष्टि ही कार्य कर रही है। कृतिका

नक्षत्र (जो कि सूर्य का ही नक्षत्र है) पर सूर्य की स्थिति मानकर आकाश मण्डल को देखें तो हम देखेंगे कि सूर्य चन्द्रादि सभी ग्रह एक निश्चित समय के बाद पुनः अपनी उसी स्थिति पर आ जाते हैं। उदाहरणार्थं सूर्य ३६५।१५।२२।५७ के बाद ठीक उसी स्थिति पर आ जाता है जहाँ से उसने गमन प्रारम्भ किया था। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की भी भ्रमण स्थिति है।

यद्यपि राहु-केतु को ग्रह न होने के कारण आकाश मण्डल में देख पाना संभव नहीं है, परन्तु कृत्तिका नक्षत्र (पहले यह ठीक पूर्व में उदित होता था) पर सूर्य की स्थिति मानकर पृथ्वी से ग्रहों के भ्रमण पथ का अवलोकन करें तो केतु त्रिकोणस्थिति में ही दृष्टिगोचर होगा, फलस्वरूप उसके दशावर्ष ७ रखना स्वाभाविक ही था। यदि सूक्ष्मतापूर्वक खगोलीय स्थिति का अध्ययन करें तो आगे लिखे निश्चित समय के बाद ही उन्हें पुनः उसी बिन्दु पर देख सकेंगे, जिस बिन्दु से उन ग्रहों ने भ्रमण प्रारम्भ किया था।

सूर्य— ६ वर्ष
चन्द्र—१० वर्ष
मंगल— ७ वर्ष
राहु—१८ वर्ष (पूर्ण भ्रमण के आधार पर)
बृहस्पति—१६ वर्ष
शनि—१९ वर्ष
बुध—१७ वर्ष
केतु— ७ वर्ष (त्रिकोणीय स्थिति मानकर)
शुक्र—२० वर्ष।

इन वर्षों से पहले ये ग्रह अपने निश्चित बिन्दु पर दीख नहीं सकते, दिखाई भी देंगे तो अस्त, वक्री या निम्नता में आकर ही। अतः महर्षियों ने जो राहु के २८ तथा केतु के ७ दशावर्ष निर्धारित किये हैं, वे वैज्ञानिक तथ्यों से पूर्ण एवं खगोलीय स्थिति के आधार पर ही हैं।

अगला प्रश्न है कि क्या दशा का आधार चन्द्र नक्षत्र के भुक्त-भोग्य पर रखना उचित है ? उत्तर है कि पृथ्वी पर यदि किसी ग्रह का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है तो वह चन्द्रमा है, क्योंकि एक तो चन्द्रमा पृथ्वी

का ही चक्कर लगाता है एवं उसका उपग्रह भी है, दूसरे चन्द्रमा पृथ्वी से सर्वाधिक निकट है, इसीलिए चन्द्रमा को मन की संज्ञा दी गई है। ज्वार-भाटा आदि इसकी निकटता के प्रमाण हैं और अब तो मानव के सबल हाथ चन्द्रमा को अच्छी तरह से स्पर्श करके भी आ चुके हैं। चूँकि चन्द्रमा का पृथ्वी से घनिष्ठ संबंध है, अतः अन्य ग्रहों की उपेक्षा चन्द्र नक्षत्रों को ही आधार बनाकर दशा पद्धति का विवेचन किया तो वह स्तुत्य एवं प्रामाणिक ही है, इसमें सन्देह कहाँ ?

अब अन्तिम प्रश्न रह जाता है कि क्या विंशोत्तरी दशा को प्रामाणिक एवं विश्वसनीय कह सकते हैं ?

मेरी ऐसी मान्यता है कि ज्योतिष एक विज्ञान है और इसका भी प्रयोग-परीक्षण उसी भाँति होना चाहिए, जिस प्रकार विज्ञान के अन्य उपकरणों या द्रव्यों का होता है। सन् १९६४-१९६५ में दशाओं को लेकर मैंने एक परीक्षण किया था। मैंने अपने परिचितों एवं श्रद्धालुओं का पाँच-पाँच का ग्रुप बनाया (इनमें मैंने सभी वर्गों एवं स्तरों के व्यक्तियों पर प्रयोग किया, जिनमें सेक्रेटरी, मंत्री, कलैक्टर, नौकरी पेशा, व्यापारी तथा भिखारी आदि सभी तबके के लोग थे) और अगले छः महीनों का भविष्य विंशोत्तरी दशा से और एक अन्य दशा से (अन्य दशा—योगिनी, अष्टोत्तरी, त्रिकोण दशा, केन्द्र दशा, ऊर्ध्वदशा आदि १०४ दशाओं में से किसी के अनुसार) स्पष्ट कर अलग-अलग लिफाफों में बन्द कर तथा उस पर सम्बन्धित व्यक्ति के हस्ताक्षर कराके वे लिफाफे उनके पास रख दिए।

छः महीनों के उपरान्त उन लिफाफों को खोला गया तो परिणाम इस प्रकार से रहा। ९२% विंशोत्तरी दशा, ४% कालचक्र दशा और अन्य प्रतिशत में शेष सब दशाएँ। इस प्रयोग से यह तो निर्विवाद सिद्ध हो गया कि फलकथन में जितनी प्रामाणिक विंशोत्तरी दशा कही जा सकती है, उतनी अन्य कोई दशा नहीं, लेकिन विंशोत्तरी दशा का इतना विवेचन हो जाने के उपरान्त भी कुछ छोटे-मोटे प्रश्न रह जाते हैं, जिनका समाधान करना आवश्यक है।

१. केवल नौ ग्रहों को ही विंशोत्तरी दशा में क्यों मान्यता दी, जब कि आजकल जन्मकुण्डली में हर्षल-नेपच्यून और प्लूटो ग्रह को भी

स्पष्ट करते हैं ? क्या इन्हें भी विंशोत्तरी दशा में स्थान नहीं दिया जा सकता ?

उत्तर है कि ये तीनों ग्रह शनि ग्रह से परे हैं और इतने दूर तथा मंदगति हैं कि इनके प्रभावों की जाँच करने के लिए वर्षों का धैर्य चाहिए, परन्तु फिर भी यह तो निर्विवाद है कि मानव पर इनका प्रभाव पड़ता है एवं उसका निश्चित परिणाम निकलता है। मैं पाठकों को सूक्ष्म एवं जटिल ज्योतिषीय गणित से उबाना नहीं चाहता, परन्तु यदि वोड़स सिद्धान्त के अनुसार इन ग्रहों के दशा वर्ष निर्धारित करें तो हर्षल के २२, नेपच्यून के २५ तथा प्लूटों के २८ दशावर्ष होंगे। इस प्रकार कुल विंशोत्तरी दशा का मान १२० वर्ष न हो कर १२०+२२+२५+२८=१९५ वर्ष होंगे, तथा तब ग्रहों का क्रम होगा—

सूर्य— ६ वर्ष
चन्द्र—१० वर्ष
मंगल— ७ वर्ष
राहु—१८ वर्ष
बृहस्पति—१६ वर्ष
शनि—१९ वर्ष
हर्षल—२२ वर्ष
नेपच्यून—२५ वर्ष
प्लूटो—२८ वर्ष
बुध—१७ वर्ष
केतु— ७ वर्ष
शुक्र—२० वर्ष
कुल १९५ वर्ष

मैंने हर्षल, नेपच्यून एवं प्लूटों ग्रहों की दशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा निकालकर लोगों के फल कथन में परीक्षण किया था और उसमें मैंने तथ्यात्मकता एवं निश्चयात्मकता पाई। साथ ही उनके जो परिणाम निकले वे भी शत-प्रतिशत सही थे, अतः मैं ज्योतिष प्रेमियों एवं विद्यार्थियों से आग्रह करूँगा कि वे कूप-मण्डूकता छोड़ कर सही तथ्यों पर आयें और साथ ही विंशोत्तरी पद्धति में इन नवीन ग्रहों को भी स्थान

दें। वे देखेंगे कि उनके फलकथन में आश्चर्यजनक सफलता सिद्ध हो रही है, अतः अब मैं निर्विवाद रूप से यह कह सकने में समर्थ हूँ कि इन ग्रहों को भी दशा पद्धति में स्थान देकर घण्टों और मिनटों तक की ठीक-ठीक भविष्यवाणी की जा सकती है और वह सत्य एवं प्रामाणिक सिद्ध होती है। मैंने राह सुझा दी है। पुराणों एवं 'पुराना ही उत्तम है' की प्रवृत्ति त्याग कर तथा नवीन खोजों एवं परीक्षणों के आधार पर चल कर आप भविष्यवाणी करें तो निश्चय ही सफलता के द्वार खटखटा कर विजयमाल पहन सकेंगे, इसमें सन्देह नहीं।

कुछ विद्वानों ने मेरे सामने प्रश्न उठाया था कि हम अभी भी विंशोत्तरी दशा का मान १२० वर्ष ही मानकर चलते रहें, जब कि मानव की आयु में ह्रास आ चुका है। महर्षि पाराशर ने उस समय मानव की मध्यम आयु १२० वर्ष मानकर ही विंशोत्तरी दशा पद्धति का निर्माण किया था, परन्तु जब मानव ६० वर्ष से १०० वर्ष के बीच में बँधकर रह गया है और कोई विरला ही १०० से ऊपर आयु भोगता है तब भी १२० वर्ष की मानव आयु मानकर ही दशा पद्धति क्यों स्पष्ट की जाये।

नेपाल देश के ज्योतिर्विदों ने अपने सम्मेलन में विंशोत्तरी दशा में से तृतीयांश कम कर मानव की पूर्ण आयु ८० वर्ष मानकर उस पर ही विंशोत्तरी दशा घटित की है और इस प्रकार अन्तर्दशा—प्रत्यन्तर्दशा में भी २/३ भाग ही ग्रहण कर दशा स्पष्ट करते हैं। उदाहरणार्थ, सूर्य के दशावर्ष ६ की जगह ४ वर्ष तथा सूर्य का अन्तर्दशा काल ३ मास, १८ दिन की बजाय २ मास, १२ दिन ही स्वीकार किया है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के दशा वर्ष भी २/३ भाग ही रक्खे हैं, परन्तु मैं इस प्रणाली से सहमत नहीं हूँ। मैं ऊपर ही स्पष्ट कर चुका हूँ कि विंशोत्तरी दशा का आधार मात्र मानव की आयु ही नहीं है अपितु ग्रहों का भ्रमण-पथ भी है। खमण्डल के सम्पूर्ण भ्रमण का काल ही उस ग्रह का दशाकाल है। उदाहरणार्थ, शनि खमण्डल में जिस बिन्दु से प्रारम्भ होता है ठीक उसी बिन्दु पर पुनः १९ वर्ष में पहुँचता है, अतः यदि हम १९ वर्षों का २/३ भाग कर १२ वर्ष, ८ महीने मानें तो इस अवधि में शनि को पुनः उस बिन्दु पर नहीं देख सकेंगे जहाँ से वह दूसरी आवृत्ति प्रारम्भ करेगा

अपितु पीछे ही रहेगा। फलस्वरूप, २/३ भागकर फलादेश करने से तो सब गड़बड़ा जायेगा और फलकथन में किंचित भी न तो सत्यता रहेगी और न प्रामाणिकता ही। एतदर्थ विंशोत्तरी दशा के पूर्ण अवधि मान का २/३ भाग कर देना न तो युक्तिसंगत ही है और न वैज्ञानिक तथा पूर्ण ही।

लग्न निकालना

लग्न निकालने से पूर्व इष्टकाल निकाल लेना चाहिये। इष्टकाल निकालने के लिए निम्न तथ्यों की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है।

१. जन्म-समय या वह समय जिस समय का लग्न निकालना है।
२. सूर्योदय काल
३. सूर्यास्त काल
४. दिनमान

यदि पंचांग को ध्यानपूर्वक देखें तो प्रत्येक दिन के नं० २, ३ और ४ अर्थात् सूर्योदय, सूर्यास्त और दिनमान स्पष्ट किये हुए होते हैं। साथ ही पंचांग में नित्य प्रातः रवि स्पष्ट (प्रा० र० स्प०) भी किया हुआ होता है।

उपर्युक्त चार तथ्यों को एक स्थान पर लिख देने के पश्चात् निम्न चार नियमों में से जहाँ जिसका उपयोग हो, उसके अनुसार घट्यादि इष्टकाल निकाल लेना चाहिए।

नियम १.

सूर्योदय से लेकर दिन के १२ बजे के भीतर जन्म हो तो समय

और सूर्योदय काल का अन्तर कर शेष को ढाई गुना ($२\frac{१}{२}$) करने से घट्यादि इष्टकाल सिद्ध होता है।

उदाहरणार्थ, संवत् २०२६ फाल्गुन कृष्णा ३ को प्रातः ९ बजकर ४५ मिनट पर जोधपुर में किसी का जन्म हुआ। ९—४५ को संस्कार करने पर (९—४५—३८=९—७ मिनट) ९ बजकर ७ मिनट बने। संस्कार का अर्थ है अक्षांश-देशान्तर के अनुसार शुद्ध स्टैण्डर्ड समय बनाना। जोधपुर का स्टैण्डर्ड समय बनाने के लिए ३८ मिनट ऋण किया जाता है, अतः ९—४५ में से ३८ मिनट निकाले तो शुद्ध स्टैण्डर्ड समय आया ९—७ अर्थात् घड़ी के मुताबिक उसका जन्म ९—४५ पर था, पर उस समय शास्त्रीय समय ९ बजकर ७ मिनट ही था।

उस दिन सूर्योदय काल था, ६-२१

अतः ९— ७ में से
६—२१ घटाए
तो २—४६ शेष रहे।

२—४६
× $२\frac{१}{२}$ से गुणा किया
६—५५ (यहाँ ४६ × $२\frac{१}{२}$ ÷ ६० किया)

तो घड़ी के मुताबिक जिसका जन्म ९ बजकर ४५ मिनट पर हुआ था, उसका इष्टकाल ६—५५ सिद्ध हुआ।

नियम २.

यदि १२ बजे दिन से सूर्यास्त के अन्दर का जन्म हो तो जन्म समय और सूर्यास्तकाल का अन्तर कर शेष को ढाई गुना करके दिनमान में से घटाने पर जो शेष रहता है, वही इष्टकाल होता है।

उदाहरणार्थ संवत् २०२६ फाल्गुन शुक्ला २ को जोधपुर में किसी का जन्म ४ बजकर ५१ मिनट पर हुआ।

४—५१ जन्म
—३८ मिनट (जोधपुर अक्षांश-देशान्तर
शास्त्रीय समय ४—१३ संस्कार करने पर)

उस दिन सूर्यास्त काल था—५-४९

अतः सूर्यास्त काल ५—४६ में से
शास्त्रीय जन्म समय ४—१३ घटाया
तो १—३६ शेष रहा
× २½ से गुणा किया
०४—००

दिनमान २६— ८ में से
४—०० घटाया
तो २५—८ इष्टकाल सिद्ध हुआ।
अतः उस दिन ४ बजकर ५१ मिनट पर
२५—८ इष्टकाल चल रहा था।

नियम ३.

सूर्यास्त से १२ बजे रात्रि के भीतर का जन्म हो तो जन्म समय और सूर्यास्त काल का अन्तर कर शेष को ढाई गुना कर दिनमान में जोड़ दिया जाय तो घट्यादि इष्टकाल सिद्ध होता है।

उदाहरणार्थ, संवत् २०२६ फाल्गुन शुक्ला २ को किसी का जन्म जोधपुर में रात्रि के ८ बजकर १२ मिनट पर हुआ है।

८—१२ घड़ी का समय
—३८ मिनट (अक्षांश-देशान्तर शुद्धि)
७—३४ शास्त्रीय समय
सूर्यास्त ५—४६ को घटाया
तो १—४५ शेष रहे
× २½ से गुणा किया
४—२५
दिनमान जोड़ा २६—२८
तो ३३—३३ इष्टकाल सिद्ध हुआ।

अतः उस दिन रात्रि को ८ बजकर १२ मिनट पर ३३—३३ इष्टकाल चल रहा था।

नियम ४.

यदि रात के १२ बजे के पश्चात् और सूर्योदय से पहले का जन्म

हो तो सूर्योदय काल और जन्म समय का अन्तर कर शेष को ढाई गुना कर ६० घड़ी में से घटा देने से इष्टकाल होता है।

उदाहरणार्थ संवत् २०२६ फाल्गुन शुक्ला २ की रात्रि को ४ बजकर १७ मिनट पर जोधपुर में जन्म हुआ।

४—१७
—३८
३—३९ शास्त्रीय समय

सूर्योदय— ६—१० में से
शास्त्रीय समय ३—३९ घटाया
२—३१ शेष रहे।

२—३१
× २½ से गुणा किया।
तो ६—१८ गुणनफल आया
६०—०० घटी में से
६—१८ घटाये
तो ५३—४२ इष्टकाल सिद्ध हुआ।

अतः उस दिन रात्रि को ४ बज कर १७ मिनट पर ५३—४२ इष्टकाल सिद्ध हुआ।

नियम ५.

सूर्योदय से लेकर जन्म समय तक जितना समय बीता हो उसे केवल ढाई (२½) गुना कर देने से घट्यादि इष्टकाल होता है।

उदाहरणार्थ, संवत् २०२६ फाल्गुन शुक्ला ७ शनिवार को प्रातः १० बजकर १८ मिनट पर जोधपुर में जन्म हुआ।

१०—१८
—३८ (आक्षांश-देशान्तर शोधन)
९—४० शुद्ध शास्त्रीय जन्म समय
६— ६ सूर्योदय घटाया
३—३४ शेष रहा
× २½ से गुणा किया
तो ८—५५ इष्टकाल सिद्ध हुआ।

अर्थात् उस दिन १० बज कर १८ मिनट पर ८—५५ इष्टकाल चल रहा था।

पाठकों को यह कठिनाई आ रही होगी कि जोधपुर नगर के अक्षांश-देशान्तर शोधन तो ३८ मिनट हैं, जिन्हें घड़ी के समय में से ऋण करने पर शास्त्रीय समय आ जाता है, परन्तु अन्य शहरों की अक्षांश-देशान्तर शोधन कितना है? उत्तर है कि अक्षांश-देशान्तर शोधन एक अत्यन्त जटिल एवं लम्बी प्रक्रिया है। मैं पाठकों को उसकी भूल-भूलैया में नहीं डालना चाहता, अतः नीचे कुछ प्रमुख शहरों के अक्षांश-देशान्तर शोधन स्पष्ट करके दे रहा हूँ। ऋण हो तो जन्म समय में से ऋण कर दें। यदि धन हो तो जोड़ दें।

स्टैण्डर्ड अन्तर

क्रम	शहर का नाम	मि०-सै०
१	अकोला	—२१।५२
२	अजमेर	—३१।१२
३	अटक (पाकिस्तान)	—१०।५२
४	अमृतसर	—३०।४८
५	अम्बाला	—२२।३२
६	अयोध्या	—१।४
७	अलमोड़ा	—११।२०
८	अलवर	—२३।२८
९	अहमदनगर	—३०।४८
१०	अहमदाबाद	—३९।२८
११	अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)	—१७।३६
१२	अमरावती	—१९।०
१३	अमेठी	—३।०
१४	अगरतला (त्रिपुरा)	+३५।०
१५	अमरोहा	—१६।०
१६	आगरा	—१७।४०
१७	आज़मगढ़ (उ० प्र०)	+२।४८

क्रम	शहर का नाम	मि०-सं०
१८	आबू	—३६।०
१९	आसनसोल	+१९।०
२०	इन्दौर	—२६।४०
२१	इटावा	—१४।०
२२	ईडर	—३८।०
२३	उज्जैन	—२७।८
२४	उन्नाव	—७।०
२५	उदयपुर (राजस्थान)	—३५।१२
२६	ऊटकमण्ड	—२३।०
२७	ऊधमपुर (पंजाब)	—३१।०
२८	एलिचपुर (म० प्र०)	—१९।४८
२९	औरंगाबाद (हैदराबाद)	—२८।२८
३०	औरंगाबाद (बिहार)	—२८।०
३१	कपूरथला	—२८।२०
३२	कठुआ (काश्मीर)	—२८।०
३३	करनाल	—२१।५२
३४	कराची (पाकिस्तान)	—३१।४४
३५	कलकत्ता	+२३।३६
३६	कन्नौज	—१०।०
३७	काठमाण्डू	+१०।४८
३८	कटक	+१४।०
३९	कच्छ (भुज)	—५१।०
४०	काँगड़ा	—२४।४८
४१	काँकरौली	—३४।२४
४२	कानपुर	—८।२४
४३	कालाबाग (पाकिस्तान)	—१३।३६
४४	काबुल	—५३।०
४५	काशी	+२।०
४६	कालपी	—११।०

क्रम	शहर का नाम	मि०-सै०
४७	कायमगंज	—१२।०
४८	कालीकट	—२७।०
४९	किशनगढ़ (राजस्थान)	—३१।०
५०	कुमारी अन्तरीप	—१९।४४
५१	कुरुक्षेत्र	—२२।४८
५२	कुम्भकोणम्	—१२।२०
५३	कोटा (राज०)	—२६।३२
५४	कोलम्बो (सीलोन)	—१०।१६
५५	कोल्हापुर	—३२।५६
५६	कोचीन (बन्दरगाह)	—२४।५२
५७	खैरपुर (सिंध)	—२५।०
५८	खंभात	—३९।३६
५९	खण्डवा	—२५।०
६०	गया	+१०।४
६१	ग्वालियर	—१७।२०
६२	गाजीपुर (उत्तर प्रदेश)	+४।२०
६३	गिलगित	—३२।३२
६४	गुजरात (पाकिस्तान)	—३।४०
६५	गुजरावालाँ (पाकिस्तान)	—३।४
६६	गुरदासपुर	—२८।१२
६७	गुरुसहायगंज	—११।०
६८	गोरखपुर	—३।३६
६९	गोवा	—३४।१२
७०	गोंडा	—२।०
७१	गोकर्ण	—३३।०
७२	गोहाटी (आसाम)	+३७।०
७३	चम्बा	—२५।२०
७४	चण्डीगढ़	—२२।३२
७५	चमन (क्वेटा, पाकिस्तान)	—३४।०

क्रम	शहर का नाम	मि०-सै०
७६	चित्तौड़गढ़	—३१।०
७७	चित्रकूट	—८।०
७८	चेरापूंजी	+३७।८
७९	चैनपुर	+३।०
८०	छतरपुर (मध्य प्रदेश)	—११।२८
८१	छपरा (बिहार)	+८।४४
८२	छिबरा (मऊ)	—१२।०
८३	जगन्नाथपुरी	+१३।०
८४	जंजीरा	—३८।०
८५	जलपाइगुड़ी	+२५।४
८६	जम्मू	—३०।२४
८७	जबलपुर	—१०।४
८८	जयपुर	—२६।३२
८९	जमशेदपुर	+१५।०
९०	जसवन्तनगर	—१४।०
९१	जसरोटा	—३०।०
९२	जसमेरगढ़	—२९।०
९३	जालन्धर	—२८।४८
९४	जामनगर	—५०।०
९५	जाफराबाद	—४४।०
९६	जींद	—२४।२८
९७	जूनागढ़	—४७।३६
९८	जैसलमेर	—४६।१२
९९	जोधपुर	—३७।४४
१००	जौनपुर	+०।५६
१०१	झरिया	+१६।०
१०२	झालरापाटन	—२५।१२
१०३	झाँसी	—१५।३२
१०४	झेलम (पाकिस्तान)	—४।५२

क्रम	देश का नाम	मि०-सं०
१०५	ट्रावनकोर	—२२।०
१०६	टोंक (राजस्थान)	—२६।४०
१०७	टूंडला जंकशन	—१७।०
१०८	डलहौजी	—२७।०
१०९	डिवाई	—१७।०
११०	डिवरूगढ़	+५०।०
१११	डेरा इस्माइलखाँ (पाकिस्तान)	—१६।१६
११२	डेरा गाजीखाँ (पाकिस्तान)	—१६।४४
११३	ढाका (बंगला देश)	+११।४४
११४	तलागंग	—४०।८
११५	त्रिवेन्द्रम	—२२।०
११६	त्रिचनापल्ली	—१४।५६
११७	दरभंगा	+१३।४८
११८	द्वारका	—५३।५६
११९	दार्जिलिंग	+२३।१२
१२०	दिल्ली	—२१।१२
१२१	देहरादून	—१७।४४
१२२	दौलताबाद	—२९।०
१२३	धर्मशाला	—२४।०
१२४	धवलपुर	—१८।०
१२५	ध्रांगध्रां	—४४।०
१२६	धार	—२९।०
१२७	धारवाड़	—३०।०
१२८	धूलिया	—३१।०
१२९	धौलपुर	—१८।२
१३०	नडियाद (गुजरात)	—३८।२०
१३१	नसीराबाद (राजस्थान)	—३०।५६
१३२	नागपुर	—१३।२४
१३३	नाथद्वारा	—३४।३२

क्रम	शहर का नाम	मि०-सैं०
१३४	नासिक	—३४।४०
१३५	नाभा	—२६।०
१३६	नीमच	—३१।०
१३७	नैनीताल	—१२।०
१३८	पटना (बिहार)	+१०।५२
१३९	पटियाला	—२४।२०
१४०	पठानकोट	—२७।१२
१४१	प्रतापगढ़	—३१।०
१४२	प्रयागराज	—२।२४
१४३	पाण्डिचेरी	—१०।२८
१४४	पाटन (राजस्थान)	—२६।०
१४५	पानीपत	—२१।०
१४६	पीलीभीत	—११।०
१४७	पूर्णिया	+२०।०
१४८	पूना	—३८।२०
१४९	पेशावर (पाकिस्तान)	—१३।३२
१५०	पोरबन्दर	—५०।४४
१५१	पंढरपुर	—२८।०
१५२	फर्रुखाबाद	—११।३२
१५३	फरीदकोट	—३०।१२
१५४	फतेहपुर (राजस्थान)	—३०।०
१५५	फिरोज़पुर	—३१।२०
१५६	फाजिल्का	—३४।०
१५७	फैजाबाद	—१।०
१५८	बड़ौदा	—३६।०
१५९	बम्बई	—३८।२४
१६०	बरेली	—१२।१२
१६१	बद्रीनाथ	—११।५२
१६२	बर्दवान	+२१।२८

क्रम	शहर का नाम	मि०-सं०
१६३	वहावलपुर	—४२।५२
१६४	विलासपुर (मध्य प्रदेश)	—१।८
१६५	वहराइच	—३।०
१६६	बाँकीपुर	+११।०
१६७	बाँसवाड़ा	—३२।०
१६८	बाँकुरा	+१८।०
१६९	विलासपुर (हिमाचल प्रदेश)	—२३।०
१७०	बीकानेर	—३६।३२
१७१	बीजापुर	—२६।५२
१७२	बूँदी	—२७।०
१७३	बुलन्दशहर	—१८।०
१७४	बंगलौर	—१९।२८
१७५	भटिण्डा	—३०।०
१७६	भरतपुर	—२०।०
१७७	भागलपुर	—१७।५६
१७८	भावनगर	—४१।०
१७९	भुवनेश्वर	+१४।०
१८०	भूटान	+३०।०
१८१	भोपाल	—१९।३६
१८२	मथुरा	—१९।१६
१८३	मद्रास	—८।५२
१८४	मण्डी (हिमाचल प्रदेश)	—२२।०
१८५	मणिपुर स्टेट	+४६।०
१८६	माणिकपुर	—३।०
१८७	मालेगाँव	—३२।०
१८८	मिर्जापुर	+०।१
१८९	मियाँवाली (पाकिस्तान)	—१३।४८
१९०	मिण्ठगुमरी (पाकिस्तान)	६।३६
१९१	मुलतान	—१३।५६

क्रम	शहर का नाम	मि सें०
१९२	मुजफ्फरपुर	+११।४८
१९३	मुर्शिदाबाद	+२४।०
१९४	मुरादाबाद	—१४।४४
१९५	मुजफ्फरनगर	+१२।०
१९६	मुंगेर	+१६।०
१९७	मेरठ	—१९।०
१९८	मैसूर	—२३।०
१९९	मण्डी	—२२।८
२००	मैनपुरी	—१४।०
२०१	रतलाम	—२९।३२
२०२	रत्नगिर	—३६।४४
२०३	रामेश्वरम्	—१२।३२
२०४	रावलपिण्डी	—७।३६
२०५	राजकोट	—४६।१६
२०६	राजमहेन्द्री (आंध्र प्रदेश)	—२।४८
२०७	रामपुर (उत्तर प्रदेश)	—१४।०
२०८	रायगढ़	+४।०
२०९	रामदुर्ग	—२८।०
२१०	रायपुर (मध्य प्रदेश)	—३।१६
२११	रायबरेली	—५।०
२१२	रीवाँ	—५।०
२१३	रोहतक	—२३।२८
२१४	रोपड़ (पंजाब)	—२४।०
२१५	रंगून (बर्मा)	+५५।०
२१६	लखनऊ	—६।४
२१७	लद्दाख	—१५।०
२१८	ललितपुर	—१६।०
२१९	लाहौर (पाकिस्तान)	—२।१६
२२०	लुधियाना	—२६।२४

क्रम	शहर का नाम	मि०-सैं०
२२१	वजीराबाद (पाकिस्तान)	—३।०
२२२	शाहजहाँपुर	—१०।०
२२३	शिकोहाबाद	—१५।०
२२४	शिकारपुर (सिंध)	—५५।०
२२५	शिलाँग	+३८।०
२२६	शिमला	—२१।८
२२७	श्रीनगर	—३०।३६
२२८	श्रीमाधोपुर (राजस्थान)	—२६।०
२२९	सरगोधा (पाकिस्तान)	—६।२०
२३०	सहारनपुर	—२०।२८
२३१	सतारा	—३४।०
२३२	स्यालकोट (पाकिस्तान)	—१।३६
२३३	सागर (मध्य प्रदेश)	—१५।०
२३४	सूरत	—३८।३२
२३५	सोलन (हिमाचल प्रदेश)	—२१।२४
२३६	सिरोही	—३८।०
२३७	सीतामढ़ी	+१२।०
२३८	सोलापुर	—२७।०
२३९	सोमनाथ	—४८।०
२४०	सोजत मारवाड़	—३५।०
२४१	सोनपुर	+६।०
२४२	संगमनेर	—३१।०
२४३	हरिद्वार	—१७।८
२४४	हजारीबाग	+१२।०
२४५	हाथरस	—१८।०
२४६	हाजीपुर	+३।०
२४७	हिसार	—२८।५६
२४८	हैदराबाद (आन्ध्र)	—१६।०
२४९	हैदराबाद (सिंध)	—५५।२८

क्रम	शहर का नाम	मि०-सै०
२५०	होशियारपुर	—२६।१२
२५१	होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)	—१६।०
२५२	काबुल (अफगानिस्तान)	+७।१२
२५३	क्वेटा (बिलोचिस्तान)	—३२।०
२५४	माण्डले (वर्मा)	—५।२८
२५५	रंगून (वर्मा)	—५।८
२५६	सिंगापुर (मलाया)	—३४।३६
२५७	बगदाद (ईराक)	—२।१२
२५८	मक्का (अरब)	—२०।२४
२५९	काहिरा (मिस्र)	+५।०
२६०	जेनेवा (स्विटजरलैण्ड)	—३५।३२
२६१	जेरुसलम (इज़राइल)	+२०।५६
२६२	न्यूयार्क (अमेरिका)	+४।०
२६३	वाशिंगटन (अमेरिका)	—८।१६
२६४	बर्लिन (पू० जर्मनी)	—६।२०
२६५	लन्दन (इंग्लैण्ड)	०।२०
२६६	ग्रीनविच	०।०
२६७	ल्हासा (तिब्बत)	+३४।२०
२६८	लिस्बन (पुर्तगाल)	—३६।३६
२६९	ढाका (बंगला देश)	+१।४४
२७०	नैरोबी (केन्या)	—३२।३२
२७१	मोम्बासा (केन्या)	—२१।२०
२७२	टोकियो (जापान)	+१६।०
२७३	पेरिस (फ्रांस)	—५०।४०
२७४	मास्को (रूस)	—२६।३२
२७५	रोम (इटली)	—१०।८
२७६	पेकिंग (चीन)	—१४।२४

ऊपर मैंने पाठकों की सुविधा के लिए देश-विदेश के कतिपय प्रमुख शहरों के अक्षांश-रेखान्तर शोधन कर स्टैण्डर्ड अन्तर स्पष्ट कर दिया

है। पाठक जिस शहर, गाँव या कस्बे में जातक का जन्म हुआ हो उसके पास के शहर का स्टैण्डर्ड अन्तर ले लें तथा घड़ी के समय में ऋण या धन (जो भी चिन्ह हो) करके शास्त्रीय समय बना लें।

यह आवश्यक नहीं है कि आप सैकण्ड तक निकालें। हालाँकि अत्यन्त सूक्ष्म लग्न स्पष्ट करने के लिए सैकण्डों का भी प्रयोग करते हैं, लेकिन पाठकों को इतना सूक्ष्म में जाने की जरूरत नहीं। इसीलिए मैंने पूर्वोक्त उदाहरणों में जोधपुर के स्टैण्डर्ड अन्तर को ३७ मिनट ३२ सैकंड ऋण न मान कर स्थूलत: ३८ मिनट ऋण कर लिये हैं।

उदाहरणार्थ, यदि किसी का जन्म झरिया (क्रम सं० १०१) में प्रात: ८ बजकर ३१ मिनट पर हुआ है तो इस विषय में १६ मिनट धन करने से—८ बजकर ४७ मिनट शास्त्रीय समय होगा, इसी प्रकार यदि किसी का जन्म द्वारिका में हुआ है तो घड़ी के समय में से ५३ मिनट ५६ सैकण्ड ऋण करने से शास्त्रीय समय हो जाता है। शास्त्रीय समय हो जाने के वाद पूर्वोक्त नियमों से इष्टकाल वना लेना चाहिए।

जव इष्टकाल स्पष्ट हो जाय तो फिर लग्न निकालना सुगम हो जाता है। इष्टकाल के वाद उस दिन का सूर्य स्पष्ट (जो पंचांग में पंक्ति के अन्त में (प्रा. र. स्प.) १०।२४।४५।४४ है, इसके प्रथम दो अंक १०। २४ ही हमारे लिए अभिप्रेत हैं। लग्न सारणी में १० राशि के २४ अंश में जो संख्या हो, वह इष्टकाल में जोड़ देनी चाहिए तथा इस प्रकार जो संख्या वने, वह संख्या पुन: लग्नसारणी में ढूंढनी चाहिए, जहाँ पर मिले, उस पंक्ति के बाँई ओर लिखी राशि तथा ऊपर लिखे अंश ही लग्न-अंश होंगे। पूर्वोक्त उदाहरण नियम दो में इष्टकाल २५।८ है तथा उस दिन सूर्य स्पष्ट १०।२४ है, लग्न सारणी में १० राशि के २४ अंश देखें तो अंक हैं—५८।२४।४४, ये अंश इष्टकाल में जोड़े २५।८

+५८।२४।४४

(६० से अधिक होने पर साठ का भाग दिया) २३।३२।४४

अव इन २३।३२।४४ को लग्न सारणी में पुन: देखा तो इसके निकटतम अंश मिले २३।२६।२७ जिसके कि बाँई ओर सिंह राशि लिखी है तथा ऊपर अंशों की पंक्ति में २ है। अत: यह स्पष्ट हुआ कि उस समय सिंह लग्न दो अंशों में चल रहा था।

जब लग्न स्पष्ट हो जाय, तब फिर उस दिन जो-जो ग्रह जिस-जिस राशि में हो, जन्मकुण्डली बनाकर, ऊपर सिंह राशि रखकर बाकी सभी ग्रहों को अपनी-अपनी राशि में स्थापित कर देने से जन्मकुण्डली स्पष्ट हो जाती है।

पाठकों के लाभार्थ मैं आगे पृष्ठ ४४-४५ व ४६-४७ पर लग्न-सारणी दे रहा हूँ, जिससे वे स्पष्टता एवं सरलता से लग्न स्पष्ट कर सकें।

लग्न सारणी (२)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
मेष	५०	५७	५	१३	२०	२८	१६	४८	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९
०	९	४७	२५	५	४८	३५	१८	६	०	४८	४२	३९	४७	३९	४१
	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९
वृषभ	५४	३	१२	२१	३०	३९	४९	५८	७	१७	२६	३५	४५	५४	४
१	५९	५२	४९	४७	५२	५९	११	२४	४०	१	२५	४३	२४	५९	३७
	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
मिथुन	४६	५७	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३४	४५	५६	८	१९
२	४१	१६	५५	३७	४२	९	१९	५१	४७	४५	४५	४८	२२	०	९
	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०
कर्क	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२
३	१३	४४	१६	४९	२२	५६	२९	३	३८	११	४४	२०	५२	२५	२२
	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५
सिंह	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४
४	३४	५७	२७	३९	५९	१९	३९	५५	१२	२८	४४	५८	१२	२५	३८
	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१
कन्या	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७
५	३६	४०	४६	४७	५०	५९	५७	२०	५३	२१	८	१३	४	२०	२४

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	४७	५	५४	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३७	४६
०	४९	५७	९	२३	३९	१	२१	५८	३५	४६	२०	५८	३८	२२	९
	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृषभ	१४	२४	३३	४३	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	४	१५	२५	३६
१	१९	४	५३	४६	४२	४३	४५	५१	०	१४	३०	४९	१३	३९	९
	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	३०	४१	५२	४	१५	२०	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९
२	२०	३२	४९	५	२४	४४	६	२९	५३	१७	४५	१४	४२	११	४२
	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५
३	३०	३	३७	६	३७	८	३७	१७	३५	४	३०	५६	२२	३७	११
	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
सिंह	५५	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२०	३१
४	४९	०	१०	२५	३६	४९	५१	५३	५९		१२	१७	२२	२७	३२
	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	२८	३९	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	१९	३०	४१	५२	४
५	२८	३३	३७	४३	४८	५४	०	७	१९	१०	२६	३५	४९	२९	११

लग्न सारणी (२)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६
तुला	१५	२६	३७	३९	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३
६	२२	३४	४८	२	१६	३१	४६	५	२१	४१	६	२०	३३	३	२५
	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२
वृश्चिक	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	२८
७	२	३५	८	४०	१६	४९	५२	५६	३१	४	३८	११	४३	१६	४७
	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८
धनु	४०	५२	३	१४	२४	३६	४७	५८	८	१९	३०	४१	५२	२	१३
८	५१	०	७	१२	१५	१५	१३	८	४१	५१	१८	२३	४	४४	१९
	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३
मकर	५५	५	१४	२४	३३	४२	५२	१	१०	२०	२९	३८	४७	५६	५
९	२२	१	३६	१७	३५	५९	१९	३६	४९	१	८	१३	११	८	१
	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७
कुंभ	२०	२८	३६	४४	५२	०	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	९
१०	१७	२१	१३	२१	१८	१२	५३	५४	४२	२८	१२	५४	३४	१३	५०
	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०
मीन	८	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५१
११	५२	११	१७	४८	६	१९	४२	०	१८	४०	५४	१२	४३	४९	८

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	४	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५
६	४९	१३	३८	३	३०	५६	२५	४३	२३	५२	२३	५४	२५	५७	२९
	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९
७	१८	४९	१८	४७	१५	४३	७	३१	५४	३६	३६	५४	१३	३६	३९
	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	२३	३४	४४	५५	५	१५	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३५	४४
८	५१	२१	४७	१०	२९	४६	५९	९	१५	१७	१८	१४	६	५५	४१
	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५५	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	१३	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२
९	५१	३८	२२	२	३९	१४	४७	२	३८	५९	२०	३७	५१	३	५१
	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुंभ	१७	२४	३२	३९	४८	५५	२	९	१७	२४	३२	३९	४६	५४	१
१०	१७	५९	३२	५८	२८	३९	३३	५४	१९	४४	७	२४	५१	२	३२
	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	५८	५	१३	२०	२७	३५	४२	५०	५७	४	११	२०	२७	३५	४२
११	२८	५८	९	३१	५३	१६	४०	५	२७	११	३२	२०	२८	०	३४

भयात-भभोग साधन

चन्द्रमा की नाक्षत्रिक गति सम नहीं है, इसलिये वह किसी नक्षत्र की ६० घटी में से कभी कम तथा कभी अधिक नक्षत्र भी भोग लेता है। प्रत्येक पञ्चाग में आगे घटी व फल लिखे होते हैं, इन घटी पलों से तात्पर्य यह होता है कि अमुक दिन चन्द्रमा को लिखी हुई घट्यादि भोगनी हैं यानि ६० में से शेष घट्यादि इससे पूर्व हैं, यानि उन्हें वह भोग चुका है।

पूर्वोक्त उदाहरण लें तो संवत् २०२६ फाल्गुन शुक्ल २ चन्द्रवार की पंक्ति के सामने 'उ०' लिखा है, यानी उस दिन उत्तराभाद्रपद नक्षत्र चल रहा है और उसके आगे संख्या लिखी है—१६।३५ अर्थात् १६ घटी ३५ पल तक उस दिन चन्द्रमा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र पर रहेगा, इसके बाद अगले नक्षत्र रेवती में प्रवेश करेगा।

अब यदि ६० घटी में से १६ घटी ३५ पल बाकी निकालें तो शेष ४३ घटी २५ पल रहते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि फाल्गुन शुक्ल २ से पहले चन्द्रमा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र को ४३ घटी २५ पल तक भोग चुका है।

भयात

इष्टकाल में चन्द्रमा किसी नक्षत्र का जितना भाग जितने समय में भोग चुका होता है, उस काल को भयात कहते हैं।

भभोग

चन्द्रमा जिस दिन एक नक्षत्र विशेष में जितनी देर रहता है उसे नक्षत्र का भभोग काल कहते हैं।

उपर्युक्त उदाहरण में ४३ घटी २५ पल भयात तथा १६ घटी

३५ पल भभोग काल माना जायगा।

भयात-भभोग-साधन

भयात-भभोग-साधन में इष्टकाल, जन्म नक्षत्र तथा गत नक्षत्र की जरूरत पड़ती है।

नियम १.

यदि किसी दिन इष्टकाल से जन्म नक्षत्र के घटी पल कम हों तो वह जन्म नक्षत्र गत तथा उसके आगे का नक्षत्र वर्तमान नक्षत्र कहलाता है।

नियम २.

परन्तु यदि किसी दिन इष्टकाल से जन्म नक्षत्र के घटी पल अधिक हों तो उस जन्म नक्षत्र से पहले का नक्षत्र गत तथा वर्तमान नक्षत्र जन्म नक्षत्र कहलाता है।

पूर्व उदाहरण में (नियम २ के अनुसार) इष्टकाल २५।८ है और संवत् २०२६ के फाल्गुन शुक्ल २ को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र १६।३५ ही है, अतः इष्टकाल से जन्म नक्षत्र के घटी पल कम हैं, अतः यह उत्तराभाद्रपद नक्षत्र 'गत नक्षत्र' कहलायेगा तथा इसके आगे का नक्षत्र रेवती ही उस बालक का जन्म नक्षत्र कहलायेगा।

परन्तु यदि उस दिन किसी का इष्टकाल १२।१७ होता तो इष्टकाल के घटी पल उस दिन के नक्षत्र उत्तराभाद्रपद के घटी पलों से कम होते, फलस्वरूप इस उत्तराभाद्रपद से पहले का नक्षत्र पूर्वाभाद्रपद 'गत नक्षत्र' होता और तब यह उत्तराभाद्रपद नक्षत्र 'जन्म नक्षत्र' कहलाता, अस्तु।

नियम ३.

गत नक्षत्र के घटी पलों को ६० में से घटाकर दो स्थानों पर रखना चाहिए। एक स्थान पर इष्टकाल को जोड़ देने से भयात होता है तथा दूसरे स्थान पर वर्तमान जन्म नक्षत्र के घट्यादि जोड़ देने से भभोग होता है।

ऊपर का उदाहरण ही लें। उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का मान १६।३५ है तथा इष्टकाल २५।८ है। इष्टकाल के घटी पलों से उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के घटी पल कम हैं, अतः उत्तराभाद्रपद नक्षत्र ही 'गत नक्षत्र'

कहलायेगा।

नियम संख्या ३ के अनुसार इस गत नक्षत्र के घट्यादि १५।३५ को ६० में से घटाया तो दो स्थानों पर रखा।

६०	६०
—१६।३५	—१६।३५
४३।२५	४३।२५ (आगामी नक्षत्र
इष्टकाल जोड़ा २५। ८	१४।२४ रेवती के घटी पल जोड़े
०८।३३ भयात	५७।४९ भभोग

इष्टकाल जोड़ने से ६८।३३ हुए। ६० घटी से अधिक होने पर ६० का घट्यादि में भाग दिया, अतः शेष ८।३३ ही रहे, अतः ८।३३ भयात तथा ५७।४९ भभोग हुआ।

विशेष

यहाँ यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि भयात ६० घटी से अधिक नहीं होता, परन्तु भभोग ६७ घटी से अधिक होने पर ही उसमें ६० का भाग देना चाहिए, अर्थात् भभोग का मान ६७ घटी तक हो सकता है। यों भयात हमेशा भभोग से कम ही होता है।

अब ऊपर के उदाहरण में निम्न बातें स्पष्ट हुईं—

इष्टकाल २५।८
भयात ८।३३
भभोग ५७।४९
गत नक्षत्र—उत्तराफाल्गुनी
वर्तमान नक्षत्र—रेवती

वस्तुतः उस दिन २५।८ इष्टकाल पर जन्म लेने वाले बालक का नक्षत्र रेवती था और उसके ८ घटी ३३ पल बीत चुके थे।

प्रारम्भ में नक्षत्र ग्रह सारणी को देखें तो रेवती नक्षत्र का स्वामी बुध है, जिसके कुल दशा वर्ष १७ हैं। अतः बालक का जन्म बुध की महादशा में हुआ था। आगे पाठकों की सुविधा हेतु जन्म नक्षत्र द्वारा ग्रह दशा बोधक चक्र स्पष्ट कर रहा हूँ। पृष्ठ ५१ देखिए।

॥ जन्म नक्षत्र द्वारा ग्रह दशा बोधक चक्र ॥

सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श	बु	क	शु०	ग्रह
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	दशा वर्ष
कृ	रो	मृ	आ	पुन	पु	आश्ले	म	पू फा	नक्षत्र
उ फा	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये०	मू	पू षा	नक्षत्र
उ.षा	श्र	ध	शत	पू.भा	उ भा	रे	अ	भ	नक्षत्र

उपर्युक्त उदाहरण में रेवती नक्षत्र का स्वामी बुध स्पष्ट है, जिसके कुल दशा वर्ष १७ स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।

दशा साधन

भयात-भभोग स्पष्ट होने पर पलात्मक भयात तथा पलात्मक भभोग बना लेना चाहिए। फिर पलात्मक भयात को, जन्म नक्षत्र के अनुसार जिस ग्रह की दशा हो, उस ग्रह के दशावर्षों से गुणा करना चाहिए तथा इस प्रकार जो संख्या आवे उसमें पलात्मक भभोग का भाग देने से लब्धि वर्ष, शेष को १२ से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग देने से लब्धि मास, फिर शेष को ३० से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग देने से दिन, फिर शेष को ६० से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग देने से लब्धि घटी तथा फिर शेष को ६० से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग देने से लब्धि में पल आते हैं। ये जो वर्ष, मास, दिन, घटी तथा पल आयेंगे ये भुक्त दशा वर्षादि कहलायेंगे, अर्थात् इतने दशा वर्ष वह बालक जन्म से पूर्व भुगत चुका है तथा उस ग्रह की पूरी दशा में से भुक्त दशा वर्षादि शेष करने पर जो बाकी बचते हैं वे भोग्य दशा वर्षादि

कहलाते हैं, अर्थात् इतनेसमय की दशा बालक ने जन्म के पश्चात भोगी।

उदाहरण

भयात् ८।३३ भभोग ५७।४९

पलात्मक भयात ८×६०=४८०+३३=५१३

पलात्मक भभोग ५७×६०=३४२०+४९=३४६९

५१३ भयात

×१७ बुध के दशावर्षों से गुणा किया

पलात्मक भभोग का भाग

३४६९)८७२१(२ वर्ष
६९३८
१७८३ शेष
×१२
३४६९)२१३९६(६ मास
२०८१४
५८२ शेष
×३०
३४६९)१७४६०(५ दिन
१७३४५
११५ शेष
×६०
३४६९)६९००(१ घटी
३४६९
३४३१ शेष
×६०
३४६९)२०५८६०(५९ पल
१७३४५
३२४१०
३१२२१
३१८९ शेष त्याज्य

२ वर्ष ६ माह ५ दिन १ घटी ५९ पल बुध की दशा बालक जन्म के पूर्व भुगत चुका था तथा बुध के पूरे दशा वर्ष १७ में से घटित करने पर—

वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	
१७—	०—	०—	०—	०	बुध के दशा वर्ष
२—	६—	५—	१—	५९	भुक्त दशा
१४—	५—	२४—	५८—	१	शेष भोग्यदशा

अर्थात् बालक ने जन्म लेने के पश्चात् बुध की दशा १४ वर्ष ५ मास २४ दिन ५८ घटी तथा १ पल भुगती।

विंशोत्तरी दशा चक्र बनाने का नियम यह है कि पहले जिस ग्रह की भोग्यदशा जितनी है उसे स्थापित करें। फिर क्रम से सभी ग्रहों को एवं उनके दशावर्षों को स्थापित करें। बीच चक्र में एक खाना संवत् के लिए, दूसरा खाना दिनांक के लिए, तीसरा खाना प्रारम्भ-समाप्त की सूचना के लिए तथा अंतिम खाने में जन्म समय के राश्यादि सूर्य स्पष्ट होगा। जन्म स्पष्ट सूर्य में भोग्य वर्षादि जोड़कर अगले खाने में लिखना चाहिए तथा संवत् के खाने में वर्ष तथा दिनांक में वर्ष, मास, दिन आदि जोड़कर आगे लिखते रहना चाहिए। ऊपर के उदाहरण को विंशोत्तरी दशा चक्र के रूप में पृष्ठ ५४ पर स्पष्ट किया जा रहा है।

॥ विंशोत्तरी दशा चक्र ॥

बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
१४	७	२०	६	१०	७	१८	१६	१९	वर्ष
५	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
२४	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन
५८	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी
१	०	०	०	०	०	०	०	०	पल
२०२६	२०४०	२०४७	२०६७	२०७३	२०८३	२१००	२११८	२१४६	संवत्
९-२-१९७०	३-८-१९८४	३-८-१९९१	३-८-२०११	३-८-२०१७	३-८-२०२७	३-८-२०३४	३-८-२०५२	३-८-२०६८	दिनाङ्क
प्रा०	प्रा०	प्रा०	प्रा०	प्रा०	प्रा०	प्रा०	प्रा०	प्रा०	सूचक
१०	४	४	४	४	४	४	४	४	सूर्य स्पष्ट
२४	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	
४५	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	
४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	
|	|	|	|	|	|	|	|	|	दशाफल

चन्द्र स्पष्ट

पिछले अध्याय में ही यह बता दिया गया है कि भयात की घटियों को ६० से गुणा कर गुणनफल में भयात के पलों को जोड़ने से पलात्मक भयात होता है और इसी प्रकार भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर गुणनफल में भभोग के पलों को जोड़ने से पलात्मक भभोग होता है।

पलात्मक भयात और पलात्मक भभोग बता देने के पश्चात् चन्द्र-स्पष्ट करने का तरीका बता रहा हूँ। पलात्मक भयात को ६० से गुणा कर उसमें पलात्मक भभोग का भाग दें, फिर जो शेष बचे उसे पुनः ६० से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग दें और तीसरी बार फिर जो शेष बचे उसे पुनः ६० से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग दें तो जो लब्धि आयेगी वह वर्तमान नक्षत्र के भुक्त घटी, पलादि होगी।

तत्पश्चात् अश्विनी नक्षत्र से गत नक्षत्र तक गिनें, जो संख्या हो उसे ६० से गुणा कर भुक्त घटी आदि में जोड़ दें और इस योगफल को २ से गुणा कर गुणनफल में ९ से भाग देने से जो लब्धि आयेगी वह अंश, कला, विकला होगी। यदि अंशों की संख्या ३० से अधिक हो तो उसमें ३० का भाग देने से लब्धि राशि आयेगी। इस प्रकार राशि, अंश, कला, विकला से चन्द्र स्पष्ट होगा।

एक उदाहरण से मैं इस कथन को स्पष्ट करता हूँ :—

पूर्वोक्त उदाहरण में भयात ८।३३ तथा भभोग ५७।४९ था, गत नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी था, जो अश्विनी से गिनने पर २६ वाँ होता है, आइए, अब इसका चन्द्र स्पष्ट करें।

८।३३
×६०

४८०
+३३

५१३ पलात्मक भयात
५७।४९
×६०

३४२०
+४९

३४६९ पलात्मक भभोग
५१३ पलात्मक भयात
×६०

३४६९)३०७८०(८
३७७५२

३०२८
×६०

३४६९)१८१६८० (५२
१७३४५

८२३०
६९६८

१२९२
×६०

३४६९) ७७५२० (२२
६९६८

८१४०
६९३८

११०२ त्याज्य

वर्तमान नक्षत्र के भुक्त घट्यादि—८।५२।२२
गत नक्षत्र संख्या २६ (उत्तराफाल्गुनी)

×६०
१५६०
८।५२।२२
१५६०। ०। ०
१५६८।५२।२२
×२
९) ३१३७।४४।।४४(३४८
२७
४३
३६
७७
७२
५
×६०
३००
+४४
९) ३४४ (३८
२७
७४
७२
२
×६०
१२०
+४४
१६४
५७

९) १६४ (१८
९
───
७४
७२
───
२ त्याज्य

अंश	कला	विकला
३४८	३८	१८

चूँकि यहाँ अंश ३० से अधिक हैं, अतः केवल अंशों में ३० का भाग दिया—

३०) ३४८ (११ राशि
३०
───
४८
३०
───
१८ अंश

अतः ११।१८।३८।१८ चन्द्र स्पष्ट हुआ।

अर्थात् मीन राशि के १८ अंशों पर उस समय चन्द्र की गति थी।

मैं ज्योतिष के रहस्य को रहस्य नहीं रखना चाहता, पाठकों के सामने रहस्य स्पष्ट कर देना ही अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। कई वर्षों के परिश्रम के पश्चात् मैंने ऐसी सारणी बनाई है जिसके माध्यम से चन्द्र स्पष्ट ज्ञात होने पर चुटकियों में उस व्यक्ति की भुक्त-भोग्य दशा ज्ञात की जा सकती है। जहाँ भयात-भभोग से दशा निकालने में घण्टा-भर लग जाता है, वहाँ आगे की सारणी समझ लेने पर दो-तीन मिनट में ही भुक्त-भोग्य दशा निकाली जा सकती है।

विंशोत्तरी दशा-सारणी

सर्वप्रथम किसी भी व्यक्ति का चन्द्र स्पष्ट ज्ञात हो जाने पर निश्चित राशि अंश के विल्कुल समीप वाले परन्तु उससे कम राशि, अंश, कला के आगे अंकित भोग्यदशा वर्षादि ज्ञात करें। इसके लिये नीचे की सारणी देखें।

विंशोत्तरी दशा-सारणी

स्पष्ट चन्द्र राशि अंश कला	नक्षत्र	चरण	दशेश	भोग्यदशा वर्ष मास दिन
०— ०— ०	अ०	१	केतु	७ — ०— ०
०— ३—२०	"	२	"	५ — ३— ०
०— ६—४०	"	३	"	३ — ६— ०
०—१०— ०	"	४	"	१ — ९— ०
०—१३—२०	भ०	१	शुक्र	२० — ०— ०
०—१६—४०	"	२	"	१५ — ०— ०
०—२०— ०	"	३	"	१० — ०— ०
०—२३—२०	"	४	"	५ — ०— ०
०—२६—४०	कृ०	१	सूर्य	६ — ०— ०
१— ०— ०	"	२	"	४ — ६— ०
१— ३—२०	"	३	"	३ — ०— ०
१— ६—४०	"	४	"	१ — ६— ०
१—१०— ०	रो०	१	चन्द्र	१० — ०— ०
१—१३—२०	"	२	"	७ — ६— ०

स्पष्ट चन्द्र राशि अंश कला	नक्षत्र	चरण	दशेश	भोग्यदशा वर्ष मास दिन
१--१६--४०	रो०	३	चन्द्र	५ -- ० -- ०
१--२०-- ०	"	४	"	२ -- ६ -- ०
१--२३--२०	मृग०	१	मंगल	७ -- ० -- ०
१--२६--४०	"	२	"	५ -- ३ -- ०
२-- ०-- ०	"	३	"	३ -- ६ -- ०
२-- ३--२०	"	४	"	१ -- ९ -- ०
२-- ६--४०	आर्द्रा	१	राहु	१८ -- ० -- ०
२--१०-- ०	"	२	"	१३ -- ६ -- ०
२--१३--२०	"	३	"	९ -- ० -- ०
२--१६--४०	"	४	"	४ -- ६ -- ०
२--२०-- ०	पुन०	१	बृहस्पति	१६ -- ० -- ०
२--२३--२०	"	२	"	१२ -- ० -- ०
२--२६--४०	"	३	"	८ -- ० -- ०
३-- ०-- ०	"	४	"	४ -- ० -- ०
३-- ३--२०	पुण्य	१	शनि	१९ -- ० -- --
३-- ६--४०	"	२	"	१४ -- ३ -- ०
३-- १०--०	"	३	"	९ -- ६ -- ०
३--१३--२०	"	४	"	४ -- ९ -- ०
३--१६--४०	आश्लेषा	१	बुध	१७ -- ० -- ०
३--२०-- ०	"	२	"	१२ -- ९ -- ०
३--२३--२०	"	३	"	८ -- ६ -- ०
३--२६--४०	"	४	"	४ -- ३ -- ०
४-- ०-- ०	मघा	१	केतु	७ -- ० -- ०
४-- ३--२०	"	३	"	५ -- ३ -- ०
४-- ६--४०	"	३	"	३ -- ६ -- ०
४--१०-- ०	"	४	"	१ -- ९ -- ०
४--१३--२०	पू० फा०	१	शुक्र	२० -- ० -- ०
४--१६--४०	"	२	"	१५ -- ० -- ०

स्पष्ट चन्द्र राशि अंश कला	नक्षत्र	चरण	वर्षेश	भोग्यदशा वर्ष मास दिन
४--२०-- ०	पू० फा०	३	शुक्र	१० – ० – ०
४--२३--२०	"	४	"	५ – ० – ०
४--२६--४०	उ० फा०	१	सूर्य	६ -- ० – ०
५-- ०-- ०	"	२	"	४ – ६ – ०
५-- ३--२०	"	३	"	३ – ० – ०
५-- ६--४०	"	४	"	१ – ० – ०
५--१०-- ०	ह०	१	चन्द्र	१० – ० – ०
५--१३--२०	"	२	"	७ – ६ – ०
५--१६--४०	"	३	"	५ – ० – ०
५--२०-- ०	"	४	"	२ – ६ – ०
५--२३--२०	चित्रा	१	मंगल	७ -- ० – ०
५--२६--४०	"	२	"	५ – ३ – ०
६-- ०-- ०	"	३	"	३ – ६ – ०
६-- ३--२०	"	४	"	१ – ९ – ०
६-- ६--४०	स्वा०	१	राहु	१८ – ० – ०
६--१०-- ०	"	२	"	१३ – ६ – ०
६--१३--२०	"	३	"	९ – ० – ०
६--१६--४०	"	४	"	४ – ६ – ०
६--२०-- ०	वि०	१	बृहस्पति	१६ – ० – ०
६--२३--२०	"	२	"	१२ – ० – ०
६--२६--४०	"	३	"	८ – ० -- ०
७-- ०-- ०	"	४	"	४ – ० – ०
७-- ३--२०	अनु०	१	शनि	१९ – ० – ०
७-- ६--४०	"	२	"	१४ – ३ – ०
७--१०-- ०	"	३	"	९ – ६ – ०
७--१३--२०	"	४	"	४ – ९ – ०
७--१६--४०	ज्ये०	१	बुध	१७ – ० – ०
७--२०-- ०	"	२	"	१२ – ९ – ०

स्पष्ट चन्द्र राशि अंश कला	नक्षत्र	चरण	दशेश	भोग्यदशा वर्ष मास दिन
७–२३–२०	ज्ये०	३	बुध	८ – ६ – ०
७–२६–४०	"	४	"	४ – ३ – ०
८– ०– ०	मू०	१	केतु	७ – ० – ०
८– ३–२०	"	२	"	५ – ३ – ०
८– ६–४०	"	३	"	३ – ६ – ०
८–१०– ०	"	४	"	१ – ९ – ०
८–१३–२०	पू० षा०	१	शुक्र	२० – ० – ०
८–१६–४०	"	२	"	१५ – ० – ०
८–२०– ०	"	३	"	१० – ० – ०
८–२३–२०	"	४	"	५ – ० – ०
८–२६–४०	उ० षा०	१	सूर्य	६ – ० – ०
९– ०– ०	"	२	"	४ – ६ – ०
९– ३–२०	"	३	"	३ – ० – ०
९– ६–४०	"	४	"	१ – ६ – ०
९–१०– ०	श्र०	१	चन्द्र	१० – ० – ०
९–१३–२०	"	२	"	७ – ६ – ०
९–१६–४०	"	३	"	५ – ० – ०
९–२०– ०	"	४	"	२ – ६ – ०
९–२३–२०	ध०	१	मंगल	७ – ० – ०
९–२६–४०	"	२	"	५ – ३ – ०
१०– ०– ०	"	३	"	३ – ६ – ०
१०– ३–२०	"	४	"	१ – ९ – ०
१०– ६–४०	शत०	१	राहु	१८ – ० – ०
१०–१०– ०	"	२	"	१३ – ६ – ०
१०–१३–२०	"	३	"	९ – ० – ०
१०–१६–४०	"	४	"	४ – ६ – ०
१०–२०– ०	पू० भा०	१	बृहस्पति	१६ – ० – ०
१०–२३–२०	"	२	"	१२ – ० – ०

स्पष्ट चन्द्र राशि अंश कला	नक्षत्र	चरण	दशेश	भोग्यदशा व मास दिन
१०--२६--४०	पू० भा०	३	बृहस्पति	८ -- ० -- ०
११-- ०-- ०	"	४	"	४ -- ० -- ०
११-- ३--२०	उ० भा०	१	शनि	१९ -- ० -- ०
११-- ६--४०	"	२	"	१४ -- ३ -- ०
११--१०-- ०	"	३	"	९ -- ६ -- ०
११--१३--२०	"	४	"	४ -- ९ -- ०
११--१६--४०	रे०	१	बुध	१७ -- ० -- ०
११--२०-- ०	"	२	"	१२ -- ९ -- ०
११--२३--२०	"	३	"	८ -- ६ -- ०
११--२६--४०	"	४	"	४ -- ३ -- ०

अंश-सारिणी

अंश	केतु व-मा-दि	शुक्र व-मा-दि	सूर्य व-मा-दि	चन्द्र व-मा-दि
१	०-६- ९	१-६-०	०- ५-१२	०-९-०
२	१-०-१८	३-०-०	०-१०-२४	१-६-०
३	१-६-२७	४-६-०	१- ४- ६	२-३-०

अंश	मंगल व-मा-दि	राहु व-मा-दि	बृहस्पति व-मा-दि	शनि व-मा-दि	बुध व-मा-दि
१	०-६- ९	१-४- ६	१-२-१२	१- ५-३	१-३ -९
२	१-०-१८	२-८-१२	२-४-२४	२-१०-६	२-६-१८
३	१-६-२७	४-०-१८	३-७- ६	४-३- ९	३-९-२७

कला

कलाएं	केतु व-मा-दि - घ	शुक्र व-मा-दि - घ	सूर्य व-मा-दि - घ	चन्द्र व-मा-दि - घ
१	०-०- ३- ९	०-०- ९- ०	०-०- २-४२	०-०- ४-३०
२	०-०- ६-१८	०-०-१८- ०	०-०- ५-२४	०-०- ९- ०
३	०-०- ९-२७	०-०-२७- ०	०-०- ८- ६	०-०-१३-३०
४	०-०-१२-३६	०-१- ६- ०	०-०-१०-४८	०-०-१८- ०
५	०-०-१५-४५	०-१-१५- ०	०-०-१३-३०	०-०-२२-३०
६	०-०-१८-५४	०-१-२४- ०	०-०-१६-१२	०-०-२७- ०
७	०-०-२२- ३	०-२- ३- ०	०-०-१८-५४	०-१- १-३०
८	०-०-२५-१२	०-२-१२- ०	०-०-२१-३६	०-१- ६- ०
९	०-०-२८-२१	०-२-२१- ०	०-०-२४-१८	०-१-१०-३०
१०	०-१- १-३०	०-३- ०- ०	०-०-२७- ०	०-१-१५- ०
११	०-१- ४-३९	०-३- ९- ०	०-०-२९-४२	०-१-१९-३०
१२	०-१- ७-४८	०-३-१८- ०	०-१- २-२४	०-१-२४- ०
१३	०-१-१०-५७	०-३-२७- ०	०-१- ५- ६	०-१-२८-३०
१४	०-१-१४- ६	०-४- ६- ०	०-१- ७-४८	०-२- ३- ०
१५	०-१-१७-१५	०-४-१५- ०	०-१-१०-३०	०-२- ७-३०
१६	०-१-२०-२४	०-४-२४- ०	०-१-१३-१२	०-२-१२- ०
१७	०-१-२३-३३	०-५- ३- ०	०-१-१५-५४	०-२-१६-३०
१८	०-१-२६-४२	०-५-१२- ०	०-१-१८-३६	०-२-२१- ०
१९	०-१-१९-५१	०-५-२१- ०	०-१-२१-१८	०-२-२५-३०
२०	०-२- ३- ०	०-६- ०- ०	०-१-२४- ०	०-३- ०- ०
२१	०-२- ६- ९	०-६- ९- ०	०-१-२६-४२	०-३- ४-३०
२२	०-२- ९-१८	०-६-१८- ०	०-१-२९-२४	०-३- ९- ०
२३	०-२-१२-२७	०-६-२७- ०	०-२- २- ६	०-३-१३-३०
२४	०-२-१५-३६	०-७- ६- ०	०-२- ४-४८	०-३-१८- ०
२५	०-२-१८-४५	०-७-१५- ०	०-२- ७-३०	०-३-२२-३०
२६	०-२-२१-५४	०-७-२४- ०	०-२-१०-१२	०-३-२७- ०
२७	०-२-२५- ३	०-८- ३- ०	०-२-१२-५४	०-४- १-३०
२८	०-२-२८-१२	०-८-१२- ०	०-२-१५-३६	०-४- ६- ०
२९	०-३- १-२१	९-८-२१- ०	०-२-१८-१८	०-४-१०-३०
३०	०-३- ४-३०	०-९- ०- ०	०-२-२१- ०	०-४-१५- ०

सारणी

मंगल व-मा- दि- घ	राहु व-मा- दि- घ	बृहस्पति व-मा- दि- घ	शनि व-मा- दि- घ	बुध व-मा- दि- घ
०-०- ३- ९	०-०- ८- ६	०-०- ७-१२	०-०- ८-३३	०-०- ७-३९
०-० ६-१८	०-०-१६-१२	०-०-१४-२४	०-०-१७- ६	०-०-१५-१८
०-०- ९-२७	०-०-२४-१८	०-०-२१-३६	०-०-२५-३९	०-०-२२-५७
०-०-१२-३६	०-१- २-२४	०-०-२८-४८	०-१- ४-१२	०-१- ०-३६
०-०-१५-४५	०-१-१०-३०	०-१- ६- ०	०-१-१२-४५	०-१- ८-१५
०-०-१८-५४	०-१-१८-३६	०-१-१३-१२	०-१-२१-१८	०-१-१५-५४
०-०-२२- ३	०-१-२६-४२	०-१-२०-२४	०-१-२९-५१	०-१-२३-३३
०-०-२५-१२	०-२- ४-४८	०-१-२७-३६	०-२- ८-२४	०-२- १-१२
०-०-२८-२१	०-२-१२-५४	०-२- ४-४८	०-२-१६-५७	०-२- ८-५१
०-१- १-३०	०-२-२१- ०	०-२-१२- ०	०-२-२५-३०	०-२-१६-३०
०-१- ४-३९	०-२-२९- ६	०-२-१९-१२	०-३- ४- ३	०-२-२४- ९
०-१- ७-४८	०-३- ७-१२	०-२-२६-२४	०-३-१२-३६	०-३- १-४८
०-१-१०-५७	०-३-१५-१८	०-३- ३-३६	०-३-२१- ९	०-३- ९-२७
०-१-१४- ६	०-३-२३-२४	०-३-१०-४८	०-३-२९-४२	०-३-१७- ६
०-१-१७-१५	०-४- १-३०	०-३-१८- ०	०-४- ८-१५	०-३-२४-४५
०-१-२०-२४	०-४- ९-३६	०-३-२५-१२	५-४-१६-४८	०-४- २-२४
०-१-२३-३३	०-४-१७-४२	०-४- २-२४	०-४-२५-२१	०-४-१०- ३
०-१-२६-४२	०-४-२५-४८	०-४- ९-३६	०-५- ३-५४	०-४-१७-४२
०-१-२९-५१	०-५- ३-५४	०-४-१६-४८	०-५-१२-२७	० ४-२५-२१
०-२- ३- ०	०-५-१२- ०	०-४-२४- ०	०-५-२१- ०	०-५- ३- ०
०-२- ६- ९	०-५-२०- ६	०-५- १-१२	०-५-२९-३३	०-५-१०-३९
०-२- ९-१८	०-५-२८-१२	०-५- ८-२४	०-६- ८- ६	०-५-१८-१८
०-२-१२-२७	०-६- ६-१८	०-५-१५-३६	०-६-१६-३९	०-५-२५-५७
०-२-१५-३६	०-६-१४-२४	०-५-२२-४८	०-६-२५-१२	०-६- ३-३६
०-२-१८ ४५	०-६-२२-३०	०-६- ०- ०	०-७- ३-४५	०-६-११-१५
०-२-२१-५४	०-७- ०-३६	०-६- ७-१२	०-७-१२-१८	०-६-१८-५४
०-२-२५- ३	०-७- ८-४२	०-६-१४-२४	०-६-२०-५१	०-६-२६-३३
०-२-२८-१२	०-७-१६-४८	०-६-२१-३६	०-७-२९-२४	०-७- ४-१२
०-३- १-२१	०-७-२४-५४	०-६-२८-४८	०-८- ७-५७	०-७-११-५१
०-३- ४-३०	०-८- ३- ०	०-७- ६- ०	०-८-१६-३०	०-७-१९-३०

कलाएं	केतु व-मा-दि-घ	शुक्र व-मा-दि-घ	सूर्य व-मा-दि-घ	चन्द्र व-मा-दि-घ
३१	०-३- ७-३९	०- ९- ९-०	०-२ २३-४२	०-४-१९-३०
३२	०-३-१०-४८	०- ९-१८-०	०-२-२६-२४	०-४-२४- ०
३३	०-३-१३-५७	०- ९-२७-०	०-२-२९- ६	०-४-२८-३०
३४	०-३-१७- ६	०-१०- ६-०	०-३- १-४८	०-५- ३- ०
३५	०-३-२०-१५	०-१०-१५-०	०-३- ४-३०	०-५- ७-३०
३६	०-३-२३-२४	०-१०-२४-०	०-३- ७-१२	०-५-१२- ०
३७	०-३-२६-३३	०-११- ३-०	०-३- ९-५४	०-५-१६-३०
३८	०-३-२९-४२	०-११-१२-०	०-३-१२-३६	०-५-२१- ०
३९	०-४- २-५१	०-११-२१-०	०-३-१५-१८	०-५-२५-३०
४०	०-४- ६- ०	१- ०- ०-०	०-३-१८- ०	०-६- ०- ०
४१	०-४- ९- ९	१- ०- ९-०	०-३-२०-४२	०-६- ४-३०
४२	०-४-१२-१८	१- ०-१८-०	०-३-२३-२४	०-६- ९- ०
४३	०-४-१५-२७	१- ०-२७-०	०-३-२६- ६	०-६-१३-३०
४४	०-४-१८-३६	१- १- ६-०	०-३-२८-४८	०-६-१८- ०
४५	०-४-२१-४५	१- १-१५-०	०-४- १-३०	०-६-२२-३०
४६	०-४-२४-५४	१-१-२४- ०	०-४- ४-१२	०-६-२७- ०
४७	०-४-२८- ३	१-२- ३- ०	०-४- ६-५४	०-७- १-३०
४८	०-५- १-१२	१-२-१२- ०	०-४- ९-३६	०-७- ६- ०
४९	०-५- ४-२१	१-२-२१- ०	०-४-१२-१८	०-७-१०-३०
५०	०-५- ७-३०	१-३- ०- ०	०-४-१५- ०	०-७-१५- ०
५१	०-५-१०-३९	१-३- ९- ०	०-४-१७-४२	०-७-१९-३०
५२	०-५-१३-४८	१-३-१८- ०	०-४-२०-२४	०-७-२४- ०
५३	०-५-१६-५७	१-३-२७- ०	० ४-२३- ६	०-७-२८-३०
५४	०-५-२०- ६	१-४- ६- ०	०-४-२५-४८	०-८- ३- ०
५५	०-५-२३-१५	१-४-१५- ०	०-४-२८-३०	०-८- ७-३०
५६	०-५-२६-२४	१-४-२४- ०	०-५- १-१२	०-८-१२- ०
५७	०-५-२९-३३	१-५- ३- ०	०-५- ३-५४	०-८-१६-३०
५८	०-६- २-४२	१-५-१२- ०	०-५- ६-३६	०-८-२१- ०
५९	०-६- ५-५१	१-५-२१- ०	०-५- ९-१८	०-८-२५-३०
६०	०-६- ९ ०	१-६- ०- ०	०-५-१२- ०	०-९- ०- ०

मंगल व-मा-दि-घ	राहु व-मा-दि-घ	बृहस्पति व-मा-दि-घ	शनि व-मा-दि-घ	बुध व-मा-दि-घ
०-३-७-३९	०-८-११-६	०-७-१३-१२	०-८-२५-३	०-७-२७-९
०-३-१०-४८	०-८-१९-१२	०-७-२०-२४	०-९-३-३६	०-८-४-४८
०-३-१३-५७	०-८-२७-१८	०-७-२७-३६	०-९-१२-९	०-८-१२-२७
०-३-१७-६	०-९-५-२४	०-८-४-४८	०-९-२०-४२	०-८-२०-६
०-३-२०-१५	०-९-१३-३०	०-८-१२-०	०-९-२९-१५	०-८-२७-४५
०-३-२३-२४	०-९-२१-३६	०-८-१९-१२	०-१०-७-४८	०-९-५-२४
०-३-२६-३३	०-९-२९-४२	०-८-२६-२४	०-१०-१६-२१	०-९-१३-३
०-३-२९-४२	०-१०-७-४८	०-९-३-३६	०-१०-२४-५४	०-९-२०-४२
०-४-२-५१	०-१०-१५-५४	०-९-१०-४८	०-११-३-२७	०-९-२८-२१
०-४-६-०	०-१०-२४-०	०-९-१८-०	०-११-१२-०	०-१०-६-०
०-४-९-९	०-११-२-६	०-९-२५-१२	०-११-२०-३३	०-१०-१३-३९
०-४-१२-१८	०-११-१०-१२	०-१०-२-२४	०-११-२९-६	०-१०-२१-१८
०-४-१५-२७	०-११-१८-१८	०-१०-९-३६	१-०-७-३९	०-१०-२८-५७
०-४-१८-३६	०-११-२६-२४	०-१०-१६-४८	१-०-१६-१२	०-११-६-३६
०-४-२१-४५	१-०-४-३०	०-१०-२४-०	१-०-२४-४५	०-११-१४-१५
०-४-२४-५४	१-०-१२-३६	०-११-१-१२	१-१-३-१८	०-११-२१-५४
०-४-२८-३	१-०-२०-४२	०-११-८-२४	१-१-११-५१	०-११-२९-३३
०-५-१-१२	१-०-२८-४८	०-११-१५-३६	१-१-२०-२४	१-०-७-१२
०-५-४-२१	१-१-६-५४	०-११-२२-४८	१-१-२८-५७	१-०-१४-५१
०-५-७-३०	१-१-१५-०	१-०-०-०	१-२-७-३०	१-०-२२-३०
०-५-१०-३९	१-१-२३-६	१-०-७-१२	१-२-१६-३	१-१-० ९
०-५-१३-४८	१-२-१-१२	१-०-१४-२४	१-२-२४-३६	१-१-७-४८
०-५-१६-५७	१-२-९-१८	१-०-२१-३६	१-३-३-९	१-१-१५-२७
०-५-२०-६	१-२-१७-२४	१-०-२८-४८	१-३-११-४२	१-१-२३-६
०-५-२३-१५	१-२-२५-३०	१-१-६-०	१-३-२०-१५	१-२-०-४५
०-५-२६-२४	१-३-३-३६	१-१-१३-१२	१-३-२८-४८	१-२-८-२४
०-५-२९-३३	१-३-११-४२	१-१-२०-२४	१-४-७-२१	१-२-१६-३
०-६-२-४२	१-३-१९-४८	१-१-२७-३६	१-४-१५-५४	१-२-२३-४२
०-६-५-५१	१-३-२७-५४	१-२-४-४८	१-४-२४-२७	१-३-१-२१
०-६-९-०	१-४-६-०	१-२-१२-०	१-५-३-०	१-३-९-०

विकला

विकलाएँ	केतु दि- घ- प	शुक्र दि- घ- प	सूर्य दि- घ- प	चन्द्र दि- घ- प
१	०- ३- ९	०- ९-०	०- २-४२	०- ४-३०
२	०- ६-१८	०-१८-०	०- ५-२४	०- ९- ०
३	०- ९-२७	०-२७-०	०- ८- ६	०-१३-३०
४	०-१२-३६	०-३६-०	०-१०-४८	०-१८- ०
५	०-१५-४५	०-४५-०	०-१३-३०	०-२२-३०
६	०-१८-५४	०-५४-०	०-१६-१२	०-२७- ०
७	०-२२- ३	१- ३-०	०-१८-५४	०-३१-३०
८	०-२५-१२	१-१२-०	०-२१-३६	०-३६- ०
९	०-२८-२१	१-२१-०	०-२४-१८	०-४०-३०
१०	०-३१-३०	१-३०-०	०-२७- ०	०-४५- ०
११	०-३४-३९	१-३९-०	०-२९-४२	०-४९-३०
१२	०-३७-४८	१-४८-०	०-३२-२४	०-५४- ०
१३	०-४०-५७	१-५७-०	०-३५- ६	०-५८-३०
१४	०-४४- ६	२- ६-०	०-३७-४८	१- ३- ०
१५	०-४७-१५	२-१५-०	०-४०-३०	१- ७-३०
१६	०-५०-२४	२-२४-०	०-४३-१२	१-१२- ०
१७	०-५३-३३	२-३३-०	०-४५-५४	१-१६-३०
१८	०-५६-४२	२-४२-०	०-४८-३६	१-२१- ०
१९	०-५९-५१	२-५१-०	०-५१-१८	१-२५-३०
२०	१- ३- ०	३- ०-०	०-५४- ०	१-३०- ०
२१	१- ६- ९	३- ९-०	०-५६-४२	१-३४-३०
२२	१- ९-१८	३-१८-०	०-५९-२४	१-३९- ०
२३	१-१२-२७	३-२७-०	१- २- ६	१-४३-३०
२४	१-१५-३६	३-३६-०	१- ४-४८	१-४८- ०
२५	१-१८-४५	३-४५-०	१- ७-३०	१-५२-३०
२६	१-२१-५४	३-५४-०	१-१०-१२	१-५७- ०
२७	१-२५- ३	४- ३-०	१-१२-५४	२- १-३०
२८	१-२८-१२	४-१२-०	१-१५-३६	२- ६- ०
२९	१-३१-२१	४-२१-०	१-१८-१८	२-१०-३०
३०	१-३४-३०	४-३०-०	१-२१- ०	२-१५- ०

सारणी

मंगल दि- घ- प	राहु दि- घ- प	बृहस्पति दि- घ- प	शनि दि -घ- प	बुध दि- घ- प
०- ३- ९	०- ८- ६	०- ७-१२	०- ८-३३	०- ७-३९
०- ६-१८	०-१६-१२	०-१४-२४	०-१७- ६	०-१५-१८
०- ९-२७	०-२४-१८	०-२१-३६	०-२५-३९	०-२२-५७
०-१२-३६	०-३२-२४	०-२८-४८	०-३४-१२	०-३०-३६
०-१५-४५	०-४०-३०	०-३६- ०	०-४२-४५	०-३८-१५
०-१८-५४	०-४८-३६	०-४३-१२	०-५१-१८	०-४५-५४
०-२२- ३	०-५६-४२	०-५०-२४	०-५९-५१	०-५३-३३
०-२५-१२	१- ४-४८	०-५७-३६	१- ८-२४	१- १-१२
०-२८-२१	१-१२-५४	१- ४-४८	१-१६-५७	१- ८-५१
०-३१-३०	१-२१- ०	१-१२- ०	१-२५-३०	१-१६-३०
०-३४-३९	१-२९- ६	१-१९-१२	१-३४- ३	१-२४- ९
०-३७-४८	१-३७-१२	१-२६-२४	१-४२-३६	१-३१-४८
०-४०-५७	१-४५-१८	१-३३-३६	१-५१- ९	१-३९-२७
०-४४- ६	१-५३-२४	१-४०-४८	१-५९-४२	१-४७- ६
०-४७-१५	२- १-३०	१-४८- ०	२- ८-१५	१-५४-४५
०-५०-२४	२- ९-३६	१-५५-१२	२-१६-४८	२- २-२४
०-५३-३३	२-१७-४२	२- २-२४	२-२५-२१	२-१०- ३
०-५६-४२	२-२५-४८	२- ९-३६	२-३३-५४	२-१७-४२
०-५९-५१	२-३३-५४	२-१६-४८	२-४२-२७	२-२५-२१
१- ३- ०	२-४२- ०	२-२४- ०	२-५१- ०	२-३३- ०
१- ६- ९	२-५०- ६	२-३१-१२	२-५९-३३	२-४०-३९
१- ९-१८	२-५८-१२	२-३८-२४	३- ८- ६	२-४८-१८
१-१२-२७	३- ६-१८	२-४५-३६	३-१६-३९	२-५५-५७
१-१५-३६	३-१४-२४	२-५२-४८	३-२५-१२	३- ३-३६
१-१८-४५	३-२२-३०	३- ०- ०	३-३३-४५	३-११-१५
१-२१-५४	३-३०-३६	३- ७-१२	३-४२-१८	३-१८-५४
१-२५- ३	३-३८-४२	३-१४-२४	३-५०-५१	३-२६-३३
१-२८-१२	३-४६-४८	३-२१-३६	३-५९-२४	३-३४-१२
१-३१-२१	३-५४-५४	३-२८-४८	४- ७-५७	३-४१-५१
१-३४-३०	४- ३- ०	३-३६- ०	४-१६-३०	३-४९-३०

विकलाएँ	केतु दि-घ-प	शुक्र दि-घ-प	सूर्य दि-घ-प	चन्द्र दि-घ-प
३१	१ ३७-३९	४-३९- ०	१-२३-४२	२-१९-३०
३२	१-४०-४८	४-४८- ०	१-२६-२४	२-२४- ०
३३	१-४३-५७	४-५७- ०	१-२९- ६	२-२८-३०
३४	१-४७- ६	५- ६- ०	१-३१-४८	२-३३- ०
३५	१-५०-१५	५-१५- ०	१-३४-३०	२-३७-३०
३६	१-५३-२४	५-२४- ०	१-३७-१२	२-४२- ०
३७	१-५६-३३	५-३३- ०	१-३९-५४	२-४६-३०
३८	१-५९-४२	५-४२- ०	१-४२-३६	२-५१- ०
३९	२- २-५१	५-५१- ०	१-४५-१८	२-५५-३०
४०	२- ६- ०	६- ०- ०	१-४८- ०	३- ०- ०
४१	२- ९- ९	६- ९- ०	१-५०-४२	३- ४-३०
४२	२-१२-१८	६-१८- ०	१-५३-२४	३- ९- ०
४३	२-१५-२७	६-२७- ०	१-५६- ६	३-१३-३०
४४	२-१८-३६	६-३६- ०	१-५८-४८	३-१८- ०
४५	२-२१-४५	६-४५ ०	२- १-३०	३-२२-३०
४६	२-२४-५४	६-५४- ०	२- ४-१२	३-२७- ०
४७	२-२८- ३	७- ३- ०	२- ६-५४	३-३१-३०
४८	२-३१-१२	७-१२- ०	२- ९-३६	३-३६- ०
४९	२-३४-२१	७-२१- ०	२-१२-१८	३-४०-३०
५०	२-३७-३०	७-३०- ०	२-१५- ०	३-४५- ०
५१	२-४० ४९	७-३९- ०	२-१७-४२	३-४९-३०
५२	२ ४३-४८	७-४८- ०	२-२०-२४	३-५४- ०
५३	२-४६-५७	७-५७- ०	२-२३- ६	३-५८-३०
५४	२-५०- ६	८- ६- ०	२-२५-४८	४- ३- ०
५५	२-५३-१५	८-१५- ०	२-२८-३०	४- ७-३०
५६	२-५६-२४	८-२४- ०	२-३१-१२	४-१२- ०
५७	२-५९-३३	८-३३- ०	२-३३-५४	४-१६-३०
५८	३- २-४२	८-४२- ०	२-३६-३६	४-२१- ०
५९	३- ५-५१	८-५१- ०	२-३९-१८	४-२५-३०
६०	३- ९- ०	९- ०- ०	२-४२- ०	४-३०- ०

मंगल दि- घ- प	राहु दि- घ- प	बृहस्पति दि- घ- प	शनि दि- घ- प	बुध दि- घ- प
१-३७-३६	४-११- ६	३-४३-१२	४-२५- ३	३-५७- ९
१-४०-४८	४-१९-१२	३-५०-२४	४-३३-३६	४- ४-४८
१-४३-५७	४-२७-१८	३-५७-३६	४-४२- ९	४-१२-२७
१-४७- ६	४-३५-२४	४- ४-४८	४-५०-४२	४-२०- ६
१-५०-१५	४-४३-३०	४-१२- ०	४-५९-१५	४-२७-४५
१-५३-२४	४-५१-३६	४-१९-१२	५- ७-४८	४-३५-२४
१-५६-३३	४-५९-४२	४-२६-२४	५-१६-२१	४-४३- ३
१-५९-४२	५- ७-४८	४-३३-३६	५-२४-५४	४-५०-४२
२- २-५१	५-१५-५४	४-४०-४८	५-३३-२७	४-५८-२१
२- ६- ०	५-२४- ०	४-४८- ०	५-४२- ०	५- ६- ०
२- ९- ९	५-३२- ६	४-५५-१२	५-५०-३३	५-१३-३९
२-१२-१८	५-४०-१२	५- २-२४	५-५९- ६	५-२१-१८
२-१५-२७	५-४८-१८	५- ९-३६	६- ७-३९	५-२८-५७
२-१८-३६	५-५६-२४	५-१६-४८	६-१६-१२	५-३६-३६
२-२१-४५	६- ४-३०	५-२४- ०	६-२४-४५	५-४४-१५
२-२४-५४	६-१२-३६	५-३१-१२	६-३३-१८	५-५१-५४
२-२८- ३	६-२०-४२	५-३८-२४	६-४१-५१	५-५९-३३
२-३१-१२	६-२८-४८	५-४५-३६	६-५०-२४	६- ७-१२
२-३४-२१	६-३६-५४	५-५२-४८	६-५८-५७	६-१४-५१
२-३७-३०	६-४५- ०	६- ०- ०	७- ७-३०	६-२२-३०
२-४०-३९	६-५३- ६	६- ७-१२	७-१६- ३	६-३०- ९
२-४३-४८	७- १-१२	६-१४-२४	७-२४-३६	६-३७-४८
२-४६-५७	७- ९-१८	६-२१-३६	७-३३- ९	६-४५-२७
२-५०- ६	७-१७-२४	६-२८-४८	७-४१-४२	६-५३- ६
२-५३-१५	७-२५-३०	६-३६- ०	७-५०-१५	७- ०-४५
२-५६-२४	७-३३-३६	६-४३-१२	७-५८-४८	७- ८-२४
२-५९-३३	७-४१-४२	६-५०-२४	८- ७-२१	७-१६- ३
३- २-४२	७-४९-४८	६-५७-३६	८-१५-५४	७-२३-४२
३- ५-५१	७-५७-५४	७- ४-४८	८-२४-२७	७-३१-२१
३- ९- ०	८- ६- ०	७-१२- ०	८-३३- ०	७-३९- ०

ये उपर्युक्त सारणियाँ पाठकों, ज्योतिष-प्रेमियों एवं विद्वज्जनों सभी के लिए उपयोगी हैं और इन्हें मैंने वर्षों के परिश्रम से तैयार किया है। इनके माध्यम से किसी भी व्यक्ति की विंशोत्तरी दशा के भुक्त-भोग्य वर्ष कुछ ही क्षणों में स्पष्ट किये जा सकते हैं। चन्द्र स्पष्ट करने की विधि पीछे ही दी जा चुकी है। चन्द्र स्पष्ट होने के पश्चात् इन सारणियों का प्रयोग अत्यन्त सुगम है।

उदाहरणार्थ एक व्यक्ति का चन्द्र स्पष्ट ७।५।३८।० है और इस व्यक्ति के विंशोत्तरी दशा के भुक्त-भोग्य वर्ष ज्ञात करने हैं तो सर्वप्रथम "विंशोत्तरी दशा सारणी" (१) देखें और ज्ञात करें कि उसमें चन्द्र स्पष्ट खण्ड में ७।५।३८।० कहाँ हैं। यदि ये अंक न मिलें तो इससे निकटतम पर इससे कम संख्या वाले अंक लें। सारणी देखने पर इस चन्द्र स्पष्ट से कम अंक ७।३।२० हैं तथा उसके आगे (अनु० १) लिखा है, दशेश शनि है तथा भोग्यदशा में १९ वर्ष अंकित हैं।

इससे यह सिद्ध हुआ कि जिस व्यक्ति का यह चन्द्र स्पष्ट है, जन्म के समय उस व्यक्ति का चन्द्रमा अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में चल रहा था तथा विंशोत्तरी पद्धति से उसके जन्म के समय शनि की महादशा चल रही थी।

अब उपरोक्त चन्द्र स्पष्ट ७।५।३८।० है तथा सारणी संख्या १ में निकटतम चन्द्र स्पष्ट ७।३।२०।० है, अतः दोनों को ऋण किया—

७	५	३८	०
७	३	२०	०
०	२	१८	०

अतः शेष रहे २ अंश १८ कला।

अब अंश सारणी देखें तो २ अंश के सामने शनि के खण्ड में जो वर्ष अंकित हैं, उन्हें एक ओर लिख दें। अंश सारणी में २ अंश के सामने शनि के खण्ड में २ वर्ष १० मास ६ दिन लिखे हैं, इन्हें एक ओर लिख दिया, फिर १८ कला का मान, कला सारणी में शनि के खण्ड में देखें, जो वर्षादि हों, वे अंश-वर्षादि में जोड़ दें। कला सारणी में १८ कला के सामने शनि खंड में ० वर्ष ५ माह ३ दिन ५४ घड़ी अंकित है, इसमें अंश का वर्षादि तथा कलाओं का वर्षादि मान जोड़ लिया।

२	१०	६	०
०	५	३	५४
३	३	६	५४

इस संयुक्त मान को १६ वर्ष में से घटा दें (विंशोत्तरी दशा सारणी १ में से जो चंन्द्र स्पष्ट लिया था, उसके सामने भोग्य दशा में १६ वर्ष अंकित हैं)

१६	०	०	०	में से
३	३	६	५४	घटाया,
१५	८	२०	६	तो शेष रहे

अत: यह स्पष्ट हुआ कि उस व्यक्ति को जन्म के समय शनि की १५ वर्ष ८ मास २० दिन ६ घटी दशा भोगनी शेष थी।

एक और उदाहरण दूं। किसी व्यक्ति का चन्द्र स्पष्ट ७।५।२१।३६ है। सर्वप्रथम विंशोत्तरी दशा सारणी १ में से इससे कम चन्द्र स्पष्ट के वर्ष लिये चन्द्र स्पष्ट ७।३।२०।० में दशेश शनि के १६ वर्ष हैं।

पूर्ण चन्द्र स्पष्ट ७।५।२१।३६ में से सारणी का चन्द्र स्पष्ट ७।३।२०।० घटाया,

७	५	२१	३६	
७	३	२०	०	
०	२	१	३६	तो शेष रहा

फिर २ अंश के वर्षादि (अंश सारणी से) १ कला के वर्षादि (कला सारणी से) तथा ३६ विकला के वर्षादि (विकला सारणी से) लेकर योग किया और उन्नीस वर्ष घटाये तो यूं दशावर्ष स्पष्ट हुए—

२	१०	६	०	०	(२ अंश का मान)
०	०	८	३३	०	(१ कला का मान)
०	०	५	३३	२७	(३६ विकला के मान)
२	१०	२०	०६	२७	

१६	०	०	०	०	
२	१०	२०	६	२७	
१६	१	६	५३	३३	शनि की इतनी दशा उस व्यक्ति को

जन्म के समय भोगनी शेष थी।

अन्तर्दशा

पिछले अध्याय में महादशा के भुक्त वर्ष तथा भोग्य वर्ष निकालने की विधि स्पष्ट की जा चुकी है तथा यह भी बताया जा चुका है कि प्रत्येक ग्रह के महादशा वर्ष कितने-कितने होते हैं ? इस अध्याय में अन्तर्दशा स्पष्ट की जा रही है।

प्रत्येक ग्रह की महादशा में ६ ग्रहों की अन्तर्दशा होती है, परन्तु पहली अन्तर्दशा उसी ग्रह की होगी, जिस की महादशा चालू है। उदाहरणार्थ, सूर्य की महादशा में पहली अन्तर्दशा सूर्य की, दूसरी चन्द्रमा की, तीसरी मंगल की, चौथी राहु की, पाँचवीं बृहस्पति की, छठी शनि की, सातवीं बुध की, आठवीं केतु की तथा नवीं एवं अंतिम अन्तर्दशा शुक्र की होगी। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की अन्तर्दशाओं में भी समझना चाहिए। निष्कर्ष यह है कि जिस ग्रह की दशा हो, अन्तर्दशा में पहली दशा उसी की होती है तथा फिर सू. चं. मं. के क्रम से अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा समझनी चाहिए।

अन्तर्दशा निकालने के लिए दशा-दशा का परस्पर गुणा कर १० का भाग देने से लब्धि, मास तथा शेष को तीन से गुणा करने से गुणनफल दिन होंगे।

उदाहरणार्थ, सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा निकालनी है तो सूर्य के महादशा वर्ष ६ हैं तो

६ × ६ = ३६ ÷ १० = ३ लब्धि (मास) शेष ६ × ३ = १८ दिन।

अर्थात् सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा ३ मास, १८ दिन की होती है।

एक अन्य उदाहरण लें—सूर्य महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा

निकालनी है तो ६×१०=६०÷१०=६ मास अर्थात् सूर्य की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा ६ महीने की होती है।

नीचे सभी ग्रहों की महादशाओं में उनकी अन्तर्दशाएँ स्पष्ट की जा रही हैं—

सूर्यान्तर्दशा

			व०	मा०	दि०
सूर्य	में	सूर्य	०	३	१८
”	”	चन्द्र	०	६	०
”	”	मंगल	०	४	६
”	”	राहु	०	१०	२४
”	”	बृहस्पति	०	९	१८
”	”	शनि	०	११	१२
”	”	बुध	०	१०	६
”	”	केतु	०	४	६
”	”	शुक्र	१	०	०

चन्द्रान्तर्दशा

			व०	मा०	दि०
चन्द्र	में	चन्द्र	०	१०	०
”	”	मंगल	०	७	०
”	”	राहु	१	६	०
”	”	बृहस्पति	१	४	०
”	”	शनि	१	७	०
”	”	बुध	१	५	०
”	”	केतु	०	७	०
”	”	शुक्र	१	८	०
”	”	सूर्य	०	६	०

भौमान्तर्दशा

			व०	मा०	दि०
मंगल	में	मंगल	०	४	२७
"	"	राहु	१	०	१८
"	"	बृहस्पति	०	११	६
"	"	शनि	१		६
"	"	बुध	०	११	२७
"	"	केतु	०	४	२७
"	"	शुक्र	१	२	०
"	"	सूर्य	०	४	६
"	"	चन्द्र	०	७	०

राहवान्तर्दशा

			व०	मा०	दि०
राहु	में	राहु	२	८	१२
"	"	बृहस्पति	२	४	२४
"	"	शनि	२	१०	६
"	"	बुध	२	६	१८
"	"	केतु	१	०	१८
"	"	शुक्र	३	०	०
"	"	सूर्य	०	१०	२४
"	"	चन्द्र	१	६	०
"	"	मंगल	१	०	१८

गुरुवान्तर्दशा

			व०	मा०	दि०
बृहस्पति	में	बृहस्पति	२	१	१८
"	"	शनि	२	६	१२
"	"	बुध	२	३	६

बृहस्पति में	केतु	०	११	६
,, ,,	शुक्र	२	८	०
,, ,,	सूर्य	०	९	१८
,, ,,	चन्द्र	१	४	०
,, ,,	मंगल	०	११	६
,, ,,	राहु	२	४	२४

शन्यान्तर्दशा

		व०	मा०	दि०
शनि में	शनि	३	०	३
,, ,,	बुध	२	८	९
,, ,,	केतु	१	१	९
,, ,,	शुक्र	३	२	०
,, ,,	सूर्य	०	११	१२
,, ,,	चन्द्र	१	७	०
,, ,,	मंगल	१	१	९
,, ,,	राहु	२	१०	६
,, ,,	बृहस्पतिं	२	६	१२

बुधान्तर्दशा

		व०	मा०	दि०
बुध में	बुध	२	४	२७
,, ,,	केतु	०	११	२७
,, ,,	शुक्र	२	१०	०
,, ,,	सूर्य	०	१०	६
,, ,,	चन्द्र	१	५	०
,, ,,	मंगल	०	११	२७
,, ,,	राहु	२	६	१८
,, ,,	बृहस्पति	२	३	६
,, ,,	शनि	२	८	९

केत्वान्तर्दशा

		व०	मा०	दि०
केतु में	केतु	०	४	२७
,, ,,	शुक्र	१	२	०
,, ,,	सूर्य	०	४	६
,, ,,	चन्द्र	०	७	०
,, ,,	मंगल	०	४	२७
,, ,,	राहु	१	०	१८
,, ,,	बृहस्पति	०	११	६
,, ,,	शनि	१	१	९
,, ,,	बुध	०	११	२७

शुक्रान्तर्दशा

		व०	मा०	दि०
शुक्र में	शुक्र	३	४	०
,, ,,	सूर्य	१	०	०
,, ,,	चन्द्र	१	८	०
,, ,,	मंगल	१	२	०
,, ,,	राहु	३	०	०
,, ,,	बृहस्पति	२	८	०
,, ,,	शनि	३	२	०
,, ,,	बुध	२	१०	०
,, ,,	केतु	१	२	०

ऊपर सभी नौ ग्रहों की अन्तर्दशा स्पष्ट की जा चुकी है। आगे के अध्याय में प्रत्यन्तर्दशा स्पष्ट की जा रही है।

प्रत्यन्तर्दशा

जिस प्रकार प्रत्येक ग्रह की महादशा में नौ ग्रहों की अन्तर्दशा होती है, ठीक उसी प्रकार एक ग्रह की अन्तर्दशा में भी नौ ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा होती है। उदाहरणार्थ, सूर्य की ३ वर्षों की महादशा में—सूर्य महादशा सूर्य की अन्तर्दशा ३ महीने १८ दिन की होती है, इन ३ महीने १८ दिनों में भी नौ ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा उसी क्रम में भुगतती है।

प्रत्यन्तर्दशा निकालने की विधि

प्रत्यन्तर्दशा निकालने का तरीका यह है कि संबंधित महादशा के वर्षों को अन्तर और प्रत्यन्तर्दशा के वर्षों से गुणा कर ४० का भाग देने पर जो दिनादि आयेंगे, वे ही प्रत्यन्तर्दशा के दिनादि होंगे।

उदाहरणार्थ, सूर्य की महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में चन्द्र की ही प्रत्यन्तर्दशा स्पष्ट करनी है तो—

सूर्य की महादशा ६ वर्ष × चन्द्र की महादशा १० वर्ष = ६ × १० = ६० × १० चन्द्र की महादशा = ६०० ÷ ४० = १५ दिन।

अर्थात् सूर्य की महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा १५ दिन की होती है। पाठकों की सुविधा हेतु नीचे प्रत्येक ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा स्पष्ट की जा रही है।

सूर्य की महादशा में—सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मास	दिन	घड़ी
सूर्य महादशा, सूर्य अन्तर में सूर्य	०	५	२४
,, चन्द्र	०	९	०
,, मंगल	०	६	१८

,, राहु	०	१६	१२
,, बृहस्पति	०	१४	२४
,, शनि	०	१७	६
,, बुध	०	१५	१८
,, केतु	०	६	१८
,, शुक्र	०	१८	०

सूर्य की महादशा—चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
सूर्य महादशा, चन्द्र अन्तर में चन्द्र	०	१५	०
,, मंगल	०	१०	३०
,, राहु	०	२७	०
,, बृहस्पति	०	२४	०
,, शनि	०	२८	३०
,, बुध	०	२५	३०
,, केतु	०	१०	३०
,, शुक्र	१	०	०
,, सूर्य	०	९	०

सूर्य की महादशा—मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
सूर्य महादशा, मंगल अन्तर में मंगल	०	७	२१
,, राहु	०	१८	५४
,, बृहस्पति	०	१६	४८
,, शनि	०	१९	५७
,, बुध	०	१७	५१
,, केतु	०	७	२१
,, शुक्र	०	२१	०
,, सूर्य	०	६	१८
,, चन्द्र	०	१०	३०

सूर्य महादशा—राहु अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
सूर्य महादशा, राहु अन्तर में	राहु	१	१८	३६
,,	बृहस्पति	१	१३	१२
,,	शनि	१	२१	१८
,,	बुध	१	१५	५४
,,	केतु	०	१८	५४
,,	शुक्र	१	२४	०
,,	सूर्य	०	१६	१२
,,	चन्द्र	०	२४	०
,,	मंगल	०	१८	५४

सूर्य महादशा—बृहस्पति अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
सूर्य महादशा, बृह० अन्तर में	बृह०	१	८	२४
,,	शनि	१	१५	३६
,,	बुध	१	१०	४८
,,	केतु	०	१६	४८
,,	शुक्र	१	१८	०
,,	सूर्य	०	१४	२४
,,	चन्द्र	०	२४	०
,,	मंगल	०	१६	४८
,,	राहु	१	१३	१२

सूर्य महादशा में—शनि अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
सूर्य महादशा, शनि अन्तर में	शनि	१	२४	९
,,	बुध	१	१८	२७
,,	केतु	०	१९	५७
,,	शुक्र	१	२७	०

,, सूर्य	०	१७	६
,, चन्द्र	०	२८	३०
,, मंगल	०	१९	५७
,, राहु	१	२१	२८
,, बृहस्पति	१	१५	३६

सूर्य महादशा—बुध अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
सूर्य महादशा, बुध अन्तर में बुध	१	१३	२१
,, केतु	०	१७	५१
,, शुक्र	१	२१	०
,, सूर्य	०	१५	१८
,, चन्द्र	०	२५	३०
,, मंगल	०	१७	५१
,, राहु	१	१५	५४
,, बृहस्पति	१	१०	४५
,, शनि	१	१८	२७

सूर्य महादशा—केतु अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
सूर्य महादशा, केतु अन्तर में केतु	०	७	२१
,, शुक्र	०	२१	०
,, सूर्य	०	६	१८
,, चन्द्र	०	१०	३०
,, मंगल	०	७	२१
,, राहु	०	१८	५४
,, बृहस्पति	०	१६	४८
,, शनि	०	१९	५७
,, बुध	०	१७	५१

सूर्य महादशा—शुक्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
सूर्य महादशा—शुक्र अन्तर में शुक्र	२	०	०
,, सूर्य	०	१८	०
,, चन्द्र	१	०	०
,, मंगल	०	२१	०
,, राहु	१	२४	०
,, बृहस्पति	१	१८	०
,, शनि	१	२७	०
,, बुध	१	२१	०
,, केतु	०	२१	०

चन्द्र महादशा—चन्द्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
चन्द्र महादसा, चन्द्र अन्तर में चन्द्र	०	२५	०
,, मंगल	०	१७	३०
,, राहु	१	१५	०
,, बृहस्पति	१	१०	०
,, शनि	१	१७	३०
,, बुध	१	१२	३०
,, केतु	०	१७	३०
,, शुक्र	१	२०	०
,, सूर्य	०	१५	०

चन्द्र महादशा—मंगल अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
चन्द्र महादशा, मंगल अन्तर में मंगल	०	१२	१५
,, राहु	१	१	३०
,, बृहस्पति	०	२८	०
,, शनि	१	३	१५

,,	बुध	०	२९	४५
,,	केतु	०	१२	१५
,,	शुक्र	१	५	०
,,	सूर्य	०	१०	३०
,,	चन्द्र	०	१७	३०

चन्द्र महादशा—राहु अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
चन्द्र महादशा, राहु अन्तर में	राहु	२	२१	०
,,	बृहस्पति	२	१२	०
,,	शनि	२	४५	३०
,,	बुध	२	१६	३०
,,	केतु	१	१	३०
,,	शुक्र	३	०	०
,,	सूर्य	०	२७	०
,,	चन्द्र	१	१५	०
,,	मंगल	१	१	३०

चन्द्र महादशा—बृहस्पति अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
चन्द्र महादशा, बृहस्पति अन्तर में	बृह०	२	४	०
,,	शनि	२	१६	०
,,	बुध	२	८	०
,,	केतु	०	२८	०
,,	शुक्र	२	२०	०
,,	सूर्य	०	२४	०
,,	चन्द्र	१	१०	०
,,	मंगल	०	२८	०
,,	राहु	२	१२	०

चन्द्र महादशा—शनि अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
चन्द्र महादशा, शनि अन्तर में	शनि	३	०	१५
,,	बुध	२	२०	४५
,,	केतु	१	३	१५
,,	शुक्र	३	५	०
,,	सूर्य	०	२८	३०
,,	चन्द्र	१	१७	३०
,,	मंगल	१	३	१५
,,	राहु	२	२५	३०
,,	बृहस्पति	२	१६	०

चन्द्र महादशा—बुध अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
चन्द्र महादशा, बुध अन्तर में	बुध	२	१२	१५
,,	केतु	२	२६	४५
,,	शुक्र	२	२५	०
,,	सूर्य	०	२५	३०
,,	चन्द्र	१	१२	३०
,,	मंगल	०	२६	४५
,,	राहु	२	१६	३०
,,	बृहस्पति	२	८	०
,,	शनि	२	२०	४५

चन्द्र महादशा—केतु अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
चन्द्र महादशा, केतु अन्तर में	केतु	०	१२	१५
,,	शुक्र	१	५	०
,,	सूर्य	०	१०	३०
,,	चन्द्र	०	१७	३०

,, मंगल	०	१२	१५
,, राहु	१	१	३०
,, बृहस्पति	०	२८	०
,, शनि	१	३	१५
,, बुध	०	२६	४५

चन्द्र महादशा—शुक्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
चन्द्र महादशा, शुक्र अन्तर में शुक्र	३	१०	०
,, सूर्य	१	०	०
,, चन्द्र	१	२०	०
,, मंगल	१	५	०
,, राहु	३	०	०
,, बृहस्पति	२	२०	०
,, शनि	३	५	०
,, बुध	२	२५	०
,, केतु	१	५	०

चन्द्र महादशा—सूर्य अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
चन्द्र महादशा—सूर्य अन्तर में सूर्य	०	६	०
,, चन्द्र	०	१५	०
,, मंगल	०	१०	३०
,, राहु	०	२७	०
,, बृहस्पति	०	२४	०
,, शनि	०	२८	३०
,, बुध	०	२५	३०
,, केतु	०	१०	३०
,, शुक्र	१	०	०

मंगल महादशा—मंगल अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०	प०
मंगल महादशा, मंगल अन्तर में मंगल	०	८	३४	३०
" राहु	०	२२	२	०
" बृहस्पति	०	१९	३६	०
" शनि	०	२३	१६	३०
" बुध	०	२०	४९	३०
" केतु	०	८	३४	३०
" शुक्र	०	२४	३०	०
" सूर्य	०	७	२१	०
" चन्द्र	०	१२	१५	०

मंगल महादशा—राहु अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
मंगल महादशा, राहु अन्तर में राहु	१	२६	४२
" बृहस्पति	१	२०	२४
" शनि	१	२९	५१
" बुध	१	२३	३३
" केतु	०	२२	३
" शुक्र	२	३	०
" सूर्य	०	१८	५४
" चन्द्र	१	१	३०
" मंगल	०	२२	३

मंगल महादशा—बृहस्पति अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
मंगल महादशा, बृह० अन्तर में बृह०	१	१४	४८
" शनि	१	२३	१२
" बुध	१	१७	३६
" केतु	०	१९	३६

,,	शुक्र	१	२६	०
,,	सूर्य	०	१६	४८
,,	चन्द्र	०	२८	०
,,	मंगल	०	१९	३६
,,	राहु	१	२०	२४

मंगल महादशा—शनि अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०	प०
मंगल महादशा, शनि अन्तर में शनि	२	३	१०	३०
,, बुध	१	२६	३१	३०
,, केतु	०	२३	१६	३०
,, शुक्र	१	६	३०	०
,, सूर्य	०	१९	५७	०
,, चन्द्र	१	३	१५	०
,, मंगल	०	२३	१६	३०
,, राहु	१	२९	५१	०
,, बृहस्पति	१	२३	१२	०

मंगल महादशा—बुध अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०	प०
मंगल महादशा, बुध अन्तर में बुध	१	२०	३४	३०
,, केतु	०	२०	४९	३०
,, शुक्र	१	२९	३०	०
,, सूर्य	०	१७	५१	०
,, चन्द्र	०	२९	४५	०
,, मंगल	०	२०	४९	३०
,, राहु	१	२३	३३	०
,, बृहस्पति	१	१७	३६	०
,, शनि	१	२६	३१	३०

मंगल महादशा—केतु अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०	प०
मंगल महादशा, केतु अन्तर में केतु	०	८	३४	३०
„ शुक्र	०	२४	३०	०
„ सूर्य	०	७	२१	०
„ चन्द्र	०	१२	१५	०
„ मंगल	०	८	३४	३०
„ राहु	०	२२	३	०
„ बृहस्पति	०	१९	३६	०
„ शनि	०	२३	१६	३०
„ बुध	०	२०	४९	३०

मंगल महादशा—शुक्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
मंगल महादशा, शुक्र अन्तर में शुक्र	२	१०	०
„ सूर्य	०	२१	०
„ चन्द्र	१	५	०
„ मंगल	०	२४	३०
„ राहु	२	३	०
„ बृहस्पति	१	२६	०
„ शनि	२	६	३०
„ बुध	१	२९	३०
„ केतु	०	२४	३०

मंगल महादशा—सूर्य अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
मंगल महादशा, सूर्य अन्तर में सूर्य	०	६	१८
„ चन्द्र	०	१०	३०
„ मंगल	०	७	२१
„ राहु	०	१८	५४

,, बृहस्पति	०	१६	४८
,, शनि	०	१९	५७
,, बुध	०	१७	५१
,, केतु	०	७	२१
,, शुक्र	०	२१	०

मंगल महादशा—चन्द्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
मंगल महादशा, चन्द्र अन्तर में चन्द्र	०	१७	३०
,, मंगल	०	१२	१५
,, राहु	१	१	३०
,, बृहस्पति	०	२८	०
,, शनि	१	३	१५
,, बुध	०	२९	४५
,, केतु	०	१२	१५
,, शुक्र	१	५	०
,, सूर्य	०	१०	३०

राहु महादशा—राहु अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
राहु महादशा, राहु अन्तर में राहु	४	२५	४८
,, बृहस्पति	४	९	३६
,, शनि	५	३	५४
,, बुध	४	१७	४२
,, केतु	१	२६	४२
,, शुक्र	५	१२	०
,, सूर्य	१	१८	३६
,, चन्द्र	२	२१	०
,, मंगल	१	२६	४२

राहु महादशा—बृहस्पति अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
राहु महादशा, बृह० अन्तर में बृह०	३	२५	१२
,, शनि	४	१६	४८
,, बुध	४	२	२४
,, केतु	१	२०	२४
,, शुक्र	४	२४	०
,, सूर्य	१	१३	१२
,, चन्द्र	२	१२	०
,, मंगल	१	२०	२४
,, राहु	४	६	३६

राहु महादशा—शनि अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
राहु महादशा, शनि अन्तर में शनि	५	१२	२७
,, बुध	४	२५	२१
,, केतु	१	२९	५१
,, शुक्र	५	२१	०
,, सूर्य	१	२१	१८
,, चन्द्र	२	२५	३०
,, मंगल	१	२९	५१
,, राहु	५	३	५४
,, बृहस्पति	२	१६	४८

बुध महादशा—राहु अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
राहु महादशा, बुध अन्तर में बुध	४	१०	३
,, केतु	१	२३	३३
,, शुक्र	५	३	०
,, सूर्य	१	१५	५४

,,	चन्द्र	२	१६	३०
,,	मंगल	१	२३	३३
,,	राहु	४	१७	४२
,,	बृहस्पति	४	२	२४
,,	शनि	४	२५	२१

राहु महादशा—केतु अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
राहु महादशा, केतु अन्तर में केतु	०	२२	३
,, शुक्र	२	३	०
,, सूर्य	०	१८	५४
,, चन्द्र	१	१	३०
,, मंगल	०	२२	३
,, राहु	१	२६	४२
,, बृहस्पति	१	२०	२४
,, शनि	१	२६	५१
,, बुध	१	२३	३३

राहु महादशा—शुक्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
राहु महादशा शुक्र अन्तर में शुक्र	६	०	०
,, सूर्य	१	२४	०
,, चन्द्र	३	०	०
,, मंगल	२	३	०
,, राहु	५	१२	०
,, बृहस्पति	४	२४	०
,, शनि	५	२१	०
,, बुध	५	३	०
,, केतु	२	३	०

राहु महादशा—सूर्य अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
राहु महादशा, सूर्य अन्तर में सूर्य	०	१६	१२
,, चन्द्र	०	२७	०
,, मंगल	०	१०	५४
,, राहु	१	१८	३६
,, बृहस्पति	१	१३	१२
,, शनि	१	२१	१८
,, बुध	१	१५	५४
,, केतु	०	१८	५४
,, शुक्र	१	२४	०

राहु महादशा—चन्द्र अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
राहु महादशा, चन्द्र अन्तर में चन्द्र	१	१५	०
,, मंगल	१	१	३०
,, राहु	२	२१	०
,, बृहस्पति	२	१२	०
,, शनि	२	२५	३०
,, बुध	२	१६	३०
,, केतु	१	१	३०
,, शुक्र	३	०	०
,, सूर्य	०	२७	०

राहु महादशा में—मंगल अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
राहु महादशा, मंगल अन्तर में मंगल	०	२२	३
,, राहु	१	२६	४२
,, बृहस्पति	१	२०	२४
,, शनि	१	२६	५१

" बुध	१	२३	३३
" केतु	०	२२	३
" शुक्र	२	३	०
" सूर्य	०	१८	५४
" चन्द्र	१	१	३०

बृहस्पति महादशा—बृहस्पति अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
बृह० महादशा, बृह० अन्तर में बृह०	०३	१२	२४
" शनि	४	१	३६
" बुध	३	१८	४८
" केतु	१	१४	४८
" शुक्र	४	८	०
" सूर्य	१	८	२४
" चन्द्र	२	४	०
" मंगल	१	१४	४८
" राहु	३	२५	१२

बृहस्पति महादशा—शनि अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
बृह० महादशा, शनि अन्तर में शनि	४	२४	२४
" बुध	४	६	१२
" केतु	१	२३	१२
" शुक्र	५	२	०
" सूर्य	१	१५	३६
" चन्द्र	२	१६	०
" मंगल	१	२३	१२
" राहु	४	१६	४८
" बृहस्पति	४	१	३६

बृहस्पति महादशा—बुध अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
बृह० महादशा, बुध अन्तर में बुध	३	२५	३६
,, केतु	१	१७	३६
,, शुक्र	४	१६	०
,, सूर्य	१	१०	४८
,, चन्द्र	२	८	०
,, मंगल	१	१७	३६
,, राहु	४	२	२४
,, बृहस्पति	३	१८	४८
,, शनि	४	९	१२

बृहस्पति महादशा—केतु अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
बृह० महादशा, केतु अन्तर में केतु	०	१९	३६
,, शुक्र	१	२६	०
,, सूर्य	०	१६	४८
,, चन्द्र	०	२८	०
,, मंगल	०	१९	३६
,, राहु	१	२०	२४
,, बृहस्पति	१	१४	४८
,, शनि	१	२३	१२
,, बुध	१	१७	३६

बृहस्पति महादशा—शुक्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
बृह० महादशा, शुक्र अन्तर में शुक्र	५	१०	०
,, सूर्य	१	१८	०
,, चन्द्र	२	२०	०
,, मंगल	२	२६	०

,, राहु	४	२४	०
,, वृहस्पति	४	८	०
,, शनि	५	२	०
,, बुध	४	१६	०
,, केतु	१	२६	०

बृहस्पति महादशा—सूर्य अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
बृह० महादशा, सूर्य अन्तर में सूर्य	०	१४	६४
,, चन्द्र	०	२४	०
,, मंगल	०	१६	४८
,, राहु	१	१३	१२
,, वृहस्पति	१	८	२४
,, शनि	१	१५	३६
,, वुध	१	१०	४८
,, केतु	०	१६	४८
,, शुक्र	१	१८	०

बृहस्पति महादशा—चन्द्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
बृह० महादशा, चन्द्र अन्तर में चन्द्र	१	१०	०
,, मंगल	०	२८	०
,, राहु	२	१२	०
,, बृहस्पति	२	४	०
,, शनि	२	१६	०
,, वुध	२	८	०
,, केतु	०	२८	०
,, शुक्र	२	२०	०
,, सूर्य	०	२४	०

बृहस्पति महादशा—मंगल अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
बृह० महादशा, मंगल अन्तर में	मंगल	०	१९	३६
,,	राहु	१	२०	२४
,,	बृहस्पति	१	१४	४८
,,	शनि	१	२३	२३
,,	बुध	१	१७	३६
,,	केतु	०	१९	३६
,,	शुक्र	१	२६	०
,,	सूर्य	०	१६	४८
,,	चन्द्र	०	२८	०

बृहस्पति महादशा—राहु अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
बृह० महादशा, राहु अन्तर में	राहु	४	९	३६
,,	बृहस्पति	३	२५	१२
,,	शनि	४	१६	४८
,,	बुध	४	२	२४
,	केतु	१	२०	२४
,,	शुक्र	४	२४	०
,,	सूर्य	१	१३	१२
,,	चन्द्र	२	१२	०
,,	मंगल	१	२०	२४

शनि महादशा—शनि अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०	प०
शनि महादशा, शनि में	शनि	५	२१	२८	३०
,,	बुध	५	३	२५	२५
,,	केतु	२	३	१०	३०
,,	शुक्र	६	०	३०	०

,, सूर्य	१	२४	६	०
,, चन्द्र	३	०	१५	०
,, मंगल	२	३	१०	३०
,, राहु	५	१२	२७	०
,, बृहस्पति	४	२४	२४	०

शनि महादशा—बुध अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०	प०
शनि महादशा, बुध अन्तर में बुध	४	१७	१६	३०
,, केतु	१	२६	३१	३०
,, शुक्र	५	११	३०	०
,, सूर्य	१	१८	२७	०
,, चन्द्र	२	२०	४५	०
,, मंगल	१	२६	३१	३०
,, राहु	४	२५	२१	०
,, बृहस्पति	४	६	१२	०
,, शनि	५	३	२५	३०

शनि महादशा—केतु अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०	प०
शनि महादशा, केतु अन्तर में केतु	०	२३	१६	३०
,, शुक्र	२	६	३०	०
,, सूर्य	०	१९	५७	०
,, चन्द्र	१	३	१५	०
,, मंगल	०	२३	१६	३०
,, राहु	१	२९	५१	०
,, वृहस्पति	१	२३	१२	०
,, शनि	२	३	१०	३०
,, बुध	१	२६	३१	३०

शनि महादशा में—शुक्र अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
शनि महादशा, शुक्र अन्तर में शुक्र	६	१०	०
,, सूर्य	१	२७	०
,, चन्द्र	३	५	०
,, मंगल	२	६	३०
,, राहु	५	२१	०
,, बृहस्पति	५	२	०
,, शनि	६	०	३०
,, बुध	५	११	३०
,, केतु	२	६	३०

शनि महादशा—सूर्य अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
सूर्य महादशा, सूर्य अन्तर में सूर्य	०	१७	६
,, चन्द्र	०	२८	३०
,, मंगल	०	१९	५७
,, राहु	१	२१	१८
,, बृहस्पति	१	१५	३६
,, शनि	१	२४	९
,, बुध	१	१८	२७
,, केतु	०	१९	५७
,, शुक्र	१	२७	०

शनि महादशा—चन्द्र अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
शनि महादशा, चन्द्र अन्तर में चन्द्र	१	१७	३०
,, मंगल	१	३	१५
,, राहु	२	२५	३०
,, बृहस्पति	२	१६	०

,, शनि	३	०	१५
,, बुध	२	२०	४५
,, केतु	१	३	१५
,, शुक्र	३	५	०
,, सूर्य	०	२८	३०

शनि महादशा—मंगल अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०	प०
शनि महादशा, मंगल अंतर में मंगल	०	२३	१६	३०
,, राहु	१	२६	५१	०
,, बृहस्पति	१	२३	१२	०
,, शनि	२	३	१०	३०
,, बुध	१	२६	३१	३०
,, केतु	०	२३	१६	३०
,, शुक्र	२	६	३०	०
,, सूर्य	०	१६	५७	०
,, चन्द्र	१	३	१५	०

शनि महादशा—राहु अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
शनि महादशा, राहु अन्तर में राहु	५	३	५४
,, बृहस्पति	४	१६	४८
,, शनि	५	१२	२७
,, बुध	४	२५	२१
,, केतु	१	२६	५१
,, शुक्र	५	२१	०
,, सूर्य	१	२१	१८
,, चन्द्र	२	२५	३०
,, मंगल	१	२६	५१

शनि महादशा—बृहस्पति अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
शनि महादशा, बृह० अन्तर में	बृह०	४	१	३६
"	शनि	४	२४	२४
"	बुध	४	९	१२
"	केतु	१	२३	१२
"	शुक्र	५	२	०
"	सूर्य	१	१५	३६
"	चन्द्र	२	१६	०
"	मंगल	१	२३	१२
"	राहु	४	१६	४८

बुध महादशा—बुध अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०	प०
बुध महादशा, बुध अन्तर में	बुध	४	२	४९	३०
"	केतु	१	२०	३४	३०
"	शुक्र	४	२४	३०	०
"	सूर्य	१	१३	२१	०
"	चन्द्र	२	१२	१५	०
"	मंगल	१	२०	३४	३०
"	राहु	४	१०	३	०
"	वृहस्पति	३	२५	३६	०
"	शनि	४	१७	१६	३०

बुध महादशा—केतु अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०	पल
बुध महादशा, केतु अन्तर में	केतु	०	२०	४९	३०
"	शुक्र	१	२९	३०	०
"	सूर्य	०	१७	५१	०
"	चन्द्र	०	२९	४५	०

"	मंगल	०	२०	४९	३०
"	राहु	१	२३	३३	०
"	बृहस्पति	१	१७	३६	०
"	शनि	१	२६	१३	३०
"	बुध	१	२०	३४	३०

बुध महादशा—शुक्र अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
बुध महादशा, शुक्र अन्तर में	शुक्र	५	२०	०
"	सूर्य	१	२१	०
"	चन्द्र	२	२५	०
"	मंगल	१	२९	३०
"	राहु	५	३	०
"	बृहस्पति	४	१६	०
"	शनि	५	११	३०
"	बुध	४	२४	३०
"	केतु	१	२९	३०

बुध महादशा—सूर्य अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
बुध महादशा, सूर्य अन्तर में	सूर्य	०	१५	१८
"	चन्द्र	०	२५	३०
"	मंगल	०	१७	५१
"	राहु	०	१५	५४
"	बृहस्पति	१	१०	४८
"	शनि	१	१८	२७
"	बुध	१	१३	२१
"	केतु	०	१७	५१
"	शुक्र	१	२१	०

बुध महादशा—चन्द्र अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
बुध महादशा, चन्द्र अन्तर में	चन्द्र	१	१२	३०
,,	मंगल	०	२९	४५
,,	राहु	२	१६	३०
,,	बृहस्पति	२	८	०
,,	शनि	२	२०	४५
,,	बुध	२	१२	१५
,,	केतु	०	२९	४५
,,	शुक्र	२	२५	३०
,,	सूर्य	०	२५	३०

बुध महादशा—मंगल अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०	प०
बुध महादशा, मंगल अन्तर में	मंगल	०	२०	४९	३०
,,	राहु	१	२३	३३	०
,,	बृहस्पति	१	१७	३६	०
,,	शनि	१	२६	३१	३०
,,	बुध	१	२०	३४	३०
,,	केतु	०	२०	४९	३०
,,	शुक्र	१	२९	३०	०
,,	सूर्य	०	१७	५१	०
,,	चन्द्र	०	२९	४५	०

बुध महादशा—राहु अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
बुध महादशा, राहु अन्तर में	राहु	४	१७	४२
,,	बृहस्पति	४	२	२४
,,	शनि	४	२५	२१
,,	बुध	४	१०	३

"	केतु	१	२३	३३
"	शुक्र	५	३	०
"	सूर्य	१	१५	५४
"	चन्द्र	२	१६	३०
"	मंगल	१	२३	३३

बुध महादशा— वृहस्पति अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
बुध महादशा, बृह० अन्तर में	बृह०	३	१८	४८
"	शनि	४	६	१२
"	बुध	३	२५	३६
"	केतु	१	१७	३६
"	शुक्र	४	१६	०
"	सूर्य	१	१०	४८
"	चन्द्र	२	८	०
"	मंगल	१	१७	३६
"	राहु	४	२	२४

बुध महादशा—शनि अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०	प०
बुध महादशा, शनि अन्तर में	शनि	५	३	२५	३०
"	बुध	४	१७	१६	३०
"	केतु	१	२६	३१	३०
"	शुक्र	५	११	३०	०
"	सूर्य	१	१८	२७	०
"	चन्द्र	२	२०	४५	०
"	मंगल	१	२६	३१	३०
"	राहु	४	२५	२१	०
"	वृहस्पति	४	६	१२	०

केतु महादशा—केतु अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०	प०
केतु महादशा, केतु अन्तर में केतु	०	८	३४	३०
" शुक्र	०	२४	३०	०
" सूर्य	०	७	२१	०
" चन्द्र	०	१२	१५	०
" मंगल	०	८	३४	३०
" राहु	०	२२	३	०
" वृहस्पति	०	१९	३६	०
" शनि	०	२३	१६	३०
" बुध	०	२०	४९	३०

केतु महादशा—शुक्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
केतु महादशा, शुक्र अन्तर में शुक्र	२	१०	०
" सूर्य	२	२१	०
" चन्द्र	१	५	०
" मंगल	०	२४	३०
" राहु	२	३	०
" बृहस्पति	१	२६	०
" शनि	२	६	३०
" बुध	१	२९	३०
" केतु	०	२४	३०

केतु महादशा—सूर्य अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
केतु महादशा, सूर्य अन्तर में सूर्य	०	६	१८
" चन्द्र	०	१०	३०
" मंगल	०	७	२१
" राहु	०	१८	५४

”	बृहस्पति	०	१६	४८
”	शनि	०	१९	५७
”	बुध	०	१७	५१
”	केतु	०	७	२१
”	शुक्र	०	२१	०

केतु महादशा— चन्द्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
केतु महादशा, चन्द्र अन्तर में चन्द्र	०	१७	३०
” मंगल	०	१२	१५
” राहु	१	१	३०
” बृहस्पति	०	२८	०
” शनि	१	३	१५
” बुध	०	२९	४५
” केतु	०	१२	१५
” शुक्र	१	५	०
” सूर्य	०	१०	२०

केतु महादशा—मंगल अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०	प०
केतु महादशा, मंगल अन्तर में मंगल	०	८	३४	३०
” राहु	०	२२	३	०
” बृहस्पति	०	१९	३६	०
” शनि	०	२३	१६	३०
” बुध	०	२०	४९	३०
” केतु	०	८	३४	३०
” शुक्र	०	२४	३०	०
” सूर्य	०	७	२१	०
” चन्द्र	०	१२	१५	०

केतु महादशा—राहु अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
केतु महादशा, अन्तर में राहु	१	२६	२४
,, बृहस्पति	१	२०	२४
,, शनि	१	२६	५१
,, बुध	१	२३	३३
,, केतु	०	२२	३
,, शुक्र	२	३	०
,, सूर्य	०	१८	५४
,, चन्द्र	१	१	३०
,, मंगल	०	२२	३

केतु महादशा—बृहस्पति अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
केतु महादशा, बृह० अन्तर में बृह०	१	१४	४८
,, शनि	१	२३	१२
,, बुध	१	१७	३६
,, केतु	०	१९	३६
,, शुक्र	१	२६	०
,, सूर्य	०	१६	४८
,, चन्द्र	०	२८	०
,, मंगल	०	१९	३६
,, राहु	१	२०	२४

केतु महादशा—शनि अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०	पल
केतु महादशा, शनि अन्तर में शनि	२	३	१०	३०
,, बुध	१	२६	२१	३०
,, केतु	०	२३	१६	३०
,, शुक्र	२	६	६०	०

,,	सूर्य	०	१९	५७	०
,,	चन्द्र	१	३	१५	०
,,	मंगल	०	२३	१६	३०
,,	राहु	१	२९	५१	०
,,	वृहस्पति	१	२३	१२	०

केतु महादशा—बुध अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०	प०
केतु महादशा, बुध अन्तर में बुध	१	२०	३४	३०
,, केतु	०	२०	४९	३०
,, शुक्र	१	२९	३०	०
,, सूर्य	०	१७	५१	०
,, चन्द्र	०	२९	४५	०
,, मंगल	०	२०	४९	०
,, राहु	१	२३	३३	०
,, वृहस्पति	१	१७	३६	०
,, शनि	१	२६	३१	३०

शुक्र महादशा—शुक्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
शुक्र महादशा, शुक्र अन्तर में शुक्र	६	२०	०
,, सूर्य	२	०	०
,, चन्द्र	३	१०	०
,, मंगल	२	१०	०
,, राहु	६	०	०
,, वृहस्पति	५	१०	०
,, शनि	६	१०	०
,, बुध	५	२०	०
,, केतु	२	१०	०

शुक्र महादशा—सूर्य अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
शुक्र महादशा, सूर्य अन्तर में सूर्य	०	१८	०
„ चन्द्र	१	०	०
„ मंगल	०	२१	०
„ राहु	१	२४	०
„ बृहस्पति	१	१८	०
„ शनि	१	२७	०
„ बुध	१	२१	०
„ केतु	०	२१	०
„ शुक्र	२	०	०

शुक्र महादशा, चन्द्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
शुक्र महादशा, चन्द्र अन्तर में चन्द्र	१	२०	०
„ मंगल	१	५	०
„ राहु	३	०	०
„ बृहस्पति	२	२०	०
„ शनि	३	५	०
„ बुध	२	२५	०
„ केतु	१	५	०
„ शुक्र	३	१०	०
„ सूर्य	१	०	०

शुक्र महादशा—मंगल अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
शुक्र महादशा, मंगल अन्तर में मंगल	०	२४	३०
„ राहु	२	३	०
„ बृहस्पति	१	२६	०
„ शनि	२	६	३०

,,	बुध	१	२९	३०
,,	केतु	०	२४	३०
,,	शुक्र	२	१०	०
,,	सूर्य	०	२१	०
,,	चन्द्र	१	५	०

शुक्र महादशा—बृहस्पति अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
शुक्र महादशा, राहु अन्तर में	राहु	५	१२	०
,,	बृहस्पति	७	२४	०
,,	शनि	५	२१	०
,,	बुध	५	३	०
,,	केतु	२	३	०
,,	शुक्र	६	०	०
,,	सूर्य	१	२४	०
,,	चन्द्र	३	०	०
,,	मंगल	२	३	०

शुक्र महादशा—बृहस्पति अन्तर में प्रत्यन्तर

		मा०	दि०	घ०
शुक्र महादशा, बृह० अन्तर में	बृह०	४	८	०
,,	शनि	५	२	०
,,	बुध	४	१६	०
,,	केतु	१	२६	०
,,	शुक्र	५	१०	०
,,	सूर्य	१	१८	०
,,	चन्द्र	२	२०	०
,,	मंगल	१	२६	०
,,	राहु	४	२४	०

शुक्रमहादशा—शनि अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
शुक्र महादशा, शनि अन्तर में शनि	६	०	३०
" बुध	५	११	३०
" केतु	२	६	३०
" शुक्र	६	१०	०
" सूर्य	१	२७	०
" चन्द्र	३	५	०
" मंगल	२	६	३०
" राहु	५	२१	०
" बृहस्पति	५	२	०

शुक्र महादशा—बुध अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
शुक्र महादशा, बुध अन्तर में बुध	४	२४	३०
" केतु	१	२९	०
" शुक्र	५	२०	०
" सूर्य	१	२१	०
" चन्द्र	२	२५	०
" मंगल	१	२९	३०
" राहु	५	३	०
" बृहस्पति	४	१६	०
" शनि	५	११	३०

शुक्र महादशा—केतु अन्तर में प्रत्यन्तर

	मा०	दि०	घ०
शुक्र महादशा, केतु अन्तर में केतु	०	२४	३०
" शुक्र	२	१०	८
" सूर्य	०	२१	०
" चन्द्र	१	५	०

„	मंगल	०	२४	३०
„	राहु	२	३	०
„	बृहस्पति	१	२५	०
„	शनि	२	६	३०
„	बुध	१	२६	३०

सूक्ष्म दशा

अधिकतर ज्योतिषी अन्तर्दशा तक ही निकालते हैं। सूक्ष्म दशा निकालने का ज्ञान गिने-चुने ज्योतिषियों को ही होता है। पाठकों के लाभार्थ, मैं यहाँ सूक्ष्मदशा का विवरण दे रहा हूँ।

यह दशा व्यापारी भाइयों के लिए अत्यन्त जरूरी है। विशेषकर ऐसे व्यापारियों के लिए, जो बड़े स्तर पर व्यापार करते हैं तथा भाव बदलने के साथ-साथ आर्थिक स्तर भी बदलता रहता है। शेयर मार्केट से सम्बन्धित व्यापारी, सोने-चाँदी आदि का सौदा करने वाले व्यापारियों का भाव, ऊँच-नीच इसी दशा के द्वारा ही बताया जा सकता है।

प्रातः ८ बजे तेल का भाव कुछ और रहता है, ९ बजे बदल जाता है तथा साढ़े नौ बजे फिर ऊँचा या नीचे उतर आता है और इस भाव के उतरने-चढ़ने में ही उनके लाखों के वारे-न्यारे हो जाते हैं। यह मेरा कथन ही नहीं, अपितु अनुभव भी है, और सौप्रतिशत सही अनुभव है। इस दशा का उपयोग करके किसी भी वस्तु का पन्द्रह-पन्द्रह मिनटों तक का बदलता भाव पहले से ही ज्ञात किया जा सकता है, अस्तु।

सूक्ष्म दशा निकालने की विधि

प्रत्यन्तर्दशा के मास-दिन-घटी को घटी बनाकर दो से भाग कर दें, लब्धि में जिस ग्रह की सूक्ष्म दशा निकालनी हो उसके दशावर्षों से गुणा करें तो सूक्ष्मदशा के पल प्राप्त होते हैं। (६० पल = १ घटी, ६० घटी = १ दिन)

उदाहरणार्थ, सूर्य की महादशा ६ वर्ष में, सूर्यान्तर्दशा ३ महीने १८ दिन है और इन ३ महीने १८ दिनों की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा ५ दिन २४ घटी की है। इन ५ दिन २४ घटी की सूक्ष्मता निकालनी है तो

५ × ६० = ३०० + २४ = ३२४ घटी

३२४ ÷ २ = १६२ पल। १६२ पल एक वर्ष की गति हुई।

इन १६२ पलों को सूर्य दशावर्ष ६ से गुणा किया = १६२ × ६ = ९७२ पल। ९७२ पल ÷ ६० = १६ घटी १२ पल सूर्य की सूक्ष्मदशा हुई।

पाठकों को चाहिए कि वे इसी विधि से अन्य ग्रहों की भी सूक्ष्म दशा निकाल लें। मैं यहाँ केवल सूर्य महादशा, सूर्य अन्तर, सूर्य प्रत्यन्तर में सूक्ष्म दशा स्पष्ट कर रहा हूँ।

सूर्य महादशा, सूर्य अन्तर, सूर्य प्रत्यन्तर में

सूर्य सूक्ष्म

	दिन	घटी	पल
सूर्य	०	१६	१२
चन्द्र	०	२७	०
मंगल	०	१८	५४
राहु	०	४८	३६
बृहस्पति	०	४३	१२
शनि	०	५१	१८
बुध	०	४५	५४
केतु	०	१८	५४
शुक्र	०	५४	०

चन्द्र सूक्ष्म

	दिन	घटी	पल
चन्द्र	०	४५	०
मंगल	०	३१	३०
राहु	१	२१	०
वृहस्पति	१	१२	०
शनि	१	२५	३०
बुध	१	१६	३०
केतु	०	३१	३०
शुक्र	१	३०	०
सूर्य	०	२७	०

मंगल सूक्ष्म

	दिन	घटी	पल
मंगल	०	२२	३
राहु	०	५६	४२
वृहस्पति	०	५०	२४
शनि	०	५९	५१
बुध	०	५३	३३
केतु	०	२२	३
शुक्र	१	३	०
सूर्य	०	१८	५४
चन्द्र	०	३१	३०

राहु सूक्ष्म

	दिन	पल	घटी
राहु	२	२५	४८
वृहस्पति	२	९	३६
शनि	२	३३	५४
बुध	२	१७	४२
केतु	०	५६	४२
शुक्र	२	४२	०

सूर्य	०	४८	३६
चन्द्र	१	२१	०
मंगल	०	५६	४२

बृहस्पति सूक्ष्म

	दिन	घटी	पल
बृहस्पति	१	५५	१२
शनि	२	१६	४८
बुध	२	२	२४
केतु	०	५०	२४
शुक्र	२	२४	०
सूर्य	०	४३	१२
चन्द्र	१	१२	०
मंगल	०	५०	२४
राहु	२	६	३६

शनि सूक्ष्म

	दिन	घटी	पल
शनि	२	४२	२७
बुध	२	२५	२१
केतु	०	५६	५१
शुक्र	२	२१	०
सूर्य	०	५१	१८
चन्द्र	१	२५	३०
मंगल	०	५६	५१
राहु	२	३३	५४
बृहस्पति	२	१६	४८

इसी प्रकार आगे भी सुगमतापूर्वक सूक्ष्म दशा निकालकर शुभाशुभ ज्ञात किया जा सकता है।

प्राण दशा

यदि सूक्ष्मदशा के एक भाग को भी नौ ग्रहों में निश्चित क्रम व निश्चित अनुपात में बाँटें तो वह प्राण दशा होगी

उदाहरणार्थ, सूर्य की महादशा ६ वर्ष, सूर्य में सूर्य का अन्तर ३ महीने १८ दिन, सूर्य अन्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर ५ दिन २४ घटी तथा सूर्य प्रत्यन्तर में सूर्य सूक्ष्म १६ घटी १२ पल तथा इसी सूर्य सूक्ष्म १६ घटी १२ पल की प्राणदशा निकाली जायेगी। इसी प्रकार आगे भी अन्य ग्रहों की प्राणदशा निकालनी चाहिए।

प्राण दशा निकालने की विधि

सूक्ष्म दशा के पल बनाकर दशा वर्षों के आधे भाग का गुणा करे तथा उसमें ६० से भाग दे तो लब्धि में प्राणदशा के पल तथा शेष में विपल) प्राप्त होते हैं। (६० विपल=१ पल) उदाहरणार्थ, सूर्य सूक्ष्म दशा में सभी ग्रहों की प्राणदशा स्पष्ट कर रहा हूँ।

सूर्य महादशा, सूर्य अन्तर, सूर्य प्रत्यन्तर, सूर्य सूक्ष्म दशा में—
सूर्य प्राण

	घटी	पल	विपल
सूर्य	०	४८	३६
चन्द्र	१	२१	०
मंगल	०	५६	४२
राहु	२	२५	४८
बृहस्पति	२	९	३६
शनि	२	३३	५४
बुध	२	१७	४२

केतु	०	५६	४२
शुक्र	२	४२	०

चन्द्र प्राण

	घटी	पल	विपल
चन्द्र	२	१५	०
मंगल	१	३४	३०
राहु	४	३	०
बृहस्पति	३	३६	०
शनि	४	१६	३०
बुध	४	४९	३०
केतु	१	३४	३०
शुक्र	४	३०	०
सूर्य	१	२१	०

मंगल प्राण

	घटी	पल	विपल
मंगल	१	६	९
राहु	२	५०	६
बृहस्पति	२	३१	१२
शनि	२	५९	३३
बुध	१	४०	३९
केतु	१	७	९
शुक्र	३	९	०
सूर्य	०	५६	४२
चन्द्र	१	३४	३०

राहु प्राण

	घटी	पल	विपल
राहु	७	१७	२४
बृहस्पति	६	२८	४८
शुक्र	७	४१	४२
बुध	६	५३	६

केतु	२	५०	६
शुक्र	८	६	०
सूर्य	२	२५	४८
चन्द्र	४	३	०
मंगल	२	५०	६

बृहस्पति प्राण

	घटी	पल	विपल
बृहस्पति	५	४५	३६
शनि	६	५०	२५
बुध	६	७	१२
केतु	२	३१	१२
शुक्र	७	१२	०
सूर्य	२	९	३६
चन्द्र	३	३६	०
मंगल	२	३१	१२
राहु	६	२८	४८

शनि प्राण

	घटी	पल	विपल
शनि	८	७	२१
बुध	७	१६	३
केतु	२	५९	३३
शुक्र	८	३३	०
सूर्य	२	३३	५४
चन्द्र	४	१६	३०
मंगल	२	५९	३३
राहु	७	४१	४२
वृहस्पति	६	५०	२४

इसी प्रकार बुध की प्राणदशा, केतु की प्राणदशा तथा शुक्र की प्राणदशा भी स्पष्ट करें तथा साथ ही अन्य ग्रहों की भी प्राण दशाएँ उपर्युक्त विधि से स्पष्ट कर सूक्ष्मातिसूक्ष्म भविष्यफल कहने के योग्य बनें।

दशा-वाहन

विद्वानों को चाहिए कि किसी भी जातक की दशा स्पष्ट करते समय उसके वाहन का भी विचार कर लें। वाहन-ज्ञान दशा प्रवेश काल से किया जाता है।

दशा-वाहन ज्ञात करने की विधि[1]

जातक को जिस समय महादशा, अन्तर्दशा अथवा प्रत्यन्तर्दशा प्रारंभ हो, उस दिन का नक्षत्र देख लें। फिर उसके जन्म नक्षत्र से दशारम्भ दिन के नक्षत्र तक गिनकर ९ से भाग दें। शेष १ बचे तो उस दशा का वाहन गधा, २ बचे तो घोड़ा, ३ बचे तो हाथी, ४ बचे तो भैंसा, ५ बचे तो सियार, ६ बचे तो सिंह, ७ बचे तो कौवा, ८ बचे तो हंस तथा ० शेष बचे तो उस दशा का वाहन मयूर होता है।

उदाहरणार्थ—संवत् २०२६ फाल्गुन शुक्ला २ को किसी व्यक्ति की बुध की महादशा प्रारंभ हुई, इस दिन उत्तराभाद्रपद नक्षत्र है। मान लो उस व्यक्ति का जन्म का नक्षत्र अश्विनी है। अतः अश्विनी से उत्तराभाद्रपद नक्षत्र तक गणना की तो २६ संख्या आई, इसमें ९ का भाग दिया—२ लब्धि तथा ८ शेष रहे तो हंस वाहन होता है।

---

१. स्वकीय जन्म नक्षत्राद् गणयेत् पाक भावधि।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तु पाक वाहनः॥
गर्दभो घोटको हस्ती महिषो जम्बु सिंहको।
काको हंसो मयूरश्च नवैते नर वाहनाः॥

मान० ४१३

अतः उस व्यक्ति के बुध महादशा का वाहन हंस है। इसी प्रकार अन्तर्दशा तथा प्रत्यन्तर्दशा में भी समझना चाहिए।

दशा-वाहन फल

१. गदहा

यदि किसी जातक की दशा का वाहन गदहा हो तो उस दशा में जातक अपने ही किये कार्यों पर पछताता है, उससे समय-समय पर कुछ ऐसे कार्य हो जाते हैं, जो भविष्य में उसके लिए ही अहितकर सावित होते हैं। विद्याध्ययन में कमी, परीक्षा में असफलता, आर्थिक दृष्टि से हानि, धनधान्य में कमी, कृषि-कार्यों में असफलता तथा वह घोर सांसारिक व्यक्ति होता है।

२. घोड़ा

जिस दशा प्रवेश काल का वाहन घोड़ा हो तो वह दशा बलशाली मानी गई है। इस दशा में व्यक्ति स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट तथा निरोग रहता है। यदि जातक रोगी भी हो तो इस दशा में वह रोगमुक्त हो जाता है, इस दशा में उसे सुस्वादु भोजन मिलता है, राज्य-कार्यों में सफलता मिलती है तथा रुके हुए कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। इस दशा में उत्तम वाहन प्राप्ति योग भी बनता है।

३. हाथी

जिस दशा का वाहन हाथी हो वह उत्तम कोटि की दशा होती है। उस दशा में जातक राज्य से सम्मान प्राप्त करता है, घर में मंगल कार्य सम्पन्न होते हैं। आकस्मिक द्रव्य प्राप्ति होती है तथा जाति कार्यों में यश एवं सम्मान मिलता है। ऐसी दशा में विशेष उन्नति के अवसर उपस्थित होते हैं तथा मन एवं जीवन में प्रसन्नता बनी रहती है।

४. भैंसा

भैंसा वाहन जातक के लिए अशुभ कहा गया है। जिस दशा का वाहन भैंसा हो, वह दशा जातक की शक्ति को क्षीण करती है, मुदकमे वगैरह में पराजय मिलती है, घर में अमंगल, चित्त में खिन्नता एवं विचारों में निराशा बनी रहती है। अग्निभय व चोर भय से वह पीड़ित रहता है तथा नये-नये रोग उस पर आक्रमण करते रहते हैं।

५. सियार

दशारम्भ वाहन सियार हो तो जातक के दशा में घर में कलह रहती है। स्त्री के स्वभाव में निम्नता आती है तथा पत्नी की वजह से वह दुःखी रहता है। स्त्री को नयी-नयी व्याधियाँ घेरती हैं, जिससे वह पीड़ित रहती है तथा व्यर्थ का व्यय होता रहता है। इस दशा में कृषि कार्यों में असफलता प्राप्त होती है तथा मस्तिष्क में ऊलजलूल विचार एवं मन में खिन्नता बनी रहती है। व्यापारिक कार्यों में हानि की अधिक संभावना रहती है।

६. सिंह

दशा प्रवेश वाहन सिंह हो तो वह दशा उत्तम कोटि की व्यतीत होती है। आकस्मिक लाभ तथा व्यापार में फायदा होता है, मुकदमे में निश्चय ही सफलता मिलती है तथा शत्रु कुचक्र रचकर भी इसका बाल-बाँका नहीं कर सकता। यदि रोगी हो तो आरोग्य लाभ करता है तथा सभी दृष्टियों से यह दशा उत्तमरूपेण व्यतीत होती है।

७. कौआ

दशा का वाहन कौआ हो तो जातक के मन में, चित्त में चंचलता बनी रहती है। वह जो भी योजनाएँ बनाता है वे भविष्य में जाकर पूर्णतया सफल होती हैं। शत्रुओं पर वह हावी रहता है तथा उसके रुके हुए कई कार्य स्वतः ही सम्पन्न हो जाते हैं। उसकी संगति निम्न स्तर के लोगों से रहने के कारण समाज में अपमानित होता है तथा भाग्य की दृष्टि से कई उतार-चढ़ाव देखने को मिलते हैं।

८. हंस

जिस दशा प्रवेश में वाहन हंस होता है, वह दशा उत्तम रूप से व्यतीत होती है। वह विद्वानों से पूज्य, गुणीजनों द्वारा सम्मानित एवं राज्य कार्य में सफलता प्राप्त करता है। समाज में उसके विचारों का आदर होता है तथा उच्च स्तरीय लोगों में उसकी जान-पहचान होती है। भाग्य की दृष्टि से भी यह दशा श्रेष्ठ रहती है।

९. मयूर

जिस दशारम्भ का वाहन मयूर या मोर हो, वह दशा सभी प्रकार के सुखों को देने वाली होती है। जातक जो भी कार्य प्रारम्भ करता है

वह समय पर सम्पन्न होता है, अधिकारीगण उसकी बात न्यायपूर्वक सुनते हैं तथा उसके सोचे हुए सभी कार्य सम्पन्न होते हैं।

ऊपर मैंने दशा-वाहन फल संक्षेप में स्पष्ट किया, लेकिन इस सम्बन्ध में निम्न तथ्य भी ध्यान में रखने चाहिएँ।

वाहन से सम्बन्धित कुछ ज्ञातव्य बातें

१. दशा-वाहन फल में केवल महादशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा का ही प्रयोग करना चाहिए, सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशा के वाहनों पर ध्यान नहीं दिया जाता।

२. महादशा का फल १/४ भाग, अन्तर्दशा वाहन का फल १/२ भाग, तथा प्रत्यन्तर्दशा वाहन का फल १/४ भाग समझना चाहिए। इस प्रकार से अन्तर्दशा वाहन पर विशेष विचार करना चाहिए।

३. तीनों दशाओं—महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा में से यदि दो दशाओं के वाहन श्रेष्ठ हों तो वह समय अधिक अनुकूल तथा यदि दो दशाओं के वाहन अशुभ हों तो वह समय प्रतिकूल समझना चाहिए।

दशाग्रह अवस्था

जिस जातक की जन्मकुण्डली एवं दशा का अध्ययन किया जा रहा है, उस जातक की कुण्डली में दशा विचार करते समय दशाग्रह अवस्था का भी विचार कर लेना चाहिए। ग्रहों की दस अवस्थाएँ होती हैं।

१. दीप्त २. मुदित ३. स्वस्थ ४. शान्त ५. शक्त ६. पीड़ित

७. दीन ८. खल ९. विकल और १०. भीत ।

१. दीप्त

यदि ग्रह अपनी उच्च राशि में या त्रिकोण में स्थित हो तो वह दीप्त ग्रह कहलाता है ।

२. स्वस्थ

जो ग्रह अपनी ही राशि में बैठा हो, वह स्वस्थ ग्रह कहलाता है ।

३. मुदित

जन्मकुण्डली में जो ग्रह मित्र के घर में स्थित हो, वह मुदित ग्रह कहलाता है ।

४. शान्त

जो ग्रह शुभ ग्रह वर्ग में स्थित हो, उसे शान्त ग्रह कहा जाता है ।

५. शक्त

जो ग्रह स्फुटरश्मि जालों से शुद्ध हो, उसे शक्त ग्रह की संज्ञा प्राप्त होती है ।

६. पीड़ित

जो ग्रह पाप ग्रहों के मध्य में या उनसे पराजित हो, वह पीड़ित ग्रह कहलाता है ।

७. दीन

जो ग्रह शत्रु की राशि में पड़ा हो, या शत्रु के नवांश में स्थित हो, वह ग्रह दीन कहलाता है ।

८. खल

जन्मकुण्डली में जो ग्रह पाप ग्रह से दृष्ट या उसके साथ में स्थित हो तो वह 'खल' ग्रह कहलाता है ।

९. भीत

जन्मकुण्डली में जो ग्रह नीच राशि का होकर पड़ा हो, वह भीत ग्रह कहलाता है ।

१०. विकल

जो ग्रह अस्त हो, वह विकल ग्रह कहलाता है ।

ऊपर के विवेचन से पाठकों को ग्रहों के शत्रु, मित्र, सम (जो न तो शत्रु हो, न मित्र) का ज्ञान नहीं रहने से उलझन-सी महसूस हो रही होगी। पाठकों के लाभार्थ प्रत्येक ग्रह के शत्रु, मित्र एवं सम ग्रहों का परिचय नीचे दिया जा रहा है। इस सम्वन्ध में विशेष अध्ययन के लिए पाठक मेरी पुस्तक 'भारतीय ज्योतिष' (प्रकाशक-ग्रनुपम पॉकेट वुक्स, शक्तिनगर, दिल्ली ७) देखें।

॥ ग्रह मैत्री-बोधक-चक्रम् ॥

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम
सूर्य	चन्द्र, मंगल, गुरु	शुक्र, शनि	वुध
चन्द्र	सूर्य, वुध	×	शुक्र, मंगल, गुरु, शनि
मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	वुध	शुक्र, शनि
वुध	सूर्य, शुक्र	चन्द्र	मंगल, गुरु, शनि
वृहस्पति	सूर्य, चन्द्र, मंगल	वुव, शुक्र	शनि
शुक्र	वुध, शनि	सूर्य, चन्द्र	मंगल, गुरु
शनि	वुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु

ग्रह अवस्था फल

१. दीप्त

यदि जातक को दीप्त ग्रह की दशा चल रही हो तो वह श्रेष्ठ दशा कहलाती है। इस दशा में भूमि सम्वन्धी कार्यों में सफलता मिलती है। नया मकान वनता है या मकान की खरीद-विक्री होती है, जिसमें लाभ

होता है। हृदय में वीरता का संचार होता है, जोखिम से भरे कार्य करने में वह अग्रणी बनता है तथा व्यापारिक कार्यों में सफलता मिलती है। बिवाह होता है, विवाहित होने पर सन्तान सुख प्राप्त होता है, परीक्षा में सफलता, वाहन सुख तथा राज्य सम्बन्धी कार्यों में उन्नति होती है।

२. स्वस्थ

स्वस्थ ग्रह की दशा में व्यक्ति स्थायित्व प्राप्त करता है। मनो-वांछित सफलता मिलती है एवं असम्भाव्य शुभ घटनायें घटती हैं, उसका परिचय क्षेत्र विस्तार पाता है, विद्याध्ययन में सफलता प्राप्त करता है एवं आर्थिक क्षेत्रों में असाधारण सफलताएँ प्राप्त करता है, समाज एवं राज्य में उसे सम्मान प्राप्त होता है तथा ऐश-आराम की वस्तुओं पर उसका व्यय होता है।

३. मुदित

मुदित ग्रह की दशा में शारीरिक सबलता एवं स्वास्थ्य लाभ करता है। उसकी उन्नति होती है तथा व्यापार में कुछ ऐसे सम्बन्ध बढ़ते हैं, जो आगे चलकर लाभदायक सिद्ध होने वाले होते हैं। इस दशा में व्यक्ति अपनी साज-सज्जा पर विशेष ध्यान देता है तथा उसके हाथों से विविध धार्मिक कृत्य सम्पन्न होते हैं।

४. शान्त

शान्त ग्रह की दशा मन एवं मस्तिष्क को शान्ति प्रदान करनेवाली होती है। चित्त की उद्विग्नता, खिन्नता एवं उलझनें मिटकर शान्ति प्राप्त होती हैं। उसके जीवन में मनोरंजन के विविध अवसर उपस्थित होते हैं, जिनसे वह प्रसन्नता प्राप्त करता है।

५. शक्त

शक्त ग्रह की दशा व्यक्ति के भाग्य को उन्नति की ओर अग्रसर करने वाली होती है। वाद-विवाद के प्रश्नों में वह जीतता है। मुकदमे, कोर्ट-कचहरी से सम्बन्धित कार्यों में उसे सफलता मिलती है तथा रोगी होने पर वह इस दशा के आते ही रोग मुक्त होकर शक्ति लाभ करता है। राज्य एवं समाज में उसे असाधारण सफलता मिलती है।

६. पीड़ित

पीड़ित ग्रह की दशा जीवन में हानिकारक मानी जाती है। जातक

विविध कष्टों एवं परेशानियों में उलझता ही चला जाता है और आजीविका के लिए घर से दूर जाना पड़ता है तथा तबादला हो जाता है। परिवार में अशान्ति, खिन्नता एवं कलह बनी रहती है तथा अधिकारियों एवं उसके बीच मतभेद बढ़ते हैं। दोस्ती में वह निरादर प्राप्त करता है तथा चोर भय एवं अग्नि भय से भी दुःखी होता है।

७. दीन

दीन ग्रह की दशा भी ज्योतिर्विज्ञान में ठीक नहीं कही गई है क्योंकि इस दशा में जातक को मान हानि का सामना करना पड़ता है तथा उसकी पदावनति होती है। भाइयों तथा सम्बन्धियों से उसके मतभेद बढ़ते हैं, फलस्वरूप झगड़े बढ़ जाते हैं, मस्तिष्क में बेचैनी बनी रहती है तथा घर में दुःख प्राप्त करता है। अपने परिवार से अलग होना पड़ता है तथा इस दशा में जातक को विविध रोगों से निरन्तर संघर्षरत भी रहना पड़ता है।

८. खल

खल ग्रह की दशा में व्यक्ति को अपने माता-पिता से दूर होना पड़ता है, सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है तथा घर में बँटवारा हो जाता है। यदि ज़ातक राजकीय सेवा में होता है तो उसका तबादला घर से बहुत दूर होता है। पत्नी के साथ उसकी अनबन बढ़ जाती है, फलस्वरूप घर में कलह बनी रहती है। शत्रुओं से खतरा बढ़ जाता है एवं इस दशा में शत्रु उस पर हावी हो जाते हैं। वह जो भी कार्य करता है, आर्थिक दृष्टि से उसे हानि ही उठानी पड़ती है, समाज एवं राज्य में उसे सम्मान नहीं मिलता।

९. भीत

भीत ग्रह की दशा में जातक शत्रुओं के हाथों पीड़ित होता है कोर्ट-कचहरी में उसे असफलता का मुंह देखना पड़ता है तथा आर्थिक दृष्टि से वह हानि उठाता है।

१०. विकल

विकल ग्रह की दशा चित्त में ऊलजलूल विचार पैदा करने वाली, खिन्नता बढ़ाने वाली तथा पराजयपूर्ण होती है।

दशा कुण्डली

महादशा का प्रवेश जिस समय होता है, उस समय को आधार वनाकर इष्टकाल निकाल कर लग्न कुण्डली वना लेनी चाहिए और फिर उस समय जो-जो ग्रह जिस-जिस राशि में हों उस राशि में स्थापित कर दशा कुण्डली वना लेनी चाहिए।

सूक्ष्मता से दशा अवलोकनार्थ अन्तर्दशा जन्म कुण्डली भी वना ली जाती है। जिस समय किसी अन्तर्दशा का प्रवेश होता है, उस समय को आधार वना कर ही अन्तर्दशा कुण्डली वनाई जाती है।

कुण्डली वनाने के पश्चात् उसका अध्ययन भी उपेक्षित है, अतः नीचे दशा कुण्डली अध्ययन हेतु कुछ सूत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ।

दशा-कुण्डली अध्ययन के कुछ सूत्र

१. दशा कुण्डली में—वह ग्रह, जिसकी दशा प्रारम्भ हो रही है—यदि लग्न या केन्द्र में पड़ जाय तो वह दशा श्रेष्ठ रूपेण व्यतीत होगी, ऐसा समझना चाहिए।

२. यदि वह ग्रह—जिसकी दशा प्रारम्भ हो रही है—लग्न से ३, ६, १० या ११वें पड़ जाय तो भी शुभ समझनी चाहिए।

३. जन्मकुण्डली में वह दशेश (जिस ग्रह की दशा प्रारम्भ हो रही है) लग्नेश हो और दशा कुण्डली में भी वह लग्नेश वन जाय तो वह दशा अत्युत्तम समझनी चाहिए।

४. यदि दशेश दशा कुण्डली में मित्र क्षेत्री या स्वक्षेत्री हो तो उस दशा में घर में सुख, शांति एवं आर्थिक लाभ वना रहेगा, ऐसा समझना चाहिए।

५. दशा कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानी जाती है, अतः यदि दशा कुण्डली में चन्द्रदशेश की उच्च राशि में स्थित हो तो वह दशा श्रेष्ठ रहेगी। पाठकों के लाभार्थ मैं प्रत्येक ग्रह की उच्च-नीच राशियाँ नीचे स्पष्ट कर रहा हूँ। इस सम्बन्ध में विशेष विवरण हेतु पाठकों को मेरी पुस्तक—'कुण्डली-दर्पण' (प्रकाशक—अनुपम पॉकेट बुक्स, शक्तिनगर, दिल्ली-७) का अध्ययन करना चाहिए।

ग्रह	उच्च राशि	नीच राशि
सूर्य	मेष	तुला
चन्द्र	वृष	वृश्चिक
मंगल	मकर	कर्क
बुध	कन्या	मीन
वृहस्पति	कर्क	मकर
शुक्र	मीन	कन्या
शनि	तुला	मेष
राहु	मिथुन	धनु
केतु	धनु	मिथुन

अब यदि बुध की दशा प्रारम्भ हो रही हो और सम्बन्धित दशा कुण्डली में चन्द्र कन्या राशि (बुध की उच्च राशि) में स्थित हो तो बुध की दशा उत्तम रहेगी।

६. यदि दशा कुण्डली में चन्द्र दशेश की मित्र राशि में स्थित हो तो भी दशा श्रेष्ठ रूपेण व्यतीत होगी।

७. यदि दशा कुण्डली में दशेश में चन्द्र ३, ६, ८, ११, और १२वें हो तो वह दशा साधारण रहेगी

८. जिस नक्षत्र में जातक का जन्म होता है, उसको 'जन्मर्क्ष' (जन्म नक्षत्र) उससे दसवें नक्षत्र को 'कर्मर्क्ष' (कर्म नक्षत्र) तथा उससे उन्नीसवें नक्षत्र को 'आधान' नक्षत्र कहते हैं। इन जन्मर्क्ष, कर्मर्क्ष तथा आधान नक्षत्र से दूसरे को सम्पत्, तीसरे को विपत् चौथे को क्षेम, पाँचवे को प्रत्यरि' छठें को 'साधक', सातवें को

'वध', आठवें को 'मैत्र', नवें नक्षत्र को 'परम मैत्र' कहा जाता है। यदि कोई जन्मकालीन ग्रह सम्पत्, क्षेम, साधक, मैत्र अथवा परम मैत्र नक्षत्रों में बैठा हो और उस ग्रह की दशा या अन्तर्दशा आ गई हो तो वह दशा श्रेष्ठ रहेगी तथा उस दशा में भी लाभ एवं निरोगिता रहेगी।

उदाहरणार्थ, यदि किसी जातक का जन्म नक्षत्र अनुराधा है तो उसका नक्षत्र बोधक चक्र पृष्ठ १३० के अनुसार होगा।

उपर्युक्त उदाहरण से यह सिद्ध हो गया कि सम्बन्धित जातक के लिए किस ग्रह की दशा कैसी रहेगी तथा उसका क्या फल रहेगा ?

९. यदि दशा कुडण्ली की लग्न राशि चर हो तो शीघ्र लाभ, स्थिर हो तो दशा के अन्त में लाभ तथा द्विस्वभाव हो तो दशा के मध्य में लाभ होगा।

१०. जन्म कुडण्ली में यदि लग्न चर हो तो एकादश स्थान बाधा-कारक तथा एकादशेश की दशा बाधारूप होती है। यदि जन्म लग्न स्थिर हो तो नवम स्थान बाधाकारक तथा नव-मेश बाधारूप होता है तथा यदि जन्म लग्न द्विस्वभाव राशि का होता है तो सप्तम स्थान बाधाकारक एवं सप्तमेश की दशा बाधारूप होती है। इसके साथ ही बाधाकारक स्थान में जो ग्रह बैठे होते हैं, उनकी दशा-अन्तर्दशा भी जातक के लिए हानिकारक होती है। पाठकों के लाभार्थ पृष्ठ १३१ पर जन्मलग्न से बाधक भाव तथा बाधाकारक ग्रह दिये जा रहे हैं।

'बाधक भाव-ग्रह विवरण चक्र' से स्पष्ट है कि जिनकी जन्मकुडण्ली की लग्न राशि मेष है, उनके लिए शनि की दशा तथा कुम्भराशिस्थ बैठे ग्रहों की दशा हानिकारक एवं अशुभ रहेगी।

११. बाधक स्थान से १, ६, ७ १० भावों में भी जो ग्रह बैठे होते हैं, उन ग्रहों की महादशा-अन्तर्दशा भी बाधा रूप ही होती है तथा जीवन में व्याघात उपस्थित करने वाली एवं संकटपूर्ण होती है।

१२. जन्मकुडण्ली में जो ग्रह कारक तथा शुभ फलदायक हैं,

॥ नक्षत्र-चक्र ॥

जन्मर्क्ष	कर्मर्क्ष	आधान	सूचक	स्वामी ग्रह	दशा फल
अनुराधा	उत्तराभाद्रपद	पुष्य	—	शनि	श्रेष्ठ
ज्येष्ठा	रेवती	आश्लेषा	सम्पत्	बुध	धन लाभ
मूल	अश्विनी	मघा	विपत्	केतु	दुःखदायक
पूर्वाषाढ़ा	भरती	पूर्वाफाल्गुनी	क्षेम	शुक्र	स्वस्थ
उत्तराषाढ़ा	कृत्तिका	उत्तराफाल्गुनी	प्रत्यरि	सूर्य	धन हानि
श्रवण	रोहिणी	हस्त	साधक	चन्द्र	उन्नति
धनिष्ठा	मृगशिरा	चित्रा	वध	मंगल	रोग, दुःख
शतभिषा	आर्द्रा	स्वाति	मैत्र	राहु	लाभ
पूर्वाभाद्रपद	पुनर्वसु	विशाखा	अति मैत्र	वृहस्पति	परम लाभ

उन ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा भी उसी के अनुसार बलदायक होती है।

ऊपर मैंने कतिपय सिद्धान्त स्पष्ट किए हैं। ग्रहों के शुभाशुभत्व व कारक ग्रहों की जानकारी के लिए मैं अपनी पुस्तक 'कुण्डली दर्पण' में विस्तार से लिख चुका हूँ, पाठक वहाँ से लाभ उठा सकते हैं।

यदि उपरोक्त नियमों को ध्यान में रखकर पाठक विचार करेंगे तो ही वे सफलता के सन्निकट होंगे, ऐसी मेरी धारणा है।

॥ बाधक भाव-ग्रह विवरण ॥

जन्म लग्न	संज्ञा	बाधक राशि	बाधक स्वामी	बाधक भाव
मेष	चर	कुम्भ	शनि	११
वृष	स्थिर	मकर	शनि	९
मिथुन	द्वि० स्व०	धनु	वृहस्पति	७
कर्क	चर	वृष	शुक्र	११
सिंह	स्थिर	मेष	मंगल	९
कन्या	द्वि० स्व०	मीन	वृहस्पति	७
तुला	चर	सिंह	सूर्य	११
वृश्चिक	स्थिर	कर्क	चन्द्र	९
धनु	द्वि० स्व०	मिथुन	बुध	७
मकर	चर	वृश्चिक	मंगल	११
कुम्भ	स्थिर	तुला	शुक्र	९
मीन	द्वि० स्व०	कन्या	बुध	७

दशा देखने के नियम

दशा ही फल कथन का आधार है। प्रत्येक ग्रह अपने स्वभाव और स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फल तो देता ही है, परन्तु सम्पूर्ण दशा में वह कब शुभ फल देगा, इसका निश्चय दशा के आधार पर ही किया जाता है। प्रत्येक ग्रह की लगभग १८ स्थितियाँ होती हैं, जिसके अनुसार ही उस ग्रह का शुभाशुभत्व ज्ञात किया जाता है। वे स्थितियाँ निम्नरूपेण हैं।

१. परम उच्च

परम उच्च ग्रह अपनी दशा में श्रेष्ठ फल देते हैं।

परम उच्च ग्रह इस प्रकार हैं। सूर्य—मेष के १० अंशों तक
चन्द्र—वृष के ३ अंशों तक
मंगल—मकर के २८ अंशों तक
बुध—कन्या के १५ अंशों तक
गुरु—कर्क के ५ अंशों तक
शुक्र—मीन के २७ अंशों तक
शनि—तुला के २० अंशों तक
राहु—मिथुन के १५ अंशों तक
केतु—धनु के १५ अंशों तक

२. उच्च

उच्चराशिस्थ ग्रह अपनी दशा में जातक को प्रत्येक प्रकार का सुख प्रदान करते हैं। उच्च ग्रहों का विवरण पिछले अध्याय में दिया जा चुका है।

३. आरोही

आरोही ग्रहों की दशा में धन-धान्य की वृद्धि एवं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता आती है। आरोही ग्रह इस प्रकार हैं।

सूर्य	मीन
चन्द्र	मेष
मंगल	धनु
बुध	सिंह
गुरु	मिथुन
शुक्र	कुम्भ
शनि	कन्या
राहु	वृष
केतु	वृश्चिक

४. अवरोही

अवरोही ग्रह की दशा में जातक को रोग, परेशानी, मानसिक, व्यथा, धन हानि आदि होते हैं। अवरोही ग्रह विवरण निम्न प्रकार हैं।

सूर्य	वृष
चन्द्र	मिथुन
मंगल	कुम्भ
बुध	तुला
गुरु	सिंह
शुक्र	मेष
शनि	वृश्चिक
राहु	कर्क
केतु	मकर

५. नीच

जो ग्रह कुण्डली में नीच राशिस्थ हो, उसकी दशा-अन्तर्दशा में मान हानि तथा धन हानि होती है। नीच ग्रहों का विवरण पीछे के अध्ययन में दिया जा चुका है।

६. परम नीच

परम नीच ग्रह की दशा में, जातक को बन्धु-विछोह, कलह, धन-

हानि, दिवालियापन, चोर भय एवं अग्नि भय का सामना करना पड़ता है। परम नीच ग्रह इस प्रकार से हैं।

सूर्य	तुला के १० अंशों तक
चन्द्र	वृश्चिक के ३ अंशों तक
मंगल	कर्क के २८ अंशों
बुध	मीन के १५ अंशों तक
बृहस्पति	मकर के ५ अंशों तक
शुक्र	कन्या के २७ अंशों तक
शनि	मेष के २० अंशों तक
राहु	धनु के १५ अंशों तक
केतु	मिथुन के १५ अंशों तक।

७. मूल त्रिकोण

जन्मकुण्डली में जो ग्रह मूल त्रिकोण गत होता है यदि उसकी दशा-अन्तर्दशा प्रारम्भ हो रही हो तो वह भाग्योदयवर्द्धक एवं धन लाभ कराने में अग्रणी होती है। मूल त्रिकोण राशियाँ ये कही जाती हैं—

सूर्य	सिंह के २० अंश तक
चन्द्र	वृष के ४ अंश से अन्त तक
मंगल	मेष के १२ अंश तक
बुध	कन्या के १५ से २५ अंशों तक
बृहस्पति	धनु के २० अंश तक
शुक्र	तुला के २० अंश तक
शनि	कुम्भ के २० अंश तक
राहु	कुम्भ के १५ अंश तक

८. स्वगृही

जन्म कुण्डली में जो ग्रह स्वराशिस्थ होते हैं, उनकी दशा-अन्तर्दशा में जातक विद्या प्राप्ति, यश प्राप्ति तथा नौकरी में उन्नति प्राप्त करता है।

९. अति मित्रगृही

जब कोई ग्रह कुण्डली में अत्यन्त घनिष्ठ मित्र के गृह में स्थिति होता है तो उसकी दशा में वाहन सुख, स्त्री-पुत्र सुख एवं विविध मनोरथ पूरे

होते हैं।

१०. मित्र गृही

यदि कोई ग्रह जन्म-कुण्डली में मित्रगृही हो और उसकी दशा प्रारम्भ हो रही हो तो वह दशा सुखकारी, आरोग्यवर्धक एवं सम्मान लाभ करने में समर्थ होती है।

११. सम गृही

जो ग्रह समगृही हो तो उसकी दशा सामान्य होती है तथा भ्रमण विशेष होता है।

१२. शत्रु गृही

जो ग्रह शत्रु के घर में स्थित हो तथा उसकी दशा चल रही हो तो इस दशा में धन हानि, बन्धु-विछोह, गृह-कलह एवं स्त्री से झगड़ा होने से मानसिक अशांति बनी रहती है।

१३. अति शत्रु गृही

अति शत्रु गृही ग्रह की दशा में मुकदमेबाजी में पराजय होती है तथा व्यापार में गहरी धन हानि होती है। साथ ही बँटवारा होता है तथा भाईयों में कलह बढ़ती है।

१४. उच्च ग्रह के साथ

जो ग्रह उच्च ग्रह के साथ होता है, उसकी दशा में जातक तीर्थ यात्राएँ एवं भूमिलाभ में समर्थ होता है।

१५. पाप ग्रहों के साथ

जो ग्रह जन्मकुण्डली में पाप ग्रहों के साथ हो उसकी दशा में अशुभ कार्य, घर में मरण, धन हानि आदि की सम्भावनाएँ बनती हैं।

१६. शुभ ग्रहों के साथ

जो ग्रह शुभ ग्रहों के साथ हो, उसकी दशा में जातक को धनधान्य वृद्धि, धनोपार्जन, स्वजन-प्रेम आदि का लाभ मिलता है।

१७. शुभ दृष्ट

जो ग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो उसकी दशा में विद्या लाभ, परीक्षा में सफलता तथा ख्याति प्राप्त होती है।

१८. अशुभ दृष्ट

जो ग्रह अशुभ दृष्टियों से युक्त होता है, उस ग्रह की दशा में

सन्तान वाधा, अग्नि भय, तबादला, माता-पिता में से किसी की मृत्यु तथा अर्थ-क्षय आदि की सम्भावनाएँ बढ़ती हैं।

ज्योतिष प्रेमियों को चाहिए कि वे किसी भी ग्रह की दशा का अध्ययन करते समय ग्रह की उपर्युक्त स्थितियों को पहले से ही समझ लें, फिर फलादेश कहें। सूक्ष्म फलादेश के लिए इसके अतिरिक्त प्रत्येक ग्रह की उच्च नवांश, नीच नवांश, पाप षष्टांश, पारावतांश, द्रेष्काणांश स्थान बल, दिग्वल, कालबल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल—आदि की स्थिति भी जान लेनी चाहिए एवं तदुपरान्त ही शुभाशुभ निर्णय का फल कथन कहा जाय तो वह निश्चय ही शत-प्रतिशत सही होगा, इसमें सन्देह नहीं।

१६. जो ग्रह जन्मकुण्डली में वली होता है, उसकी दशा निश्चय ही शुभ फलदायक होती है।

२०. जो ग्रह जन्मकुण्डली में लग्न, दशम तथा एकादश भाव में स्थिति होते हैं, उन ग्रहों की दशा उन्नतिकारक एवं सुखवर्धक होती है।

२१. लग्न से ३, ६, १०वें भाव में स्थित ग्रहों की दशा भी श्रेष्ठ फलदायक देखी गई है।

२२. जन्मकुण्डली में जो दो ग्रह शुभ एवं शुभकारक हों तो उन दोनों ग्रहों की महादशा-अन्तर्दशा में भाग्योन्नति होती है।

२३. यदि दशानाथ जन्मकुण्डली में लग्नेश, नवांशेश, होरेश, द्रेष्काणेश या द्वादशेश हो तो निश्चय ही उसकी दशा जीवन में मोड़ देने वाली होती है।

२४. मांदि जिस स्थान में हो, उस स्थान के स्वामी की दशा रोग वर्धक होती है।

२५. जो ग्रह मांदि के साथ या उससे दृष्ट हो तो उस ग्रह की दशा श्रेष्ठ नहीं कही जा सकती।

२६. अस्त, वक्री या व्यभिचार गत ग्रह भी अपनी दशा में अशुभ फल ही प्रदान करते हैं।

२७. जो ग्रह संधिगत हो, उस ग्रह की दशा अनिश्चय प्रधान ही होती है तथा अन्ततः पतन की ओर ही ले जाती है।

२८. केन्द्रस्थ ग्रह की दशा में यात्राएँ, विदेश यात्रा होती है।

२९. जो ग्रह जन्मकुण्डली में लग्न से केन्द्र भाव में होता है, उस ग्रह की दशा में भाग्योन्नति समझनी चाहिए।

३०. लग्न से ६, ८, या १२वें भाव में जो ग्रह या षष्ठेश, अष्टमेश अथवा द्वादशेश की दशा हो तो वह दशा जीवन में पतन की ही सूचक होती है।

३१. पापग्रह की महादशा में यदि पापग्रह की ही अन्तर्दशा चल रही हो तो इस दशा में जातक को धन से हाथ धोना पड़ता है, शत्रुओंसे उसे हानि मिलती है तथा रोग से जूझते-जूझते वह परेशान होजाता है।

३२. पाप ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा चल रही हो तो जातक पूर्वार्द्ध में कष्ट पाता है, लेकिन उत्तरार्द्ध में उस ग्रह के शुभ फलों को भोगता है।

३३. शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा के समय जातक की सम्मानवृद्धि होती है, नौकरी में पदोन्नति होती है तथा उसे समस्त प्रकार से शारीरिक सुख मिलता है।

३४. शुभ ग्रह की महादशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो जातक पूर्वार्द्ध में उत्तम फल प्राप्त करता है, परन्तु उत्तरार्द्ध में उसे पराजय एवं दुःखों का सामना करना पड़ता है।

३५. पापग्रह की महादशा में शत्रु गृह स्थित ग्रह की अन्तर्दशा चल रही हो तो जातक को व्यर्थ में ही कलंकित होना पड़ता है।

३६. वक्री गृह की दशा में व्यक्ति धन, सुख और इज्जत की हानि उठाता है तथा कई नये-नये रोगों से पीड़ित होता है।

३७. मार्गी ग्रह की दशा में जातक सम्मान, सुख और द्रव्य प्राप्त करता है। ऐसे समय में वह चुनाव जीत कर नेता बनता है तथा उसके प्रत्येक कार्य सिद्ध होते हैं।

३८. नीच और शत्रु क्षेत्री ग्रह की दशा में व्यक्ति परदेश में निवास करता है, व्यापार में हानि होती है तथा मुकदमे में हार होती है, परन्तु इस दशा में जातक नीच कार्यों से लाभ उठाता है।

३९. राहु और केतु यदि २, ३, ६, ११वें स्थान पर न हों तो जातक इन ग्रहों की दशाओं में दुःख उठाता है एवं व्यर्थ की द्रव्य हानि सहन करता है।

भावेश दशा फल

दशा-अन्तर्दशा फल कहना इतना सुगम नहीं है जितना कि साधारण लोग इसे मान बैठे हैं। महादशा एक ग्रह की और अन्तर्दशा दूसरे ग्रह की होती है और तब इन दोनों का आनुपातिक फल निर्धारण कर फल-कथन करना अत्यन्त दुष्कर है। जिस प्रकार दूध और खटाई अलग-अलग वस्तुएँ हैं, पर उन दोनों के संयोग से किसी तीसरे ही पदार्थ की सृष्टि हो जाती है, जिसमें उपर्युक्त दोनों पदार्थों के न्यूनाधिक गुण होते हुए भी अपने आपकी अलग ही विशेषता रखता है, ठीक यही प्रकार दशा अन्तर्दशा का है। दोनों के संयोग से जो फल निकलता है, वह अपने आप में अलग ही होता है। वर्षों के अध्ययन के पश्चात् मेरी तो यह मान्यता-सी बन गई है कि सफल ज्योतिषी एवं भविष्यवक्ता वही कहा जा सकता है, जो दशा-अन्तर्दशा-संयोग का सही-सही फल कथन कर सके।

दशा-फल विवेचन के कई सिद्धान्त हैं, जिनमें से दस मुख्य हैं—

१. महादशा फल
२. अन्तर्दशा फल
३. प्रत्यन्तर्दशा फल
४. भावेश दशा फल
५. लग्न से दशानाथ के भिन्न-भिन्न भावों में स्थिति के अनुसार फल।
६. महादशानाथ से अन्तर्दशानाथ दूरी फल
७. अन्तर्दशेश की स्थितियों के अनुसार फल
८. ग्रहावस्था द्वारा फलादेश
९. परिपाक दशा फल

१०. गोचर ग्रहानुसार फल कथन।

एक अच्छा ज्योतिषी इन दसों सिद्धान्तों को एक साथ ध्यान में रख कर फल कथन करता है। मशीन के केवल एक पुर्जे पर ध्यान रखने से ही मशीन कार्य नहीं करती, अपितु एक साथ सभी पुर्जों पर ध्यान रखना पड़ता है, जिससे मशीन का सन्तुलन तथा उस पर नियन्त्रण बना रह सके।

पाठकों के लाभार्थ में भावों के स्वामी के अनुसार फलकथन स्पष्ट कर रहा हूँ।

१. लग्नेश

लग्नेश (लग्न भाव का स्वामी) की दशा जातक के लिए सौभाग्य सूचक होती है। इस दशा में जातक रोगमुक्त होकर निरोग होता है, उसका प्रभाव एवं ख्याति बढ़ जाती है तथा कठिन से कठिन कार्य करने के लिए उद्यत हो जाता है। आर्थिक दृष्टि से यह दशा जातक के लिए श्रेष्ठ रहती है यद्यपि धनागम में प्रत्येक बार बाधाएँ उपस्थित होती देखी गई हैं।

लग्नेश की दशा में शनि की अन्तर्दशा धन हानि के लिए उत्तरदायी है। इस प्रकार की दशा में परिवारवालों के साथ झगड़ा, बँटवारा तथा शत्रुता होती है एवं शरीर को विविध कष्ट झेलने पड़ते हैं।

२. द्वितीयेश

द्वितीयेश (दूसरे भाव का स्वामी) की महादशा जातक के लिए अशुभ सूचक रहती है। इस दशा में जातक को मानहानि, धन हानि, एवं पदावनति की स्थिति देखनी पड़ती है। यदि द्वितीयेश पापग्रहों के साथ जन्मकुण्डली में स्थित हो तो इस दशा में कारावास तथा मृत्यु भी होती देखी गई है।

द्वितीयेश पापग्रह हो या पापग्रह के साथ हो या पापग्रह से दृष्ट हो अथवा द्वितीयेश भाव में परम पापी ग्रह बैठा हो तो इस दशा में जातक को भीषण आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। मेरे सामने ऐसे कई लखपतियों के उदाहरण हैं जिन्हें इस प्रकार की दशा में दिवालिया बनने तक की नौबत देखनी पड़ी।

द्वितीयेश की महादशा में शनि, मंगल, सूर्य तथा राहु की अन्त-

दशाएँ आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त कष्टकर होती हैं तथा भाई का मरण एवं स्वजन विछोह उसे सहन करना पड़ता है।

परन्तु यदि द्वितीयेश शुभ ग्रह हो एवं शुभ ग्रहों के साथ ही बैठा हो, तो इस दशा में धन-धान्य की वृद्धि होती है तथा सन्तान-सुख भी प्राप्त होता है।

३. तृतीयेश

तृतीयेश (तीसरे भाव का स्वामी) की दशा निरन्तर उत्थान-पतन प्रदान करने वाली होती है। यदि तृतीयेश शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह के साथ बैठा हो तो तृतीयेश की दशा शुभ कारक मानी गई है, परन्तु यदि तृतीयेश पाप ग्रह हो या पाप ग्रहों के साथ स्थित हो तो उसकी दशा में धन क्षय, झूठा कलंक लगना, मानहानि तथा शत्रुओं की वृद्धि होती है।

पापी तृतीयेश की दशा में जब शनि, मंगल, राहु या सूर्य की अन्तर्दशा चल रही हो तो उसमें भाई या बहन की मृत्यु, बन्धुजनों से बिछोह, मानहानि एवं घर से दूर स्थानान्तरण होता है।

अधिकतर अनुभव से यही देखा गया है कि तृतीयेश चाहे पापी ग्रह हो, चाहे सौम्य ग्रह, उसकी महादशा में पापी ग्रह की अन्तर्दशा आने पर स्वजन-बिछोह सहन करना ही पड़ता है।

४. चतुर्थेश

चतुर्थेश की दशा सुखकारक मानी गई है, परन्तु यदि चतुर्थेश पापग्रह हो तो उसमें पापी ग्रह की अन्तर्दशा आ जाने पर बन्धु विरोध, बँटवारा, कृषि हानि, स्थानान्तरण तथा पशु हानि होकर अर्थक्षय होता है। पापी चतुर्थेश की महादशा में अस्त या वक्री ग्रह की अन्तर्दशा आने पर घोर कष्ट उठाना पड़ता है।

परन्तु यदि चतुर्थेश सौम्य ग्रह हो तो उस सौम्य ग्रह की महादशा में सौम्य ग्रह की अन्तर्दशा आने पर घर वाहनादि की श्रीवृद्धि होती है, घर में मांगलिक कार्य सपम्न्न होते हैं तथा जातक की सर्वतोमुखी उन्नति होती है।

चतुर्थेश बलवान शुभ हो तो तो उसकी महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आने पर मकान बनता है तथा कृषि कार्यों से लाभ होता है।

शुक्र की अन्तर्दशा आने पर वाहन सुख मिलता है तथा लाभेश (एकादश भाव का स्वामी) की अन्तर्दशा में नया कारोवार प्रारम्भ होता है तथा धनागम के एकाधिक स्रोत वनते हैं।

चतुर्थेश की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा आने पर नौकरी में तो लाभ होता है, उन्नति होती है, परन्तु जातक के पिता को घोर कष्ट देखना पड़ता है।

५. पंचमेश

पंचमेश की दशा जातक के जीवन की सर्वतोमुखी उन्नति की सूचक है। इस दशा में उच्च श्रेणी की परीक्षा दी जाती है, परीक्षा में पूर्ण सफलता मिलती है, प्रतियोगिता में विजय प्राप्त होती है, घर में मंगल-कार्य होते हैं, पुत्र उत्पन्न होता है तथा समाज एवं राज्य में सम्मान वृद्धि होती है।

यदि पंचमेश पुरुष ग्रह हो तो इसकी दशा में पुत्र लाभ तथा स्त्री ग्रह हो तो कन्या उत्पन्न होती है। यदि पंचमेश शुभ ग्रह हो तो समस्त प्रकार के ऐश्वर्यों का भोग जातक को प्राप्त होता है, परन्तु शुभ पंचमेश की महादशा में पापी ग्रह की अन्तर्दशा आने पर पुत्रों पर विपत्ति तथा घर में कलह बढ़ती है। शुभ ग्रह में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आने पर ईश्वराराधन में भी चित्त लगता है।

६. षष्ठेश

षष्ठेश की महादशा मुख्यतः रोग वृद्धि की सूचक है। इस दशा में नये-नये शत्रु उत्पन्न होते हैं तथा उनके द्वारा रचित चक्रव्यूहों में उलझ कर परेशान होना पड़ता है। अधिकारियों तथा स्वयं के बीच मतभेद बढ़ते हैं तथा राज्य-सेवा में पदावनति देखने को वाध्य होना पड़ता है।

-षष्ठेश पाप ग्रह हो और इस पाप ग्रह कि महादशा में पापी ग्रह की ही अन्तर्दशा चल रही हो तो इस दशा में जातक को मुकदमेवाजी में उलझना पड़ता है एवं प्लीहा, गुल्म, क्षय आदि रोगों से ग्रस्त होना पड़ता है।

७. सप्तमेश

सप्तमेश की दशा में व्यक्ति को मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहना

पड़ता है। उसे शारीरिक कष्ट के साथ-साथ आर्थिक कष्टों से भी जूझना पड़ता है। राज्य पक्ष में असम्मान एवं पदावनति होती है।

सप्तमेश पापग्रह हो या पाप ग्रहों के मध्य स्थित हो तो इस दशा में स्त्री को विशेष शारीरिक कष्ट भोगना पड़ता है तथा यदि सप्तमेश क्रूर ग्रह हो और उसमें पापी ग्रह की अन्तर्दशा हो तो स्त्री सुख से वंचित होना पड़ता है।

सप्तमेश पापग्रह हो तथा उसमें पापग्रह की ही अन्तर्दशा हो तो जातक को स्त्री सम्वन्धी वदनामी का शिकार होना पड़ता है, घर से दूर स्थानान्तरण होता है तथा गुर्दे में रोग होने की सम्भावना बलवती बनती है।

८. अष्टमेश

अष्टमेश की दशा में जातक को मृत्यु तुल्य कष्ट भोगना पड़ता है, स्त्री से विछोह होता है अथवा स्त्री चिररोगिणी वन जाती है।

अष्टमेश पापी ग्रह हो तो जब उसमें पापग्रह की ही अन्तर्दशा आती है तो जातक को शत्रु के आघात से आहत होना पड़ता है, आर्थिक दृष्टि से उसे घोर कष्ट उठाना पड़ता है तथा उसके मान-सम्मान की हानि होती है।

अष्टमेश की दशा प्रत्येक प्रकार से जातक के लिये हानिकारक ही सिद्ध होती है।

९. नवमेश

नवमेश की दशा विरले लोगों के भाग्य में ही लिखी होती है, क्योंकि यह दशा जातक को अत्यन्त उच्चस्तर पर ले जाने में समर्थ होती है।

इस ग्रह की महादशा में जातक को तीर्थ यात्राएँ करने का सौभाग्य मिलता है। उसके भाग्योदय से वे सभी वस्तुएँ एवं पदार्थ, जिनका उन्हें अभाव देखना पड़ा है, पूर्ति होती है तथा आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठ लाभ रहता है।

राज्यपक्ष में उसे विशेष लाभ मिलता है तथा राज्य-सेवा में उन्नति, वेतनवृद्धि एवं मनचाहे पद की प्राप्ति होती है।

ऐसी योजना जो उसके जीवन का लक्ष्य है, पर जिसके पूर्ण होने में

व्याघात उपस्थित होते रहते थे—इस दशा में वह योजना कार्यान्वित होकर पूर्णता प्राप्त करती है, जिससे उसे यश, मान, धन एवं कीर्ति प्राप्त होती है।

नवमेश यदि सौम्यग्रह हो तो उसमें पापग्रह का अन्तर आने पर माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु, द्रव्य हानि एवं अपमान भोगना पड़ता है।

नवमेश पापग्रह हो और उसमें पापग्रह की ही अन्तर्दशा आ जाने पर या राहु, शनि, मंगल, सूर्य की अन्तर्दशा आ जाने पर जातक को विदेश यात्रा करनी पड़ती है।

१०. दशमेश

दशमेश की दशा भी जातक के लिए उन्नतिकारक होती है, इस दशा में बेरोजगार जातक निश्चय ही राज्यपद प्राप्त कर लेता है, नौकरी करने वाले व्यक्ति का प्रोमोशन एवं धनवृद्धि, पदवृद्धि एवं सम्मानवृद्धि होती है।

परन्तु शुभ दशमेश की दशा में जब पापग्रह का अन्तर आता है, तब मित्रों से विछोह, द्रव्यहानि एवं अपमान का मार्ग भी देखना पड़ता है।

यदि दशमेश नीच ग्रह हो और उसमें पापग्रह की अन्तर्दशा आ जाय तो उस दशा में जातक का मातृ-बिछोह, यश हानि एवं वित्त-क्षय संकट झेलना पड़ता है।

११. एकादशेश

एकादशेश की महादशा साधारणतः ठीक जाती है। इस दशा में धन लाभ, आय के नये स्रोत खुलना, व्यापारादि कार्यों से लाभ एवं पिता की मृत्यु होती है।

जब एकादशेश की महादशा में शनि, मंगल, सूर्य या राहु की अन्तर्दशा आती है, तब कृषि-कार्यों में हानि, धननाश एवं सम्मानहानि उठानी पड़ती है।

१२. द्वादशेश

द्वादशेश की महादशा में चिन्ताएँ, विपत्तियाँ एवं धनहानि जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। द्वादशेश की महादशा में जब

शनि, मंगल, राहु, सूर्य की अन्तर्दशा आती है, तब कुटुम्बियों में मतभेद, पुरुषार्थ की क्षति एवं अपमान के कड़वे घूंट पीने पड़ते हैं। द्वादशेश की महादशा में अष्टमेश की अन्तर्दशा आने पर विदेश-यात्राएँ होती हैं।

महादशा फल

महादशा काफी लम्बी अवधि की होती है और इस पूरी अवधि में जातक को एक-सा ही फल नहीं मिलता। साथ ही महादशानाथ का शुभ या अशुभ फल कब प्राप्त होगा, इसके जानने की रीति यह है कि यदि महादशानाथ प्रथम द्रेष्काण में हो तो दशा के प्रारम्भ में, द्वितीय द्रेष्काण में हो तो दशा के मध्य में तथा तृतीय द्रेष्काण में हो तो दशा के अंत में शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं।

परन्तु यदि महादशानाथ जन्म-समय में वक्री हो तो उल्टा फल जानना अर्थात् वक्री महादशानाथ प्रथम द्रेष्काण में हो तो दशा के अंत में, द्वितीय द्रेष्काण में हो तो दशा के मध्य में तथा तृतीय द्रेष्काण में हो तो दशा के प्रारम्भ में उसका शुभाशुभ फल समझना चाहिए।

नीचे की पंक्तियों में प्रत्येक ग्रह की महादशा का फल स्पष्ट किया जा रहा है।

सूर्य

सूर्य की महादशा जातक को यात्राएँ कराती है, विदेश यात्राओं के भी यह कई प्रसंग उपस्थित करती है तथा राजकार्य में पदोन्नति एवं धनवृद्धि के अवसर देती है। ऊँचे अधिकारियों के बीच परिचय-क्षेत्र बढ़ता है तथा जातक तन्त्र-मंत्र-यंत्रादि में पहले से अधिक विश्वास करने लगता है।

परन्तु इस दशा में मानसिक चिन्ता बराबर बनी रहती है। बन्धु-जनों में विरोध, स्त्री से कलह, पुत्रों को कष्ट तथा पिता की मृत्यु जैसे अवसर भी उसके सामने उपस्थित होते हैं। यदि सूर्य नीच राशिगत हो तो मस्तिष्क पीड़ा, शूल पीड़ा, उदर पीड़ा एवं नेत्र रोगों से भी दु:खी होना पड़ता है।

चन्द्रमा

चन्द्रमा की महादशा साधारणत: जातक के लिये सौभाग्यसूचक ही होती है। इस दशा में जातक तीर्थ-यात्राएँ करता है, धार्मिक कार्यों में उसकी रुचि बढ़ती है तथा उसके घर में विवाहादि शुभकार्य, मंगल-कार्य होते हैं। राज्य-सम्बन्धी कार्यों में उसे सम्मान मिलता है तथा नौकरी में उन्नति के योग बनते हैं।

चन्द्रमा की ही दशा में जातक चुनाव जीतकर विधानसभा या लोकसभा का सदस्य चुना जाता है तथा परीक्षा आदि कार्यों में वह पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

चन्द्रमा यदि सूर्य से अस्त या पापकर्तरी योग बनाता हो अथवा पापग्रहों के मध्य बैठा हो तो घर में कलह, क्रूर कार्यों से प्रसन्नता, सिर दर्द, मानसिक चिन्ताएँ तथा चित्त में खिन्नता बनी रहती है। व्यापारादि कार्यों में धननाश का योग भी साधारणत: देखा जाता है।

इस दशा में कन्या सन्तान तथा भ्रमण भी विशेष होता है।

मंगल

मंगल की महादशा धन योग बनाती है, परन्तु वह शुभ कार्यों की अपेक्षा क्रूर कार्यों से ही धनागम के योग बनाती है। इस दशा में जातक बान्धवों से विरोध करता है तथा मकान का बँटवारा या भूमि सम्बन्धी मामलों में वह कोर्ट-कचहरी चढ़ता है। मुकदमेबाज़ी होती है और उसमें विजय पाता है।

इस दशा में शस्त्र-भय तथा चोर-भय भी बना रहता है। शत्रुओं से, शस्त्रों से एवं झगड़ों से जातक अर्थलाभ करता है।

यदि मंगल वक्री, अस्त या नीच का हो तो पित्त-प्रकोप, रुधिर सम्बन्धी बीमारियाँ, ज्वर, पक्षाघात तथा मूर्च्छा जैसे रोग बने रहते हैं। पत्नी से कलह, भाइयों से वैमनस्य तथा अधिकारियों से उग्र मतभेद

हो जाते हैं तथा जातक को नई-नई चिन्ताएँ घेरे रहती हैं।

मंगल केन्द्रगत या त्रिकोणगत हो तो शुभ फल देता है। ऐसा मंगल अपनी दशा में भूमि-प्राप्ति, मकान, बनाना, कृषि-कार्यों से लाभ, मानसिक शांति तथा आय के कई स्रोत उपस्थित करता है।

बुध

बुध की दशा में जातक की व्यापार-वृद्धि होती है। दूर-दूर तक व्यापार फैलता है तथा नये-नये सम्बन्ध स्थापित होते हैं। घर में पुत्रोत्सव होता है, परिवार में शुभ समाचार मिलते हैं तथा लक्ष्मी का स्थायी निवास उसके घर में होता है।

बुध की महादशा में बेरोज़गार नौकरी करने लगता है, इस दशा में दूत-कार्य की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं तथा सोने-चाँदी के कार्य में जातक को विशेष लाभ होता है। इस दशा में जातक एक से अधिक उद्यम-उद्योग करता है तथा उसके आय के एकाधिक स्रोत होते हैं।

धार्मिक कार्यों में उसकी रुचि उत्तरोत्तर बढ़ती है, कृषि-कार्यों में लाभ होता है तथा कारीगरी के कार्यों में निपुणता प्राप्त करता है। उसका जीवन मधुर एवं सुखमय बनता है।

यदि बुध नीच, अस्त या वक्री हो अथवा ६, ८ या १२ वें भाव में बैठा हो तो जातक को वात, पित्त, कफादि से पीड़ा होती है और उसकी संचित पूंजी का नाश हो जाता।

बृहस्पति

गुरु की दशा में ज्ञान लाभ, परीक्षाएँ देना, परीक्षा में उत्तीर्ण होना तथा उच्च श्रेणी की प्रतियोगिताओं में जातक सफल होता है। राज्य कार्य से उसे विशेष लाभ होता है तथा उच्चाधिकारियों से उसकी जान-पहचान बढ़ती है।

वह देवार्चन, तीर्थाटन एवं धार्मिक कृत्यों में संलग्न होता है। उसके हाथों से यज्ञादि कार्य सम्पन्न होते हैं तथा वह श्रेष्ठ प्रकार के भोगों को भोगता है।

समाज में उसका सम्मान होता है तथा राज्यस्तर पर उसे पुरस्कार मिलता है।

नीच, अस्त, वक्री या व्यभिचारीगत गुरु की दशा में जातक के

कंठ में रोग तथा दाह आदि होता है तथा उसे परीक्षा में असफलता का सामना करना पड़ता है।

फिर भी कुल मिलाकर वृहस्पति की दशा जातक के जीवन में श्रेष्ठ ही रहती है।

शुक्र

शुक्र की महादशा में जातक की वे सभी भोग-विलासमयी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं, जो उसके मन में काफी अर्से से होती हैं। इस दशा में जातक को स्त्री, सन्तान एवं परिजनों का पूर्ण सुख मिलता है, भूषणादि बनते हैं तथा पूर्ण वाहन सुख प्राप्त होता है। इस दशा में जातक की कामचेष्टाएँ प्रबल हो जाती हैं तथा घर में नये प्राणी का जन्म होता है।

विद्यालाभ, संगीत में रुचि, ललित कलाओं में सम्मान प्राप्त करना तथा संगीत, चित्रकलादि में उच्चस्तरीय पुरस्कार प्राप्त करना इस दशा में सम्भव होता है। व्यापारादि कार्यों में यह दशा उत्तम कोटि की मानी गई है।

आकस्मिक द्रव्यलाभ भी इसी दशा में होता है। पितृधन, आय के विभिन्न स्रोत आदि भी इसी दशा में होते देखे गये हैं।

निर्बल शुक्र की दशा में जातक को गुप्तांगों के रोग, चित्त-सन्ताप, मित्रों का विरोध, स्त्री से कलह तथा धन हानि का सामना करना पड़ता है।

शनि

बलवान शनि की दशा में जातक को क्रय-विक्रय से लाभ होता है, नीच एवं निम्न स्तर के कार्यों से धन-संचय होता है। वह नैतिकता, एवं ईमानदारी को तिलांजलि दे देता है तथा येन-केन-प्रकारेण धन-संचय में लग जाता तथा इस प्रकार से धन-संग्रह कर भी लेता है।

शनि की दशा भाग्योदय में भी पूर्ण समर्थ होती है। इस दशा में वह कुल तथा वंश के नाम को उजागर करता हैं तथा उसकी चतुर्दिक कीर्ति फैलती है।

नीच या अस्त शनि का दशा में आलस्य, निद्रा, व्यभिचार, कफ, वात, पित्तादि रोग, स्त्री संग में विरक्ति, चर्म रोगादि होते हैं।

राजनीतिक कार्यों में शनि की दशा सहायक होती है।

राहु

राहु की दशा में साधारणतः माता-पिता की मृत्यु, पुत्र-वियोग, धन हानि, व्यापार में पतन तथा नौकरी में पदावनति होती देखी गई है। जातक का तबादला घर से बहुत दूर हो जाता है, उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है तथा शरीर में नित्य नये-नये रोग उत्पन्न होते रहते हैं। यदि राहु उच्च का हो जातक को अटूट सम्पत्ति मिलती है, मुकदमे में जीत होती है, चुनाव लड़ने पर विजयी होता है तथा मंत्रित्वपद प्राप्त होता है। राहु के दशावर्ष १८ होते हैं, उसमें से छठा तथा आठवाँ वर्ष अनिष्टकारी होता है।

केतु

राहु की अपेक्षा केतु की दशा अधिकतर शुभ होती। फिर भी इस दशा में जातक अपने कार्यों पर पछताता रहता है, वह जो भी योजनाएँ बनाता है, वे असफल रहती हैं। शारीरिक कष्ट, राज्य-कार्य में बार-बार स्थानान्तरण, मित्रों से बिगाड़, व्यर्थ का व्यय तथा धन हानि होती है, परन्तु शुभदृष्टि केतु की दिशा में विशेष अर्थ की प्राप्ति, घर में शान्ति, राज्य में उन्नति तथा परम सुख मिलता है।

अन्तर्दशा फल

पिछले अध्याय में प्रत्येक ग्रह की महादशा का फल स्पष्ट किया गया हैं। अब आगे की पंक्तियों में प्रत्येक ग्रह की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल स्पष्ट किया जा रहा है।

सूर्य की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

सूर्य में सूर्य

सूर्य में सूर्य की अन्तर्दशा आने पर जातक के मन में द्वंद्व, अशान्ति, खिन्नता एवं चिन्ता रहती है। यदि सूर्य उच्च का होकर १, ४, ५, ६, १० या ११ वें भाव में हो तो उसकी अन्तर्दशा में राज्य सम्मान, उन्नति पदोन्नति, धन लाभ, विवाह और कार्य सिद्धि होती है।

सूर्य में चन्द्र

सूर्य में चन्द्र की अन्तर्दशा आने पर रोगी व्यक्ति रोगमुक्त हो जाता है। स्त्री सुख, धन लाभ, कृषि कार्य तथा पुत्र लाभ होता है। यदि चन्द्र क्षीण या पापी हो अथवा पाप ग्रहों से युक्त हो तो धन-धान्य का नाश, स्त्री-पुरुषों को कष्ट तथा विपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

सूर्य में मंगल

सूर्य में मंगल की अन्तर्दशा आने पर कृषि कार्य में उन्नति होती है, नया मकान बनता है, सेना में उच्च पद मिलता है, व्यापार में लाभ तथा मुकदमे में विजय प्राप्त होती है। उच्च या स्वक्षेत्री मंगल की अन्तर्दशा विशेष लाभदायक रहती है।

सूर्य में राहु

राहु यदि १, ४, ५, ७, ६ तथा १२ वें भाव में हो तो व्यक्ति का धन नाश, सर्प काटने से मृत्यु, स्त्री-पीड़ा तथा पुत्र की ओर से चिन्ता होती है। ३, ६, ८, १० तथा ११ वें भाव में राहु स्थित हो तो उसकी अन्तर्दशा में राज्योन्नति, धनलाभ एवं विदेश यात्रा होती है।

सूर्य में बृहस्पति

सूर्य में बृहस्पति की अन्तर्दशा आने पर विवाह, पुत्रोत्पत्ति, मंगल-कार्य, पुत्र-पुत्रियों का विवाह, धन लाभ, पदोन्नति एवं शुभ कार्य होते हैं। गुरु ६ या १० वें अथवा ५ वें भाव में हो तो विशेष शुभ होता है। नीच, अस्त या वक्री ग्रह की दशा में रोग, धनहानि एवं मानसिक चिन्ता बढ़ी-चढ़ी रहती है।

सूर्य में शनि

१, ४, ५, ७, ६, तथा १० वें भाव में शनि हो तो उसकी अन्तर्दशा

में शत्रुनाश, कचहरी में जीत, धन लाभ तथा पुत्रोत्सव होता है। ६, ८ १२ नीच या वक्री शनि की अन्तर्दशा में पापकर्म में रत, वातरोग, कलह तथा कफादि रोग होते हैं।

सूर्य में बुध

उच्च, स्वराशिस्थ अथवा मित्रराशिस्थ बुध की अन्तर्दशा सुखदायक, सौभाग्यवर्धक एवं व्यापार में उन्नति करने वाली होती है, लेकिन द्वितीयेश तथा सप्तमेश बुध होने पर धन-नाश होता है।

सूर्य में केतु

सूर्य में केतु की अन्तर्दशा में मनस्ताप, कुटुम्बियों में वैमनस्य, शत्रु-भय, धनहानि, पदच्युति अथवा नेत्र-रोग होते हैं। केतु २, ३, ६, १०, ११ वें भाव में शुभ एवं सुखदायक होता है।

सूर्य में शुक्र

उच्च, मित्रक्षेत्री या स्वक्षेत्री शुक्र हो तो सम्पत्ति लाभ, राज्य सम्मान, यश लाभ एवं विविध सुख प्राप्त होते हैं। ६ठे तथा १२वें शुक्र हो तो विशेष धनदाता ग्रह बन जाता है। ८वें शुक्र की अन्तर्दशा बदनामी कराती है।

चन्द्र की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

चन्द्र में चन्द्र

चन्द्र उच्च का, स्वक्षेत्री या १, ५, ९, ११वें भाव में हो तो चन्द्र की अन्तर्दशा में यश लाभ, अक्षयकीर्ति, पुस्तक-लेखन, राज्योन्नति, कन्या जन्म, कन्या-विवाह एवं मंगलकार्य सम्पन्न होते हैं। इस दशा में उत्तम व्यक्तियों से परिचय होता है। ६, ८वें स्थान में स्थिति चन्द्र का अन्तर्दशा में व्यर्थ भ्रमण, स्थानान्तरण, व्यर्थ-व्यय, आलस्य, खिन्नता एवं राज्य विरोध होता है। माता को दारुण कष्ट अथवा माता की मृत्यु भी इस दशा में होती है। यदि चन्द्र सप्तमेश अथवा द्वितीयेश हो तो दुर्घटना होती है।

चन्द्र में मंगल

चन्द्र में मंगल की अन्तर्दशा उत्तम रहती है। मंगल ३, ६ ११वें स्थान में या उच्च का अथवा स्वक्षेत्री हो तो जातक इस दशा में राज्य-

वृद्धि, पदवृद्धि, समाज में सम्मान तथा विजय प्राप्त करता है। यदि मंगल पाप ग्रहों के साथ या शत्रु क्षेत्री हो तो कृषि हानि, बन्धु-वियोग एवं विभिन्न कष्ट झेलने पड़ते हैं।

चन्द्र में राहु

चन्द्र में राहु की दशा मनस्ताप, अर्थक्षय एवं चिन्ताएँ बढ़ाने वाली होती हैं। यदि राहु पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो कार्यसिद्धि होती है।

चन्द्र में वृहस्पति

चन्द्र में वृहस्पति की दशा श्रेष्ठ रूप से व्यतीत होती है। इस दशा में राज्य-सम्मान, धनागम एवं कीर्ति प्राप्त होती है। यदि गुरु नीच, अस्त या वक्री हो तो पदच्युति, अर्थ-नाश, पुत्र-संताप एवं दुःख प्राप्त होता है। साधारणतः चन्द्र में वृहस्पति की अन्तर्दशा उत्तम ही होती है।

चन्द्र में शनि

चन्द्र में शनि की अन्तर्दशा आने पर उदर-पीड़ा, मस्तिष्क-शूल, मातृ-वियोग, स्वजन-विछोह तथा कई कष्टों का सामना करना पड़ता है। यदि शनि त्रिकोणस्थ हो तो धन-धान्य की वृद्धि एवं धनस्रोत बनाने में सहायक होता है।

चन्द्र में बुध

चन्द्र में बुध की दशा आने पर ननिहाल या माता से धनलाभ होता है। पशुलाभ, पुस्तक लेखन, उत्तम कार्य, विद्या लाभ, परीक्षा में सफलता एवं प्रतियोगिता में विजय-लाभ करता है।

चन्द्र में केतु

चन्द्र में केतु की अन्तर्दशा धन-धान्य की वृद्धि करने वाली, स्त्री-सुख, संतान-सुख एवं धन लाभ कराने में सहायक होती है। यदि केतु पाप ग्रह से दृष्ट हो तो रोग तथा धनहानि की संभावनाएँ उत्पन्न करता है।

चन्द्र में शुक्र

चन्द्र में शुक्र की अन्तर्दशा आने पर राज्य में उच्च पद प्राप्ति, चुनाव में सफलता, पुत्र-सन्तान-वृद्धि, नूतन गृह निर्माण, स्त्री-सुख तथा विविध भोग मिलते हैं। यदि शुक्र ६ ठे या १२ वें हों तो विशेष अर्थलाभ होता है। नीच, वक्री, अस्त या व्यभिचारगत शुक्र की अन्तर्दशा कलह,

व्याधि, असत्य दोषारोपण तथा मानसिक संताप उत्पन्न करती है।

चन्द्र में सूर्य

सूर्य उच्च का, स्वक्षेत्री या प्रवल हो तो इस दशा में धन लाभ, व्यापार वृद्धि, राज्यगौरव, सुख एवं उन्नति का सुयोग मिलता है। सूर्य ६, ८, १२ वें भाव में हो तो नेत्र पीड़ा, पिता की मृत्यु तथा परदेशगमन भी होता देखा गया है।

मंगल की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

मंगल में मंगल

मंगल की महादशा में जव मंगल की अन्तर्दशा आती है तो परिवार में विरोध, घर में कलह, राज्य-चिन्ता, नौकरी से मुअत्तिली या पदावनति, बना-बनाया काम विगड़ जाना, शरीर में गर्मी से सम्बन्धित रोग, क्रोध का आधिक्य तथा मानसिक चिन्ता होती है, परन्तु यदि मंगल त्रिकोणेश या त्रिकोणस्थ हो तो इस दशा में वैभव प्राप्ति, धनागम, पुत्र लाभ एवं सुख सुविधाएँ मिलती हैं। इसके साथ ही भूमि-मकान सम्वन्धी क्रय-विक्रय, कृषि में लाभ तथा यदि जातक पुलिस या मिलट्री सेवा में हो तो श्रेष्ठ पदलाभ प्राप्त होता है।

मंगल में राहु

राहु मूल त्रिकोण, तीसरे छठे या ग्यारहवें भाव में तो इस दशा में विशेष वीरता का प्रदर्शन, शत्रुओं का संहार, कृषि लाभ, मुकदमे में जीत तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। इसके विपरीत यदि राहु शत्रुक्षेत्री या पापग्रहों से युक्त हो तो इस दशा में जेल यात्रा, सर्प-बाधा, क्षय रोग तथा धन का नाश होता है।

मंगल में बृहस्पति

उच्च, स्व, मूलत्रिकोण, केन्द्र तथा ५,९वें भाव में गुरु हो तो इसकी अन्तर्दशा में उच्च कोटि का ग्रंथ लेखन, यश प्राप्ति, धन लाभ, पुत्र लाभ तथा (अविवाहित होने पर) विवाह होता है। इसके साथ ही परिवार तथा जाति में सम्मान, आरोग्य, घर में प्रसन्नता एवं राज्य में सम्मान मिलता है। यदि गुरु ६, ८, १२ वें पापी ग्रहों के साथ या दृष्ट हो तो घर में चोरी, राज्यक्षय, पदावनति, संतान-बाधा एवं भ्रातृ

नाश होता है।

मंगल में शनि

मंगल में शनि का अन्तर आने पर स्त्री-बाधा, सन्तान पीड़ा, शरीर कष्ट, मुकदमे में हार, धन-हानि एवं स्थानान्तरण होता है। शनि केवल मूलत्रिकोणगत हो तभी लाभदायक होता है, ऐसा अनुभव में आया है।

मंगल में बुध

बुध के अन्तर में सुन्दर कन्या का जन्म, धार्मिक, यश, लाभ, प्रेम तथा न्याय मिलता है। यदि बुध नीच, अस्त अथवा वक्री हो तो इस दशा में पैरों में पीड़ा, मानसिक असन्तोष, गृह-कलह तथा स्त्री नाश की सूचना मिलती है।

मंगल में केतु

मंगल में केतु का प्रत्यन्तर आने पर पेट सम्बन्धी रोग, बान्धवों से विग्रह, दुष्टों से शारीरिक क्षति तथा अग्नि बाधा से सम्पत्ति नाश होता देखा गया है। यदि केतु शुभ ग्रहों के साथ या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो यश वृद्धि तथा सेना में उच्चपद प्राप्ति होती है।

मंगल में शुक्र

केन्द्र में, त्रिकोण में, स्व, उच्च या ६ ठे, १२ वें भाव में शुक्र हो तो इस अन्तर्दशा में राज्य लाभ, आभूषण प्राप्ति, सुख प्राप्ति तथा राज्य सम्मान मिलता है। इस दशा में प्रेम-सम्बन्ध भी बढ़ते हैं तथा व्यक्ति अधिक भावुक, कल्पनाशील एवं मनमौजी तथा शानशौकत पर जरूरत से ज्यादा व्यय करने वाला बन जाता है। शुक्र २, ८ में हो तो बन्धु-नाश, धन नाश तथा परेशानियाँ उत्पन्न होती हैं।

मंगल में सूर्य

मंगल में सूर्य की अन्तर्दशा में यदि सूर्य कारक ग्रह हो तो वाहन लाभ, पद-वृद्धि, धन-लाभ आदि होते हैं। अन्यथा मेरे अनुभव में अधिकतर इसके बुरे फल ही प्राप्त हुए हैं।

मंगल में चन्द्र

मंगल में चन्द्र की अन्तर्दशा में उच्च पद प्राप्ति, आकस्मिक धन लाभ, रत्न-प्राप्ति, सम्मान तथा व्यापार में वृद्धि होती है। ६, ८, १२

वें भाव में चन्द्र धन नाश, कलह तथा अकाल मृत्यु का कारण भी बनता है।

राहु की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

राहु में राहु

राहु में राहु की अन्तर्दशा स्वास्थ्य में गिरावट, मानसिक तनाव, चिन्ताएँ, अकाल मृत्यु, स्थानान्तरण, पदावनति, अकाल-मृत्यु का योग उपस्थित करती है। ७ वें भाव में राहु हो तो स्त्री मरण तथा दूसरे भाव में हो तो प्रबल धन क्षय का कारण बनता है।

राहु में बृहस्पति

राहु में बृहस्पति की अन्तर्दशा में रोग मुक्ति, स्वास्थ्य लाभ, ईश्वराराधन, धन प्राप्ति, पुस्तक लेखन तथा यश प्राप्ति होती है। नीच, अस्त तथा वक्री गुरु की अन्तर्दशा अशुभ परिणामसूचक है।

राहु में शनि

राहु में शनि की अन्तर्दशा आने पर दूर जगह पर स्थानान्तरण, अफसरों से विरोध तथा पुत्रों से कलह होती है। द्वितीयेश या सप्तमेश शनि हो तो अकाल मृत्यु होती है। त्रिकोणस्थ शनि शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो लाभ, सम्मान तथा राजनीतिक कार्यों में सफलता मिलती है।

राहु में बुध

राहु में बुध की अन्तर्दशा में व्यापार वृद्धि राजकीय ठेके, यश-लाभ, विवाहोत्सव तथा शुभ समाचार मिलते हैं, पर यदि बुध ६, ८, १२ वें भाव में, पापीग्रहों के साथ या पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसी दशा में राजरोष, पुत्रवियोग, हानि तथा कलह वृद्धि होती है।

राहु में केतु

केतु की अन्तर्दशा में मानहानि, पशुओं का मरण, स्वजन बिछोह, नाना प्रकार के उपद्रव तथा शारीरिक रोग होते हैं। यदि केतु शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो भूमि लाभ अथवा कृषि लाभ होता है।

राहु में शुक्र

१, ४, ५, ६, १२ वें भाव में शुक्र हो तो इस दशा में ,पुत्रोत्पन्न, वैभव प्राप्ति, विवाह तथा घर में मांगलिक कार्य होते हैं। यदि शुक्र

नीच, अस्त, वक्री या पापाचारी हो तो पत्नीमरण, बन्धु-नाश, धन हानि एवं बदनामी होती है। शुक्र यदि दूसरे तथा सातवें घर का स्वामी हो तो दुर्घटना की आशंका कही जा सकती है।

राहु में सूर्य

राहु में सूर्य की अन्तर्दशा आने पर धन वृद्धि, परदेशगमन, राज्य से लाभादि होता है। यदि सूर्य ६, ८, १२ वें भाव में हो तो नेत्र पीड़ा या ऑपरेशन होता है।

राहु में चन्द्र

राहु में चन्द्र की अन्तर्दशा में कलह, बन्धु-वियोग, धनागम, अन्न-लाभ एवं सुख-सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। मुकदमे में यह दशा हानि प्रदान करती है।

राहु में मंगल

राहु में मंगल की अन्तर्दशा आने पर नाना प्रकार के उपद्रव, थकावट, मानसिक चिन्ता, बाधाएँ, स्मरणशक्ति का ह्रास, परीक्षा में असफलता तथा पदावनति होती है।

बृहस्पति की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

बृहस्पति में बृहस्पति

बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा आने पर राज्य-कृपा, नौकरी में तरक्की, जीवन के सभी कार्यों में सफलता, विद्याध्ययन व उसमें सफलता, नौकरी के सम्बन्ध में इन्टरव्यू व उसमें सफलता, पुस्तक लेखन, सम्मान प्राप्ति, विवाह एवं धन लाभ आदि होते हैं। नीच राशिस्थ, वक्री, अस्त या ६, ८, १२ वें गुरू हो तो दुःख, स्त्री-चिन्ता, परेशानी होती है। मेरा अनुभव यही रहा है कि गुरू की श्रेष्ठ स्थिति होने पर भी गुरु की महादशा में गुरु का अन्तर ठीक नहीं रह पाता।

बृहस्पति में शनि

बृहस्पति में शनि आने पर ज्वर, रक्त-बाधा, वेश्यागमन, मद्याति-रेकता, शारीरिक दौर्बल्य, व्ययाधिक्य एवं मानसिक परेशानियाँ दिनोंदिन बढ़ती रहती हैं। हाँ, यदि शनि मूलत्रिकोणस्थ, स्व या उच्च

राशि में हो तो इस दशा में सम्मान, चुनाव में विजय, मुकदमे में जीत, शत्रुओं पर विजय, निरोगता एवं शुभ फलदायक होता है।

बृहस्पति में बुध

बृहस्पति में बुध की अन्तर्दशा आने पर पुत्र लाभ, धारा सभा का सदस्य, व्यापार वृद्धि, व्यापार प्रसार, नये-नये सम्बन्ध तथा अधिकारी पद प्राप्त होता है। बुध नीच, अस्त, वक्री या ६, ८, १२ वें भाव में हो तो स्त्री-चिन्ता, कष्ट एवं दुःख होता है। द्वितीयेश या सप्तमेश बुध भयंकर मानसिक कष्ट प्रदान करता है।

बृहस्पति में केतु

इस अन्तर्दशा में राज्यकोष, बन्धन, धननाश, तीर्थ यात्रा, मांगलिक कार्य, भूषणादि का निर्माण, वाहन प्राप्ति एवं देवाराधन होता है।

बृहस्पति में शुक्र

बलवान् शुक्र हो तो राज्य लाभ, प्रिय या प्रिया मिलन, अवैध सम्बन्धों में दृढ़ता, पत्नी प्रेम, विवाह, कन्या सन्तान का जन्म, सौन्दर्य-प्रियता, ऐश-आराम की वस्तुओं पर व्यय तथा घर में नवीन कार्य सम्पन्न होते हैं, लेकिन यदि शुक्र नीच, अस्त, वक्री, पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो स्थानान्तरण, परदेशगमन, कष्ट, बन्धु विरोध, पत्नी-पीड़ा आदि होते हैं। यदि शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तमेश हो तो व्यक्ति निरन्तर परेशानियों से ग्रस्त रहता है।

बृहस्पति में सूर्य

सूर्य के अन्तर में तत्काल लाभ, राज्य में उन्नति, वाहन प्राप्ति, पराक्रम, प्रभुता, ऐश्वर्य वृद्धि तथा पुत्र लाभ होता है, परन्तु यदि सूर्य ६, ८, १२ वें भाव में हो तो दृष्टि न्यूनता, रोग तथा ऑपरेशन में मदद करता है।

बृहस्पति में चन्द्र

बृहस्पति की महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा आने पर घर में श्रेष्ठ मांगलिक कार्य, सम्मान वृद्धि, पुत्र-पौत्र जन्म तथा सत्कार्य होते हैं। वैद्यक में प्रतिष्ठा तथा जाति में सम्मान होता है। इस दशा में उच्च पद भी प्राप्त होने की सम्भावनाएँ होती हैं।

वृहस्पति में मंगल

वृहस्पति में मंगल की दशा तत्काल सिद्धि, कार्य सफलता, भूमि लाभ, भूमि-क्रय-विक्रय, कृषि में उन्नति, मिलों के व्यापार में लाभ तथा तीर्थ यात्रा एवं नवीन आविष्कारों से राज्य अथवा देश व्यापी प्रसिद्धि प्राप्त होती है, परन्तु यदि मंगल ८ वें या १२ वें भाव में हो तो उत्साहहीनता, ज्वर, गुदा, रोग, रक्त सम्बन्धी बीमारियाँ तथा परेशानियाँ उत्पन्न कर देता है।

वृहस्पति में राहु

वृहस्पति में राहु की दशा आने पर पीड़ा, गत्यावरोध, ज्वर तथा विविध बाधाएँ आती हैं। यदि राहु कारक ग्रह हो तो विदेश यात्रा, ख्याति, सम्मान तथा विद्यालाभ होता है।

शनि की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

शनि में शनि

शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा आने पर नाना प्रकार के क्लेश एवं बाधाएँ, अधिकारियों से मतभेद, ग्रह कलह, दमा, नाड़ी सम्बन्धी बीमारियाँ, स्वजन बिछोह तथा राज्य में पदावनति होने की प्रबल सम्भावनाएँ होती हैं। यदि शनि स्वगृही, उच्च या मूल त्रिकोण-गत हो तो इस दशा में विजय, शत्रुओं पर सफलता, मुकदमे में जीत, ख्याति, उच्च पद प्राप्ति, विदेश-गमन, विदेश सम्पर्क तथा पुत्र प्राप्ति होती है।

शनि में बुध

इस दशा में धन-धान्य की वृद्धि, सम्मान-लाभ, सुयश, कीर्ति, धन लाभ, व्यापारिक प्रसार, व्यापारिक सफलताएँ तथा शारीरिक निरोगिता प्राप्त होती है। यदि बुध अस्त या वक्री हो तो विलम्ब से कार्य-सिद्धि, प्रयत्न करने पर सफलता तथा उच्चाधिकारियों से मित्रता होती है।

शनि में केतु

शनि में केतु की दशा लगभग खराब हो जाती है। इस दशा में राज्य भंग, स्थानान्तरण, पदच्युति, स्थानान्तरण, बन्धु वियोग, स्त्री-

पीड़ा एवं कुख्याति प्राप्त होती है। यदि केतु शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो उपर्युक्त अशुभ फल में कुछ न्यूनता आ आती है।

शनि में शुक्र

उच्च, स्व, मूलत्रिकोणगत शुक्र हो तो इस दशा में आरोग्य लाभ, धन प्राप्ति, कल्याण, उन्नति, राज्य में प्रोमोशन, उच्च पद प्राप्ति, प्रसंन्नता एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। यदि शुक्र द्वाशस्थ हो तो विदेश यात्रा होती है तथा अतुल धन मिलने की संभावनाएँ बनती हैं। यदि शुक्र ८ वें हो तो मरण, बन्धु वियोग, रोग तथा नाना प्रकार के कष्ट झेलने पड़ते हैं।

शनि में सूर्य

शनि में सूर्य की अन्तर्दशा आने पर पुत्र की प्राप्ति, पद वृद्धि, राज्य-सम्मान, जीवन के रहन-सहन के परिवर्तन तथा यश की प्राप्ति होती है। यदि सूर्य ६, ८, १२ वें हो तो घर में क्लेश, बँटवारा, भाइयों से प्रवल विरोध, नये-नये शत्रु उत्पन्न होना तथा जठराग्नि एवं नेत्र-रोग हो जाता है।

शनि में चन्द्र

शनि में चन्द्र की दशा में धन-नाश, पुत्र-विरोध, माता की मृत्यु तथा पेट सम्बन्धी रोग होते हैं। हाँ, यदि चन्द्र कारक ग्रह हो तो व्यक्ति को आरोग्य लाभ, सौभाग्य वृद्धि एवं कारोबार में वृद्धि होती है तथा पूर्ण धनलाभ होता है।

शनि में मंगल

उस दशा में जातक विविध भोगों को भोगता है। नौकरी में पद-वृद्धि तथा बकाया धन-राशि की प्राप्ति होती है। नये गृह का निर्माण भूमि खरीद-बिक्री से लाभ, नये-नये कारखानों की स्थापना एवं व्यापार में वृद्धि होती है। यदि मंगल अकारक तथा ८ वें अथवा १२ वें भाव में हो तो रोग-वृद्धि, गुप्तांग पीड़ा, स्थानच्युति, नाना शत्रुओं द्वारा उत्पन्न भय, मित्रों का वियोग तथा मरणान्तक कष्ट प्राप्त होता है।

शनि में राहु

इस दशा में कलह, रक्त-दूषितता, विविध प्रकार की चिन्ताएँ, पर-देश-गमन तथा धन नाश होता है। यदि राहु कारक ग्रह हो या ३ रे

अथवा छठे भाव में राहु स्थित हो तो अचानक धन प्राप्ति एवं विविध सुख प्राप्त होते हैं।

शनि में बृहस्पति

इस दशा में यदि बलवान गुरु उच्च, स्वक्षेत्री या कारक हो तो मनोरथ सिद्धि, सम्मान प्राप्ति, पुत्र लाभ, पुस्तक लेखन तथा नवीन कार्य होते हैं, परन्तु यदि बृहस्पति वक्री, अस्त या अकारक ग्रह हो तो कुष्ट रोग, सन्तान-बाधा, पत्नी पीड़ा एवं पदच्युति होने की संभावनाएँ प्रबल होती हैं।

बुध की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

बुध में बुध

बुध में बुध की अन्तर्दशा में व्यापार की विशेष वृद्धि देखी गई है। परदेश से सम्पर्क स्थापित होता है तथा चतुर्दिक कीर्ति एवं प्रशंसा फैलती है। इस दशा में श्रेष्ठ विद्यालाभ, प्रतियोगिता में सफलता एवं वैभव प्राप्ति होती है, लेकिन यदि बुध अकारक, नीच, अस्त या वक्री हो तो विविध कष्ट, स्थानान्तरण एवं हानि होती है।

बुध में केतु

बुध में केतु की दशा आने पर अल्प लाभ, नवीन चिन्ताएँ, शारीरिक बाधा, मानसिक परेशानियाँ एवं यश की प्राप्ति होती है। यदि केतु कारक ग्रह होकर दूसरे भाव में स्थित हो तो विशेष धन प्राप्ति योग बनता है।

बुध में शुक्र

इस दशा में विविध वाहनों की उपलब्धि, सम्पत्ति लाभ, विद्या द्वारा ख्याति, बँटवारे से लाभ, समृद्धिपूर्ण जीवन बनता है। यदि शुक्र ८ वें भाव में हो तो पत्नी का मरण, नाना प्रकार की झंझटें तथा शारीरिक कष्ट होता है, लेकिन यदि शुक्र द्वितीयेश अथवा अष्टमेश हो तो एक्सीडेंट का खतरा रहता है।

बुध में सूर्य

बुध महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा आने पर श्रेष्ठ रहती है। यदि लग्नेश-सूर्य की युति हो तो पद वृद्धि, सम्मानवृद्धि, राज्य में लाभ तथा पुस्तक द्वारा विशेष पुरस्कार मिलता है। यदि रवि-मंगल की युति हो

तो नवीन गृह का निर्माण होता है। सूर्य ८ वें, १२ वें भाव में हो तो दृष्टि-क्षीणता का शिकार होना पड़ता है।

बुध में चन्द्र

इस दशा में व्यक्ति को विशेष आर्थिक लाभ, व्यापार वृद्धि, सामाजिक सफलताएँ, कन्या लाभ तथा राज्य में तरक्की होती है, लेकिन यदि चन्द्र क्षीण या अष्टम भाव में हो तो उसे सहयोगी द्वारा ही धोखा खा जाने से धन हानि की प्रबल चिन्ता वहन करनी पड़ती है।

बुध में मंगल

बुध में मंगल की दशा आ जाने पर कृषि कार्यों से लाभ, भूमि लाभ, नवीन ग्रह का निर्माण, पुस्तक लेखन द्वारा यश प्राप्ति तथा मुकदमे में जीत होती है। यदि मंगल नीच या वक्री हो तो शत्रुओं से पराजय, हीनता की वृत्ति का उदय, मुकदमे में हार तथा दुर्घटना होती है।

बुध में राहु

इस दशा में जातक विविध कष्ट भोगता है। यदि राहु कारक होकर ३, ६ ठे भाव में हो तो धन लाभ, राज्य सम्मान एवं चुनाव में विजयश्री प्राप्त होती है।

बुध में बृहस्पति

इस दशा के आने पर जातक को विशेष आर्थिक लाभ होता है तथा उसके व्यापार का प्रसार दूर-दूर तक हो जाता है। नये-नये सम्बन्ध स्थापित होते हैं, जो आगे चलकर विशेष लाभदायक बनते हैं। इसी दशा में पुत्र लाभ, ग्रंथ लेखन, ग्रंथ प्रकाशन आदि कार्य भी होते हैं। यदि गुरु नीच का या ८ वें भाव में हो तो जातक मरणान्तक कष्ट भोगता है।

बुध में शनि

उच्च, स्वराशिस्थ, मूल त्रिकोण या कारक शनि हो तो इस दशा में पदवृद्धि, राज्य सम्मान एवं चतुर्दिक प्रशंसा होती है, परन्तु यदि शनि ८, १२ वें भाव में हो या अस्त, वक्री या शत्रु क्षेत्री हो तो नाना प्रकार की चिन्ताएँ, व्याधियाँ तथा दुःखों की प्राप्ति होती है।

केतु की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

केतु में केतु

केतु में केतु की दशा में जातक का स्थानान्तरण होता है। वह चारों ओर से परेशान हो जाता है, आर्थिक दृष्टि से उसे कई चिन्ताएँ आ घेरती हैं तथा भाइयों से विग्रह एवं राज्य में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं, परन्तु यदि केतु द्वितीय भावस्थ हो तो प्रोमोशन से धन लाभ होता है। यदि केन्द्र-त्रिकोण में हो तो व्यापार में लाभ होता है।

केतु में शुक्र

केतु में शुक्र की दशा आने पर व्यापार में लाभ, नौकरी में मनोवांछित स्थान पर स्थानान्तरण, राज्य में बाधाएँ, मानहानि एवं पुत्रों की ओर से कष्ट प्राप्त होता है। यदि शुक्र द्वादशस्थ या कारक ग्रह हो तो इस दशा में लेखन, प्रकाशन, यश लाभ एवं सम्मान वृद्धि होती है।

केतु में सूर्य

केतु में सूर्य की दशा अत्यन्त साधारण रहती है। इस दशा में स्थान भ्रष्टता, अधिकारियों से विरोध, गलतफहमियाँ, स्थानान्तरण, शारीरिक कष्ट एवं नाना प्रकार के कष्ट झेलने पड़ते हैं। सूर्य द्वितीयेश हो तो व्यक्ति कई रोगों से ग्रस्त होकर दुःखी होता है।

केतु में चन्द्र

केतु में चन्द्र की अन्तर्दशा सर्वसुखकर होती है। जातक को समाज में विशेष सम्मान मिलता है तथा वह चतुर्दिक ख्याति प्राप्त करता है। इस दशा में कन्या लाभ, घर में मांगलिक कार्य, भूमि लाभ, नये-नये उद्योगों की स्थापना एवं धन संचय में सहायता मिलती है। यदि चन्द्र नीच राशिस्थ हो तो उपर्युक्त फल में न्यूनता रहती है।

केतु में मंगल

केतु में मंगल की अन्तर्दशा में घर का मकान बनता है, भूमि क्रय-विक्रय से लाभ होता है तथा कृषि कार्य में विशेष उन्नति होती है। मंगल कारक ग्रह हो तो मुकदमे में विजय, व्यापार में वृद्धि एवं श्रेष्ठ धन लाभ होता है। अकारक, अस्त, नीच या वक्री भौम हो तो पागलपन, हिस्टीरिया, जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग तथा कारोबार में हानि होती है।

केतु में राहु

केतु में राहु की दशा निकृष्ट होती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मरणान्तक कष्ट देती है। शीत ज्वर, कलह आदि से जातक घबरा जाता है। व्यापार में हानि, नौकरी में पदावनति एवं अर्थ प्राप्ति में कई प्रकार की बाधाएँ उपस्थित हो जाती हैं।

केतु में बृहस्पति

केतु में बृहस्पति की अन्तर्दशा में परदेशगमन, स्त्री वियोग एवं सम्मान क्षति होने की संभावनाएँ बनती हैं। यदि गुरु उच्च, कारक, शुभ एवं मूल त्रिकोणगत हो तो इस दशा में सम्मान, ख्याति लाभ, ग्रंथ लेखन, धनागमन के विविध स्रोत बनते हैं।

केतु में शनि

इस दशा में जातक को साधारण सुख, मनोकामना पूर्ति एवं सम्मान वृद्धि होती है। यदि शनि अकारक एवं नीच राशिगत हो तो बन्धुओं से विरोध, स्वदेश त्याग, विरोधियों से अनबन एवं शारीरिक क्षति तथा धनहानि होती है।

केतु में बुध

इस दशा में बान्धवों से प्रीति, धनागम एवं विद्या-व्यापार से सुयश, सफलता एवं कीर्ति प्राप्त होती है।

शुक्र की महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

शुक्र में शुक्र

१, ४, ७, १०, ५, ९, ६ या १२ वें भाव में बलवान होकर शुक्र बैठा हो तो शुक्र महादशा में शुक्र के अन्तर में जातक विविध भोगों का भोग करता है, उसकी कई इच्छाएँ इस दशा में आकर पूरी होती हैं। इसी दशा में जातक को कन्या सन्तान, लेखन कार्य में सफलता, पुरस्कार तथा राज्यव्यापी कीर्ति भी प्राप्त होती है। नीच, अस्त या वक्री शुक्र हो तो राज्य भय, आर्थिक चिन्ता, बन्धु विरोध, स्त्री-मरण तथा सन्तान बाधा उपस्थित होती है।

शुक्र में सूर्य

इस दशा में जातक कलह, सन्तोष एवं दरिद्रता से घिरा रहता है।

नित्य नई समस्याएँ उसके सामने उपस्थित होती हैं और वह उसका निराकरण करते-करते थक जाता है। यदि सूर्य शुभ, उच्च या कारक ग्रह हो तो धनलाभ, विदेशयात्रा, व्यापार वृद्धि, पितृ सुख एवं मांगलिक कार्य होते हैं।

शुक्र में चन्द्र

शुक्र में चन्द्र की दशा जातक के लिए सौभाग्यदायक होती है। वह मान-सम्मान का अधिकारी बनता है, घर में कन्या का जन्म होता है, व्यापार में वृद्धि, डाक्टरी या वैद्यकके कार्य में पूर्ण सफलता तथा उच्चपद प्राप्त होता है। यदि चन्द्र ३, ४, ६, ८, १२वें भाव में हो तोजातक को प्रत्येक कार्य में असफलता मिलती है।

शुक्र में मंगल

मंगल की अन्तर्दशा में जातक नये मकान का निर्माण करता है। उसे कृषि कार्यों में सफलता मिलती है तथा पुलिस मिलिटरी में हो तो उच्च पद प्राप्त होती है। यदि मंगल क्षीण हो तो कष्ट, धनहानि तथा आकस्मिक दुर्घटना होती है।

शुक्र में राहु

बलवान राहु की अन्तर्दशा में जातक चुनाव में विजयी होता है, सफलता उसके चरण चूमती है तथा मंत्री पद प्राप्त करने में सफल होता है। क्षीण तथा पाप ग्रहों से दृष्ट राहु की दशा में नाना प्रकार के कष्ट भुगतने पड़ते हैं।

शुक्र में वृहस्पति

बृहस्पति की अन्तर्दशा में जातक को धन-लाभ, यश प्राप्ति, मातृपितृ सुख तथा नित्य नये सुखद समाचार सुनने को मिलते हैं। यदि गुरु ६, ८, १२वें भाव में हो तो कष्ट एवं चोर भय होता है।

शुक्र में शनि

शनि की अन्तर्दशा में आलस्य, क्लेश, व्याधियाँ, प्रगति के मार्ग में बाधाएँ एवं धन हानि होती है। यदि शनि कारक एवं शुभ ग्रह हो तो उक्त फल में कुछ सुधार समझना चाहिए।

शुक्र में बुध

बुध की अन्तर्दशा में जातक को साहित्यिक कार्यों द्वारा धन प्राप्ति,

कीर्ति लाभ, यशागम तथा जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है। बुध नीच, अस्त, वक्री या अकारक ग्रह हो तो इस दशा में अपकीर्ति, कुख्याति एवं अल्प लाभ ही होता है।

शुक्र में केतु

शुक्र महादशा में केतु की अन्तर्दशा आने पर कलह, बन्धु-वियोग, सन्तान-बाधा, मांगलिक कार्यों में रुकावट तथा धन नाश होता है, परन्तु यदि केतु कारक ग्रह हो तो इस अन्तर्दशा में जातक विविध स्रोतों से धन संचय करता हुआ कीर्ति लाभ करता है।

प्रत्यन्तर्दशा फल

पिछले अध्याय में मैंने प्रत्येक ग्रह में अन्तर्दशा फल का विवेचन किया है प्रत्यन्तर्दशा यद्यपि स्वल्पावधि की ही होती है, परन्तु इसका महत्त्व निर्विवाद रूप से अत्यधिक है, अतः प्रत्यन्तर्दशा को फालगम करते समय दृष्टि से ओझल रखना न उचित है और न व्यावहारिक ही।

इस पुस्तक में प्रत्यन्तर्दशा का विस्तृत विवेचन करना संभव नहीं, लेकिन मैं प्रत्येक लग्न के कारक ग्रह स्पष्ट कर देता हूँ। पाठकों को चाहिए कि जन्म कुण्डली में लग्न राशि तथा उससे सम्बन्धित कारक ग्रह देख लें। कारक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा सर्वोत्तम होती है तथा शुभ ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा उत्तम। इसी प्रकार से पाठक प्रत्यन्तर्दशा का ज्ञान कर सफलता के सन्निकट पहुँच सकते हैं।

।। कारक ग्रह चक्रम ।।

क्रम	लग्न	कारक ग्रह	शुभ	सम	अशुभ	मारक
१	मेष	वृहस्पति सूर्य मंगल	—	चन्द्र	शुक्र बुध शनि	मंगल बुध
२	वृष	शनि	बुध सूर्य मंगल	शुक्र	चन्द्र वृहस्पति	वृहस्पति मंगल
३	मिथुन	शुक्र	शनि	बुध चन्द्र	मंगल गुरु सूर्य	गुरु चन्द्र
४	कर्क	मंगल गुरु	—	सूर्य चन्द्र शनि	बुध शुक्र	शनि सूर्य
५	सिंह	सूर्य मंगल	—	शनि चन्द्र गुरु	बुध शुक्र	बुध गुरु
६	कन्या	शुक्र	—	सूर्य बुध शनि	मंगल गुरु चन्द्र	गुरु मंगल
७	तुला	शनि	बुध शुक्र	मंगल	सूर्य चन्द्र बृहस्पति	शुक्र मंगल
८	वृश्चिक	चन्द्र	सूर्य गुरु	शनि मंगल	शुक्र बुध	शुक्र गुरु
९	धनु	सूर्य मंगल	—	चन्द्र बृहस्पति	बुध शुक्र शनि	बुध शनि

क्र.-सं.	लग्न	कारकग्रह	शुभ	सम	अशुभ	मारक
१०	मकर	शुक्र	बुध शनि	सूर्य	चन्द्र गुरु मंगल	चन्द्र सूर्य
११	कुंभ	शुक्र	सूर्य मंगल शनि	बुध	चन्द्र बृहस्पति	गुरु बुध
१२	मीन	मंगल चन्द्र	—	बृहस्पति	सूर्य बुध शुक्र शनि	बुध शनि
—	—	—	—	—	—	—

मैंने ऊपर के चक्र में प्रत्येक जन्म लग्न के अनुसार कारक ग्रह, शुभ ग्रह, सम ग्रह, अशुभ ग्रह तथा मारक ग्रहों का स्पष्टीकरण किया है। इस प्रकार पाठक अपनी प्रत्यन्तर्दशा का शुभाशुभ ज्ञान कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, मिथुन लग्न वाले जातक के लिए किसी भी ग्रह की अन्तर्दशा में शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा सर्वोत्कृष्ट जायेगी, शनि की भी ठीक जायेगी, परन्तु बुध एवं चन्द्र की दशाएँ साधारण ही व्यतीत होंगी। हाँ, चन्द्र मारक ग्रह है, अतः इस दशा में शारीरिक कष्ट भोगना पड़ेगा। मंगल व सूर्य की दशाएँ परेशानियाँ एवं असफलताओं से पूर्ण होंगी तथा गुरु की प्रत्यन्तर्दशा में मरणतुल्य कष्ट भोगना पड़ेगा।

इसी प्रकार अन्य लग्न कुण्डलियों की प्रत्यन्तर्दशाओं का भी शुभाशुभ ज्ञात किया जा सकता है।

□

हम कृतज्ञ हैं कि आपने यह पुस्तक पढ़ी। आशा है आपको पसन्द आई होगी। निकट भविष्य में ही हम इसी प्रकार की कुछ और पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं। जिनकी सम्पूर्ण जानकारी के लिए हमें अपना नाम व पूरा पता लिख भेजें।

अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखित

ज्योतिष सम्बन्धी अन्य अनुपम पुस्तकें

१.	भारतीय-ज्योतिष	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
२.	कुण्डली-दर्पण	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
३.	ज्योतिष-योग	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
४.	दशाफल-दर्पण	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
५.	फलित-ज्योतिष	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
६.	वर्षफल-दर्पण	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
७.	अंक-ज्योतिष	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
८.	अंक-दीपिका	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
९.	हस्ताक्षर-विज्ञान	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
१०.	हस्तरेखा-विज्ञान	डॉ० सुरेशचन्द्र गौड़
११.	मुखाकृति-विज्ञान	श्री गोचर शर्मा
१२.	ज्योतिष-विज्ञान	डॉ० हरिकृष्ण छंगाणी

मूल्य प्रति पुस्तक केवल तीन रुपए

पाँच पुस्तकें एक साथ मँगाने पर डाक-व्यय माफ

प्रकाशक

अनुपम पॉकेट बुक्स

शक्तिनगर, दिल्ली-७